५

पत्र व्यवहार

जमनालाल बजाज
का अपने परिवारवालों से

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

जमनालाल बजाज सेवा ट्रस्ट माला–८

पत्र-व्यवहार

भाग ५

—जमनालाल बजाज का अपने परिवार के लोगों के साथ—

पृष्ठ-भूमि

कमलनयन बजाज

संपादक

रामकृष्ण बजाज

१९६४

मुख्य विक्रेता

सस्ता साहित्य मंडल,

नई दिल्ली

जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट, वर्धा
की ओर से
मार्तण्ड उपाध्याय
द्वारा प्रकाशित

पहली बार : १९६४
मूल्य
चार रुपये

मुद्रक
श्री जैनेन्द्र प्रेस,
दिल्ली—६

संपादकीय

पूज्य पिताजी (श्री जमनालाल बजाज) की 'पत्र-व्यवहार-माला' में अब तक चार भाग पाठकों के सामने आ चुके हैं—पहला, देश के राजनैतिक नेताओं से, दूसरा, देशी-राज्य के कार्यकर्ताओं से, तीसरा, रचनात्मक कार्यकर्ताओं से और चौथा, पूज्य माताजी (श्रीमती जानकीदेवी बजाज) से।

पिताजी की प्रवृत्तियां विविध और उनके संपर्क वहुत ही व्यापक थे। उनकी इन विविध प्रवृत्तियों और व्यापक संपर्कों का दर्शन 'पत्र-व्यवहार-माला' की इन पुस्तकों से होता है। साथ ही उस युग की स्थिति पर भी इनसे अच्छा प्रकाश पड़ता है।

'पत्र-व्यवहार' के प्रारंभिक तीन भागों में पिताजी का सार्वजनिक जीवन मुख्य रूप से सामने आता है। चौथे भाग में उनके कौटुंबिक जीवन की झलक मिलती है।

अब हम 'पत्र-व्यवहार' की पांचवी कड़ी प्रस्तुत कर रहे हैं। इसके पहले खंड में पिताजी का अपने बच्चों के साथ हुआ पत्र-व्यवहार संकलित है, और दूसरे खंड में परिवार के अन्य सदस्यों के साथ का पत्र-व्यवहार है। एक प्रकार से यह पुस्तक चौथे भाग की ही पूरक है। अंतर केवल इतना है कि चौथे भाग में जहां उनका पति-रूप सामने आता है, वहां इस भाग में उनके अन्य पारिवारिक रूपों का दिग्दर्शन होता है—पुत्र-रूप का, पिता-रूप का, एक बड़े परिवार के अभिभावक के रूप का। पिताजी के कौटुंबिक जीवन को उनके सार्वजनिक जीवन ने अपने में समेट लिया था। इस प्रकार के पत्रों में स्वाभाविक रूप से व्यक्तिगत विषय जाने चाहिए थे, किन्तु उनमें निजी चीजें बहुत ही कम हैं। उस दृष्टि से पत्रों में चुनाव करने की विशेष आवश्यकता नहीं हुई। हां, कुछ पत्रों के वे अंश जरूर काट दिये गए हैं, जो या तो सामयिक थे, अथवा जिनमें पुनरुक्ति थी। अधिकांश पत्रों को ज्यों-का-त्यों ही दिया गया है।

इस संपूर्ण 'पत्र-व्यवहार-माला' के संबंध में समय-समय पर हमें जो सम्मतियां प्राप्त हुई हैं, उनसे निश्चय ही हमारा उत्साह बढ़ा है। वास्तव में 'जमनालाल बजाज सेवा ट्रस्ट' के प्रकाशनों के पीछे यही उद्देश्य है कि जमनालालजी के लेखन, भाषण, पत्र आदि में से लोकोपयोगी सामग्री पाठकों को मिल जाय।

इस माला के आगामी प्रकाशनों में जमनालालजी का व्यापारी व सामाजिक वर्ग के लोगों तथा देशी रियासतों के अधिकारियों के साथ हुआ पत्र-व्यवहार प्रकाशित किया जायगा। रचनात्मक कार्यकर्ताओं तथा राजनैतिक नेताओं के साथ हुए पत्र-व्यवहार के द्वितीय खंड भी प्रकाशित करने की योजना है।

श्री कमलनयन बजाज ने प्रस्तुत पुस्तक की 'पृष्ठभूमि' लिखी है, जिससे इन पत्रों की भूमिका समझने में पाठकों को आसानी होगी। जिन्हें पत्र लिखे गए हैं, उनका संक्षिप्त परिचय भी अंत में, परिशिष्ट-२ में दे दिया गया है।

आशा है, ट्रस्ट के अन्य प्रकाशनों की भांति यह पुस्तक पाठकों को रुचेगी।

—संपादक

पृष्ठ-भूमि

जमनालालजी 'काकाजी' के नाम से पुकारे जाते थे। मारवाड़ी भाषा में पिता को काकाजी कहते हैं। चूंकि हम बच्चे उनको काकाजी कहते थे, इसलिए सभी लोग उनको 'काकाजी' कहने लगे थे। काकाजी का परिवार उत्तरोतर बढ़ता गया और जीवन के आखिरी दिनों तक उसमें वृद्धि ही होती रही।

काकाजी के स्वभाव में एक विशेष गुण यह था कि वे छोटे-बड़े सभी से जात-पांत, पद-प्रतिष्ठा, अधिकार आदि का खयाल किये बिना पूरी तरह घुलमिल जाते थे। किसीको भी अपने प्रति निर्भय बना लेना उनके लिए सहज था। वे उसके जीवन में इतना उतर जाते थे और उसके परिवार से इतना घरेलूपन स्थापित कर लेते थे कि वह हमेशा के लिए उनका हो जाता था। उसके जीवन में, परिवार में, कार्य में, यदि कोई कठिनाई आती थी और वह कठिनाई अथवा समस्या उसके या उसके आत्मजनों या मित्रों के बूते से बाहर हो जाती थी तो उसका सारा भार वे अपने ऊपर लेते थे, जिससे वह निश्चित होकर अपना काम पूरी दिलचस्पी और एकाग्रता के साथ करने में लग जाता था।

काकाजी के विस्तृत परिवार के लोग अपनी हर तरह की समस्याएं, शिकायतें उनके पास लाते थे। वह उनमें पूरा रस लेते थे और उनकी समस्याओं के निदान का भरसक प्रयत्न करते थे। इस संबंध में उनकी कार्य-प्रणाली बहुत ही विचित्र एवं असामान्य होती थी। लेकिन होती थी वह मानवहृदय को छूने वाली और अति व्यावहारिक।

एक बार मैंने काकाजी से पूछा कि आपकी सलाह के अनुसार लोग काम कर पायें या न कर पायें, लेकिन वे उस सलाह के विषय में बुरा

नहीं मानते। इसका कारण क्या है? उन्होंने कहा कि "सलाह देने से पहले मैं अपने-आपको उस आदमी की स्थिति में रख लेता हूं और वैसी हालत में मैं स्वयं क्या कर सकता हूं और मेरे लिए क्या करना अच्छा है, तथा उसके अनुसार चलने में सामनेवाले को क्या-क्या कठिनाइयां हो सकती हैं, और उन कठिनाइयों को किस तरह से दूर किया जा सकता है, आदि बातें सोच कर तब उसे सलाह देता हूं। सलाह अच्छी हो सकती है, लेकिन वह उस पर बोझ रूप नहीं होनी चाहिए। उसकी प्रतिष्ठा की दृष्टि से व आमदनी की दृष्टि से यदि उसके पालन में उसे वह भारी पड़े तो अच्छी सलाह होते हुए भी वह कष्टदायक हो जाती है। इसके अलावा मैं बड़ा हूं और मैंने सलाह दी है, इसलिए उसे मानना ही चाहिए, यह आग्रह मैं नहीं रखता। इसमें मैं पूरी तरह से सफल होता हूं, ऐसा तो नहीं है, फिर भी इंसान की सचाई और उसके इरादे, गलत समझे जाने पर भी, समय पर सामने आ ही जाते हैं। शायद इन्हीं सब कारणों से मैं लोगों का प्रेम और विश्वास पा सका हूं। और यही वजह है कि लोग मेरी सलाह और व्यवहार को उदारता के साथ ग्रहण कर लेते हैं।"

काकाजी का हृदय विशाल था। शायद इसी कारण इतने बड़े परिवार को वे निभा पाये। इस परिवार में बड़े-से-बड़े राजा-महाराजा व नेता से लेकर छोटे-से-छोटे कार्यकर्ता का समावेश था। लेकिन काकाजी ने कभी उनके प्रति भेदभाव का खयाल नहीं रखा। वे अपने बच्चों की तरह दूसरे के बच्चों को भी सुधारने का प्रयत्न करते थे। एक बार की बात है। मेरी उम्र उस समय १०-१२ वर्ष की रही होगी। घरवालों या स्कूल के अध्यापकों द्वारा काकाजी से शिकायत की गई कि मेरी दोस्ती एक बदमाश लड़के के साथ है, जिसे गाली देने, चोरी करने और झूठ बोलने की आदत है। काकाजी ने मुझे बुलाया और पूछा कि क्या तुम्हारी उस लड़के के साथ दोस्ती है? मैंने कहा, "मुझे उसकी बहादुरी अच्छी लगती है और खेलकूद में भी वह होशियार है, इस कारण वह

मुझे भाता है। उसमें जो बुराइयां हैं, उनको दूर कराने की तरफ आप लोग ध्यान दें तो उसका सुधरना मुश्किल नहीं होगा।"

काकाजी शायद मेरी मजबूती देखने के लिए बोले, "वह तो ठीक है, लेकिन तुम्हें बुरी संगत में रहने की क्या जरूरत है? आखिर उसकी संगत का असर तो तुम पर पड़ेगा ही।"

मैंने कहा, "आखिर बुरे लड़कों को अच्छी संगत कैसे मिलेगी? वे कहां जायं? उन्हें सुधरने का मौका कैसे मिलेगा?"

यद्यपि मैं छोटा था और अध्यापक लोग उस लड़के से निराश हो चुके थे, फिर भी काकाजी ने कहा कि अगर तुम्हें अपने बारे में विश्वास है और उस लड़के के लिए इतना खयाल है तो ठीक है। पर साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि वे स्वयं उसकी बुरी आदतों को छुड़ाने में मेरी मदद भी करेंगे। काकाजी ने उस लड़के को बुलवाया। उससे पूछे जाने पर उसने गाली देने और झूठ बोलनें के विषय में अपनी कमजोरी कबूल की, लेकिन कहा कि चोरी वह नहीं करता है। उसके कहने में कुछ सचाई थी, क्योंकि जिन चोरियों में उसका नाम लिया जाता था, उसमें से अधिकतर या तो उसने की नहीं थी, या की भी थीं तो ऐसे लड़कों की, जिन्होंने दूसरों की चीजें चुराईं थीं और उसने उन्हीं चीजों को उनसे चुरा कर या छीन कर जिनकी थीं, उन्हें दे दी थीं। उसे वह चोरी नहीं मानता था। झूठ बोलने के बारे में उसने बताया कि घरवाले उसे खेलने के लिए जाने नहीं देते, दोस्तों के साथ रहने नहीं देते और स्कूल का काम पूरा होता नहीं इसलिए लाचारीवश उसे झूठ बोलना पड़ता है। काकाजी ने उसकी सारी बातों को पूरी तरह समझा। उसके घरवालों व अध्यापकों को बुला कर उनसे बातें की और उस लड़के को भी समझाया। और उसे कहा कि "अब तुम्हें झूठ बोलने की आदत छोड़ देनी चाहिए। छह महीने के अन्दर तुम्हारी आदत नहीं सुधरी तो तुम्हारे सारे दोस्तों को बुला कर कहूंगा कि इसके साथ दोस्ती छोड़ दें।" लड़के ने अपनी बुरी

आदतों को सुधारने का आश्वासन दिया। इस बात से उस लड़के के जीवन में फर्क पड़ा।

अपने बच्चों के बारे में वह कितनी गहराई से सोचते थे, इसका एक दृष्टान्त याद आता है। सन् १९३५ की बात है। सत्याग्रह-आन्दोलन खत्म-सा हो गया था। मेरी पढ़ाई के संबंध में आगे विचार करना था। मेरा अंग्रेजी का ज्ञान नहीं के बराबर होने से मेरी अंग्रेज़ी सीखने की इच्छा थी। हमारे पूरे परिवार पर बापूजी और उनके विचारों का काफी प्रभाव पड़ चुका था। यद्यपि मैं बचपन से ही स्वतंत्र विचार का रहा, फिर भी बापूजी की बातें अच्छी लगती थीं। बापू, विनोबा और काकाजी से मैं काफी बहस-मुबाहिसा करता और झगड़ता रहता था, पर इन तीनों का ही मुझ पर बड़ा असर था। विधिवत् शिक्षा की दृष्टि से मेरी पढ़ाई कुछ नहीं हुई थी। स्कूल में पढ़ने के लिए मैं बहुत कम गया था। जब जाता भी रहा तो वहां मेरा मन नहीं लगा। मेरा असली शिक्षण व्यक्तियों के संपर्क और उनके जीवन को देखकर ही हुआ। न तो मैं अधिक पढ़ा हुआ था, न पढ़ने का तरीका ही मुझे आता था। काकाजी ने कई होनहार विद्यार्थियों को अपनी तरफ से सहायता देकर और दूसरों से भी दिलवा कर विदेश भिजवाया था। मैंने काकाजी को बताया कि मैं स्वयं अपने शिक्षण के बारे में किस तरह से सोच रहा हूं; और मैंने विदेश जाने की अपनी इच्छा उन्हें बताई। मैं जानता था कि भारतवर्ष में ऐसा कोई स्थान मेरे लिए नहीं हो सकता था, जहां पर बापूजी और काकाजी के प्रभाव से अलग रह कर, मैं जिस तरह से चाहता था उस तरह का स्वतंत्र अध्ययन कर सकता। जब काकाजी को मैंने अपनी यह इच्छा बताई तो उनका पहला और सीधा सवाल यह था कि "तुम्हें विदेश क्यों भेजा जाय? तुम पढ़ाई में कोई होशियार तो हो नहीं। देश का इतना पैसा खर्च करके कौन-सा लाभ तुम लेकर वहां से आओगे, जिससे समाज या देश का हित हो? अपने पास पैसा है, इसलिए ही तुम विदेश जाओ,

यह तो वाजिब नहीं हो सकता। यदि तुम से ऐसी कोई आशा होती कि जो कुछ तुम पर खर्च किया जाय उससे समाज को विशेष लाभ मिलने की संभावना हो तो इतना खर्च करने में मुझे खुशी हो सकती थी। वाकी तो यह धन की लालसा और एक प्रकार का प्रमाद मात्र होगा।"

मैंन उनसे कहा कि आपका कहना बिलकुल ठीक है। मुझे केवल इसलिए नहीं भेजा जाय कि आपका बेटा हूं। लेकिन मेरे सामने सवाल यह है कि मेरा जीवन किसी भी रूप में पूरी तरह से ढले, उसके पहले मैं बापूजी के विचार और आचार के प्रभाव से दूर रह कर उन्हें अच्छी तरह से समझ लेना चाहता हूं। आज मुझे वे अच्छे जरूर लगते हैं, और ऐसा मेरा विश्वास है कि आगे भी अच्छे लगेंगे, फिर भी यह इच्छा है कि दूर रहकर अन्य मौलिक विचारों के साथ स्वतंत्र वातावरण में उनका तुलनात्मक अध्ययन करूं। अगर भारत में ही रहकर आप मुझे बापू के प्रभाव से दूर रख सकते हों और साथ ही अंग्रेजी के अध्ययन की सुविधा हो जाती हो तो मुझे वहां रखें। मेरा आग्रह नहीं है कि मैं विदेश ही जाऊं।

मेरी इस बात का काकाजी पर असर पड़ा। मेरी ये सारी बातें बापूजी के पास गईं। वहां भी मैंने कहा कि "आप जो-कुछ निर्णय करें वह मुझे सहर्ष स्वीकार होगा। उसके प्रति मेरे मन में किसी प्रकार की उदासीनता का तो सवाल ही नहीं है। उसके फलस्वरूप अपने ऊपर किसी बुरा परिणाम का भी मैं कारण नहीं देखता। परंतु यह मैं नहीं कह सकता कि विदेश जाने के बाद वहां के वातावरण का मुझ पर क्या परिणाम होगा।" सब-कुछ सुनने के बाद बापू ने भी निर्णय दिया कि इसे विदेश भेजना उचित होगा।

काकाजी बच्चों में बच्चों के समान हो जाते थे। उनसे किसी को कभी संकोच या भय शायद ही हुआ होगा। प्रेम और आदर ही उनके लिए बना रहता था। वे बच्चों में बैठते थे, उनके साथ कई तरह के खेल

खेलते थे। शतरंज, ताश के खेल भी उन्हें सिखाते, उनकी बुद्धि का विकास हो, उनकी समझ बढ़े, आदमी को वे पहचान सकें, उसके गुण-दोष देख सकें इस तरह के खेल वे खेलते और नये खेलों का आविष्कार भी करते। बच्चों पर अपने व्यक्तित्व अथवा विचारों को लादने की उनमें वृत्ति नहीं रहती थी। बल्कि बच्चों की ओर से कोई सूझ-बूझ की बात आती थी तो उसका स्वागत करते थे, उस पर खुश होते थे।

एक बार पूना में हम सब लोग घूमने-फिरने सिंहगढ़ गये थे। थोड़ा घूमने-घामने के बाद एक पेड़ के नीचे काकाजी हम लोगों के साथ बैठ गए। बैठे-बैठे उन्होंने एक नया खेल शुरू किया और इसकी योजना समझाई। उपस्थित लोग अपनी-अपनी पारी आने पर वहां बैठे किसी भी व्यक्ति का नाम लेकर उससे अपनी तुलना करे और उससे वह किन बातों में श्रेष्ठ है, वह बताये। जो सबसे अच्छी तरह बतायेगा, उसका पहला नम्बर होगा। जो कुछ वह कहे, उसमें सत्यांश होना चाहिए। किसी को भी यदि उसकी बात गलत लगे तो वह उस पर आपत्ति उठा सकता है। आपत्ति उठाने पर अगर तुलना करनेवाला व्यक्ति उस बात को मान जाय, अथवा उसका जवाब देने पर जिसने आपत्ति उठाई हो उसे और दूसरों का समाधान हो जाय, अथवा जिसके साथ तुलना की गई हो वह मान जाय तो कहनेवाले की बात रही, अन्यथा उसकी बात सही है या नहीं, इस पर राय लेकर बहुमत से निर्णय किया जाय।

खेल की शुरुआत हुई। जब मेरी बारी आई तो अचानक मेरे मुंह से निकल गया कि मेरी तुलना श्री जमनालाल बजाज से होगी। कुछ मोटी-मोटी बातें जो मेरे पक्ष में थीं, मैंने कहीं ; जैसे उन्होंने सिर्फ देश का ही भ्रमण किया है, मैंने विदेश का भी भ्रमण किया है, दौड़ में मैं उनसे तेज हूं, इनके पिताजी से मेरे पिताजी अच्छे और अधिक प्रख्यात हैं आदि। इन बातों का किसी ने प्रतिवाद नहीं किया। इसके बाद मैंने कहा कि इनकी संतान से मेरी संतान अच्छी है। उस समय मेरा

लड़का राहुल मुश्किल से साल एक-भर का होगा। इसपर किसी ने आपत्ति उठाई और कहा कि तुम यह कैसे कह सकते हो कि तुम्हारा लड़का इनके लड़के से अच्छा है। मैंने कहा कि काकाजी अगर यह कहदें कि इनका ही लड़का अच्छा है, मेरा नहीं, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी। काकाजी कुछ नहीं बोले। मेरी शरारत को वह समझ रहे थे। बस, हंस भर दिये। आगे मैंने कहा कि यह मान भी लिया जाय कि उनका लड़का अच्छा है और मेरा नहीं, फिर भी जिद का सवाल हो जाय तो उनके लड़के को विगाड़ना तो मेरे हाथ में है, चाहे जितना उसे मैं विगाड़ सकता हूं, लेकिन वह मेरे लड़के को नहीं विगाड़ सकते। मेरी वातों का किसीने प्रतिवाद नहीं किया और इस तरह मेरी वात रह गई। काकाजी को यह सव अच्छा लगा। उन्होंने दूसरे लोगों से कहा कि आज तो कमल ने बुद्धिमत्ता और विवेक का परिचय दिया। उसका कहने का ढंग मजेदार था और सूझ-बूझ भी अच्छी थी।

वह सबसे खुल कर वात करते थे, यहां तक कि वच्चों से भी अपनी वात साफ-साफ कह डालते। सन् १९३२ की वात है। मैं १६ साल का हुआ था। काकाजी से दूर अल्मोड़ा में पढ़ता था। सत्याग्रह शुरू हो जाने पर वहीं पकड़ा गया। जेल से छूटने पर पहली वार जव मैं काकाजी से मिलने धूलिया जेल गया तो उन्होंने कहा कि अव तुम्हारी उम्र १७ साल से ऊपर हो गई है और हमारे शास्त्रों में लिखा है कि "प्राप्ते तु षोडशे वर्षे पुत्रं मित्रवदाचरेत्।" अव तुम जो कुछ अपने मन से करना चाहो, उसके लिए स्वतंत्र हो। मेरी सलाह मांगोगे तो दे दूंगा। मुझे कुछ कहने की जंचेगी तो कहूंगा, लेकिन तुम्हें किसी प्रकार का संकोच रखने की जरूरत नहीं है। जैसा जीवन तुम्हें वनाना हो, जो कुछ करना हो, वह निर्भयता के साथ कर सकते हो।

इसके वाद काकाजी जव छूटकर आये तो घरेलू, व्यापारिक सामाजिक, या राष्ट्रीय आंदोलन आदि की जो भी समस्याएं सामने

आतीं, उन पर वे मेरे साथ विचार-विनिमय करते। इसके साथ ही अपने व्यक्तिगत जीवन के सम्वन्ध में भी मुझसे चर्चा करते, अपने दोषों को बताते और उनको किस तरह दूर करना, इसके लिए राय भी पूछते। एकाधवार मैंने उनसे कहा भी कि इस तरह की चर्चा आप मुझसे न किया करें। आपको इन बातों में कुछ समझना-वूझना हो तो विनोवा और बापू से बात करें। उन्होंने कहा कि वह तो वे करते ही हैं। पर उतना ही काफी नहीं है। जहां भी आत्मीयता हो, मनुष्य अपनी कमजोरी को कह सकता है; अपने से छोटों को भी विश्वास में लेकर चर्चा करने से एक नये दृष्टिकोण का खयाल भी आ सकता है। इससे वड़ों की नम्रता और छोटों का आत्म-विश्वास वढ़ता है। परस्पर स्नेह बढ़ता है। इससे पुराने और नये विचारों का समन्वय भी अच्छा होता है।

इस तरह अपने और दूसरों के बच्चों से भी काकाजी दिल खोल कर वात करते थे। उनके हृदय की बात जानने की कोशिश करते थे। उन्होंने कभी कोई वात हम पर लादी नहीं। कोई बात हमें कवूल नहीं होती तो उसका वे आग्रह नहीं करते थे। हां, इस बात को अवश्य दुह-राते रहते कि विनोवा या बापू को संतोष करा दो तो फिर उन्हें सावधान या संतोष कराने की जरूरत नहीं। हम वच्चों की कमजोरियां दूर करने के लिए भी समझाने के अलावा उसी तरह की अपनी कमजोरी को दूर करने का वह प्रयत्न करते। वह यह कहते भी थे कि 'वह कमजोरी तो मुझसे ही तुम लोगों में आई है। तुम लोगों को तो अब नया जीवन वनाना है तो इससे वचो' और फिर उसके लिए रास्ता भी वताते। मेरे आलस्य को दूर करने के लिए उन्होंने बहुत प्रयत्न किये। जव उन्होंने देखा कि मुझ पर विशेष परिणाम नहीं पड़ रहा है और मैं उसके प्रति अलमस्त और बेफिक्र हूं तो मेरे ऊपर काम का वोझ भी डाला। काम मैं भूत की तरह करता और उसमें मुझे समय या आराम का कभी खयाल भी नहीं रहा। पर जहां अवकाश मिला कि वह स्वभाव उसी तरह

हो ज़ाता। उसका क्या इलाज हो, यह काकाजी के लिए समस्या रहती। अंत में उन्होंने स्वयं अपने आलस्य को तोड़ने के लिए नियम वनाये। खाने पर संयम रहे, इसका भी खयाल करके नियमों में शामिल किया। उसके परिणामस्वरूप वे तो अपने आलस्य पर काबू कर सके और उनके जीवन के उत्तरार्ध में वे कभी आलसी रहे ऐसा कोई कह नहीं सकता था। पर मुझ पर उसका खास असर नहीं पड़ा। मैं अपने अंदर विशेष परिवर्तन नहीं कर पाया।

काकाजी ने अपने माने हुए परिवार के सदस्यों की एक सूची वनाई हुई थी, जिसमें अधिकतर रिश्ते, पिता, पुत्र, वहन, भाई, मित्र आदि के रूप में शामिल थे। उसमें उन्होंने पुत्र के स्थान पर मेरा नाम नहीं रखा था क्योंकि मुझसे अधिक समाधान उस रिश्ते में उनको भाई राधाकृष्ण और रामकृष्ण से मिला था। मैं उनकी आज्ञा जरूर मानता था, और उन्हें यह भरोसा भी था कि मुझसे कुछ कहा गया तो मैं उसे पूरी तरह से करूंगा, लेकिन मेरी वृत्ति और स्वभाव दोनों ही स्वतंत्र थे, इसलिए मेरा व्यक्तित्व अलग पड़ जाता था। इसके अलावा उन्हें मुझसे पूरी तरह संतोष भी नहीं था। इसी तरह के रिश्तों में हमारे यहाँ की नौकरानी का भी उन्होंने माता के स्थान के लिए विचार किया था। उसके द्वारा वे कुछ ही वातों में मातृत्व की कमी पूरी कर सकते थे, लेकिन परा संतोष एवं समाधान तो उन्हें माता आनंदमयी की प्राप्ति से ही हुआ।

ये जो निजी रिश्ते उन्होंने मान रखे थे, उनसे वे अपने व्यक्तिगत जीवन के वारे में पूरी चर्चा करते, खासकर अपने जन्म-दिन के अवसर पर वे अपने गुण-दोषों का हिसाब लगाते। उसका आंकड़ा तैयार करते। इस वात को जांचते कि उनके दोषों में कितनी मात्रा कम हुई है। इस वारे में चर्चा करके अथवा पत्रों द्वारा यह पूछते और जानना चाहते कि उनके दोषों में क्या फर्क पड़ा है। अपने बुजुर्गों से भी इसकी चर्चा

करते । गुण-दोषों के हिसाब का एक ऐसा ही चिट्ठा मृत्यु के कुछ ही महीनों पूर्व उन्होंने बनाया था और उसमें उन्हें यह लगा था कि जैसा वे चाहते थे वैसा मन पर उनका काबू नहीं हो पाया है। इसी वजह से वे सार्वजनिक कामों से निवृत्त होकर आत्मोन्नति की तरफ ध्यान देने और कुछ उस तरह का कार्य करने को कि जो देश के विकास में भी सहायक हो और आत्मोन्नति के रास्ते में बाधक न हो, उत्सुक थे। पर किसी-न-किसी कारणवश उनको कांग्रेस की कार्यकारिणी तथा सार्वजनिक कामों में से अलग नहीं होने दिया गया। 'पर गांधी सेवा संघ' के अध्यक्ष के पद को तो इसी वजह से उन्होंने छोड़ ही दिया था। अंतिम दिनों में दूसरे सारे सार्वजनिक कार्यों से भी निवृत होकर बापूजी की सलाह से वे गो-सेवा के ही कार्य में पूरी तरह से रत हो गए थे।

काकाजी के जीवन में दिखावट या बनावट छू-तक नहीं गई थी। उनके पत्र भी सीधीसादी बोलचाल की भाषा में लिखे हुए हैं। आज भी उनके पत्र पढ़ें तो ऐसा लगता है, मानो काकाजी ही बोल रहे हों। उनकी भाषा में विद्वत्ता नहीं है, लेकिन जीवन की अनुभूति और व्यावहारिक समझदारी भरी हुई है। दूसरों के दुःख-दर्द को देखकर वह द्रवित होते थे और किसी को भी सुखी और संतुष्ट पाते तो उनका चित प्रसन्न होता। यही वजह थी कि उनको 'अजातशत्रु' कहा जाता था।

यह पत्र-व्यवहार दो खण्डों में विभाजित है। पहले खण्ड में तो बच्चों के साथ हुआ पत्र-व्यवहार संकलित है, दूसरे में परिवार के अन्य लोगों के साथ का पत्र-व्यवहार है। दोनों ही खण्डों में उनका व्यक्तित्व स्पष्टता के साथ झलकता है। उनकी सचाई, स्पष्टता, बुद्धिमत्ता, दृढ़ता, हिम्मत, आत्म-विश्वास, उदारता, चतुराई, समझदारी, व्यावहारिक कुशलता, नम्रता आदि गुणों का सहज स्वाभाविक तरीके से दिग्दर्शन होता है। दूसरे खण्ड में जो पहला पत्र है, वह उन्होंने अपने दादा बच्छराजजी को अपनी १७ वर्ष की उम्र में लिखा था। उससे उस छोटी उम्र में भी

उनके पूरे जीवन का निष्कष निकलता है। ईश्वर के प्रति श्रद्धा, जीवन की अच्छाइयों के प्रति आस्था, आत्म-विश्वास, निर्भीकता, धन-संपत्ति के प्रति उदासीनता, गुरुजनों के प्रति आदर, अपने विचारों में स्पष्टता, दृढ़ता और सरलता, उनके रखने में निरहंकारिता और नम्रता, चित्त की उदार वृत्ति आदि के दर्शन उसमें होते हैं। जिस दादा ने अकारण ही इतना गुस्सा किया था उनके प्रति भी आदरोचित सद्भावना, उनकी कमियों के प्रति भी जागृत रहते हुए उन्हें दूर करने के लिए प्रार्थना-मय मंगल कामना आदि उनके विशिष्ट गुण थे, जिनकी वजह से उनको व्यक्तित्व इतना ऊंचा उठा। विनोवा के शब्दों में—अन्तिम दिनों में जिनको इतनी उत्तम मानसिक अवस्था में मृत्यु प्राप्त हुई, जिसको उन्होंने धन्य समझा। उनके सारे जीवन को वीज रूप में ही सही, किन्तु पूरी स्पष्टता के साथ, उस एक ही पत्र द्वारा समझने के लिए पर्याप्त सामग्री मिल जाती है।

इस पुस्तक में जो पत्र दिये गए हैं, वे परिवारवालों के नाम हैं। इसलिए पहली वात तो यह है कि इनमें एक प्रकार का सहज-स्वाभाविक घरेलूपन है। काकाजी जहां कहीं जाते थे, घरवालों को अपने समाचार देते रहते थे और उनके समाचार लेते रहते थे। लेकिन इसके साथ ही इन पत्रों में जीवन-शोधक के लिए भी पर्याप्त सामग्री है। काकाजी अपनी आत्मोन्नति के लिए वरावर प्रयत्नशील थे। उनकी इच्छा और चेष्टा थी कि उनके परिवार के सदस्य भी अपने जीवन को सुधारें और आत्म-विकास करें। इस पुस्तक के पत्रों में इस दिशा की वहुत सी सामग्री मिलती है। अधिकांश पत्रों में उन्होंने अपने कुटुम्वी-जनों को कुछ-न-कुछ प्रेरणा दी है।

इस दृष्टि से इन पत्रों का सार्वजनिक महत्व भी है। हर परिवार की इच्छा रहती है कि उसके वच्चों का जीवन उन्नत हो। इसके लिए उनको इन पत्रों में वहुत-सी उपयोगी तथा प्रेरणादायक बातें मिलेंगी।

काकाजी ने इन पत्रों में देश के अनेक महापुरुषों तथा घटनाओं का उल्लेख किया है। इन पत्रों को पढ़कर आजादी की लड़ाई के इतिहास के बहुत से अध्याय आंखों के सामने खुल जाते हैं।

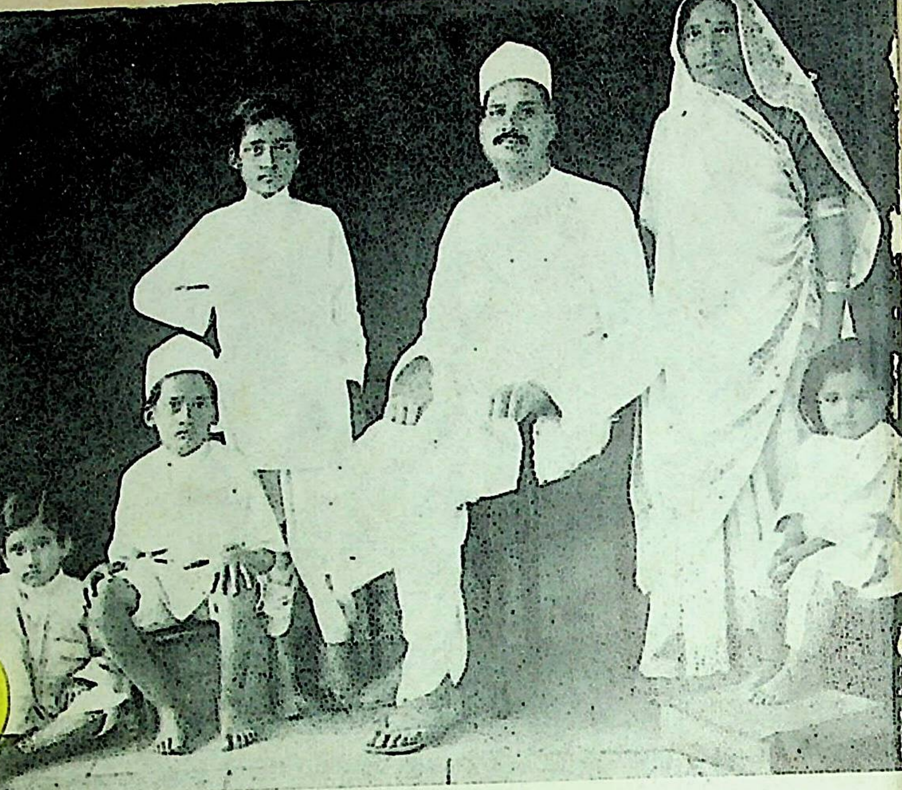
इस सबके अलावा बहुत से पत्रों में दैनिक जीवन की समस्याएं उठाई गई हैं और उनका समाधान बताया गया है।

कुल मिलाकर इन पत्रों में काकाजी के कई रूपों के दर्शन होते हैं। वात्सल्य-पूर्ण पिता, जीवन-शोधक, सार्वजनिक नेता, -बापू के मार्ग के पथिक आदि-आदि।

मुझे विश्वास है कि हर पाठक इस पुस्तक के अध्ययन से कुछ-न-कुछ जरूर पायगा और उसे अपनी कठिनाइयों को हल करने का रास्ता सूझेगा।

—कमलनयन बजाज

विषय-सूची



श्री जमनालाल बजाज पत्नी श्रीमती जानकीदेवी व बच्चों के साथ सन् १९२२ के लगभग
बाएं से दाएं—मदालसा, कमलनयन, कमलाबाई व उमा

पत्र-व्यवहार

भाग पांच : खंड पहला

●

पुत्र, पुत्र-वधुओं, पुत्रियों
तथा दामादों के साथ

●



श्री ज

कमलाबाई नेवटिया के नाम—

: १ :

(१९३०)

चि० कमला,

तुम्हारी तबीयत ठीक रहती होगी। जितनी बातें व जितना त्याग दूसरों से कराने व परदा आदि छोड़ने की जो बातें दूसरों से तुमने कहीं, वे तुम्हें अपने जीवन में व्यवहार में लानी होंगी। उसीमें तुम्हारी शोभा व सच्चाई है, और उसीमें तुम्हें सच्चा सुख व शांन्ति मिलेगी। अब जो आगे प्रोग्राम हो, वह लिखती रहना। तुम्हारी माता का स्वास्थ्य भी संभालना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: २ :

नासिक रोड जेल
(नवंबर १९३०)

चि० कमला,

तुम्हारा ३-११ का पत्र मिला। समाचार पढ़कर संतोष हुआ। तुम व चि० मदालसा मिलकर सप्ताह में एक बार अपने पूरे हालचाल का पत्र मेरे नाम का लिखकर बंबई भेजा करो, जिससे तुम लोगों के काम का मुझे ठीक परिचय हो सके।

तुम व मदालसा दो बार स्त्रियों की सभा में बोली थीं, सो ठीक। पर बोलने के बदले सभा में एकाध प्रभावशाली गीत गाने का अभ्यास तुम दोनों बहनें रखो तो ज्यादा अच्छा रहे। जैसा मौका देखो वैसा किया करना। परदा-घूंघट तो अब तुम्हें कभी करना ही नहीं होगा न? तुम अपने

मन की पूरी तैयारी कर लेना, फिर घरवालों की सहानुभति मिलना कठिन नहीं रहेगा। 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे' ऐसा हमें शोभा नहीं देता। हमें तो प्रत्येक को तुकाराम महाराज के कहे मुताबिक 'बोले वैसा चले' बनना चाहिए। जितनी बातें हम दूसरों को भलाई की बताते हैं, मौका पड़ने पर अगर हम वैसा न करें, तो उसका कोई महत्त्व ही नहीं रहता।

मुझे पूर्ण आशा है कि इस भ्रमण से तुम तीनों को खूब लाभ मिलेगा और अनुभव भी होगा जो भविष्य के जीवन में खूब काम आयेगा। सभ्यता, नम्रता, सेवा-भाव का बराबर खयाल रखना। संकोच की जरूरत नहीं, परन्तु जिसके घर ठहरना पड़े उसे कष्ट कम हो और उनके साथ विशेष प्रेम-संबंध हो सके, इसका पूरा खयाल रखना। कलकत्ते में कुछ समय तक रहकर काम करने की तुम्हारी माता की जो इच्छा है, सो ठीक है। वहां जाने पर श्री भाई महाबीरप्रसादजी पोद्दार, प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका आदि की सलाह से काम करना। थोड़े दिन ठहरना हो, तो खेतानों के यहां या सीतारामजी सेक्सरिया के यहां या महाबीरप्रसादजी जहां ठीक समझें वहां ठहरना ठीक रहेगा। ज्यादा दिन रहना हो और महाबीरजी को जंच जावे तो अलग--स्वतन्त्र मकान लेकर रसोई आदि की अपनी स्वतन्त्र व्यवस्था करना जरूरी हो तो वैसा कर लेना। मेरी राय में शुरू में १५-२० दिन ठहरना काफी होगा। फिर जरूरत मालूम हो और मित्र लोग बुलावें तो फिर जा सकते हैं। फिर भी इस बारे में मेरी राय का अधिक विचार न करके वहां की हालत व महाबीरजी की राय को ही ज्यादा महत्त्व देना ठीक रहेगा। खर्चे आदि के बारे में संकोच मत रखना। किसीसे रुपये उधार लेने पड़ें तो लेकर, वर्धा या बंबई लिखकर उन्हें शीघ्र भिजवा दिया करना। खर्चे का पूरा हिसाब लिख रखने की आदत बहुत लाभकारक होगी।

तुम्हारे भ्रमण के बारे में ता० १८ को श्री बनारसीप्रसादजी मुझसे मिलने आनेवाले हैं। उनसे बात करने पर जो कहना होगा, सो उन्हें व चि० रामेश्वर को कह दूंगा।

तुम प्रथमा में दूसरी श्रेणी में पास हो गई, यह जानकर प्रसन्नता हुई। तुम अपना स्वास्थ्य खूब अच्छा रख सको तो मेरी इच्छा है कि तुम और

भी ठीक तौर से पढ़ लो । तुम्हारे भविष्य के जीवन के लिए वह उपयोगी होगा ।

तुम्हारे प्रयत्न से जिन-जिन बहनों ने घूंघट कभी भी नहीं निकालने का निश्चय कर लिया हो, उनके नाम-पते अपने पास लिख रखना । जो खादी पहनने का निश्चय करें, उनके भी । खादी की प्रतिज्ञा स्वराज्य की प्राप्ति तक से लेकर वाद में देश के नेता कहें, वैसा खादी या स्वदेशी पहन सकते हैं । जो स्त्रियां खादी नहीं पहन सकती हों, वे विदेशी तो अवश्य वंद करें, इसका खयाल रखना ।

इस भ्रमण में तुमने पटना में रमा के साथ मोटर चलाना सीखना शुरू किया था । वहां हाथ-पांव तुड़वाकर बंबई जाओगी तो तुम्हारी पूज्य सासूजी तुम्हारी व तुम्हारी मां की पूरी खबर लेंगी और फिर कभी विश्वास नहीं करेंगी । मैं तो इसे पसंद करता हूं, पर पहली वार जोखिम में पड़ना ठीक नहीं ।

मेरा मन व स्वास्थ्य खूब ठीक है । आजकल तो करीब ८४० तार सूत कातता हूं । पींजना भी आ गया । पूनियां प्राय: पींजकर बनाता हूं । कई वार मित्र लोग भी बना देते हैं । तकली का अभ्यास बढ़ाना है । मुकुंदजी के ता० १८ को बाहर चले जाने पर रसोई बनाना सीखने का भी मौका मिल जायगा । समय खूब भरा हुआ रहता है । रात-दिन बहुत ही तेजी से बीत जाते हैं ।

मेरी समझ से कमलनयन का राजपूताना या वर्धा में काम करना ही ठीक है । इतने पर भी उसकी इच्छा हो और पूज्य जाजूजी की राय हो तो वहां बुलाना । बाकी तो बड़े शहर में संगत का डर रहता है । वहां न बुलाना ही ठीक है ।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ३ :

(१९३१) ?

चि० कमला,

पत्र तुम्हारा मिला । तुम्हारा स्वास्थ्य अब बहुत ठीक है, पढ़कर संतोष हुआ ।

तुम आश्रमवासी बनने से डरती हो तो कम-से-कम योग्य व उपयोगी जीवन बिताने लायक तो तुमको बनना ही चाहिए। श्रीचंद्रशेखर शास्त्री ने 'स्त्री के पत्र' नाम की अपनी पुस्तक मुझे भिजवाई थी। वह मैंने रेल में पढ़ी। पुस्तक अच्छी है। तुमको भेज रहा हूं, तुम इसे भली प्रकार पढ़ो व तुम्हारी माता को भी अवश्य पढ़ाओ। इस पुस्तक में जिस प्रकार शशिप्रभा व उसकी भाभी भुवनमोहिनी का चित्र खींचा है, वैसी तो तुम चाहो तो तुम व तुम्हारी माता दोनों बन सकती हो। अगर मन में निश्चय करलो तो उससे ही तुम दोनों को भी खूब सुख मिलेगा व हम लोगों को भी पूरा सुख, समाधान व संतोष रहेगा। किताब पूरी तरह से पढ़कर तुम दोनों अपनी राय लिखना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ४ :

वर्धा, २२-२-३२

पू० काकाजी,

चरणों में प्रणाम। आपका ता० १२ का पत्र मिला। आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा। कान में भी दर्द नहीं होगा। आप अपने स्वास्थ्य की पूरी संभाल रखें। कारण, जेल में तो यही काम है।

मां को ता० १७ को सवेरे ६ बजे के अंदाज पकड़कर ले गये। दूसरे दिन मुकदमा हुआ। छह मास की सजा और 'ए' क्लास दिया है। एक हजार रुपया जुर्माना किया है। मां को रखेंगे तो आराम से। आज मोटर-लारी से नागपुर ले गये हैं। कपड़े और सामान जो जरूरी था, सो सब दे दिया था। सुनते हैं कि मां के ऊपर एक नौकरानी रहेगी। कमलनयन से मदनमोहनजी मिल आये। 'सी' क्लास होने से कपड़े वगैरे तो कुछ भी नहीं लेने दिये। पांच पौंड वजन कम हुआ है। दो घंटा झाड़ू का काम लेते हैं। गुलाबचन्दजी कल पिकेटिंग करते समय पकड़े गये। यहां भी काम बहुत जोश से चल रहा है। बाबू (रामकृष्ण) को मास्टर १॥ घंटा घर पर ही पढ़ाने आता है। मदालसा व उमा तो अभीतक कन्याशाला में ही हैं। सब प्रसन्न हैं। मेरी तबीयत भी अच्छी है।

आपकी भी जेल-बदली होगी, ऐसा सुना है। शांतिबाई ८-१० रोज रहीं, आज वापस जा रही हैं। उन्होंने जाने की बहुत जल्दी की। दादीजी, भुवाजी, प्रहलाद, नर्मदा, श्रीराम सब अच्छे हैं। मैं अभी महीना, डेढ़-महीना तो और यहीं हूं। कुछ काम हो तो लिखियेगा। मां के नाम का पत्र यहां भेजेंगे तो वह नागपुर भेज देंगे।

इस पत्र के साथ मां का भेजा एक पत्र भी है।

आपकी पुत्री
कमला

: ५ :

वर्धा, ९-७-३३

चि० कमला,

तुम्हारी हिम्मत व निश्चय पढ़कर संतोष व सुख हुआ।[1] मेरा तो पूरा विश्वास है कि तुम्हारी फालतू चर्बी कम होकर रक्त शुद्ध हो जायगा। तुम अपना जीवन नियमित रूप से बिताने का निश्चय कर लोगी, तो बिलकुल तंदुरुस्त होकर सुखी जीवन बिताते हुए थोड़ा सेवा-कार्य भी तुम कर सकोगी। आलस्य तथा लापरवाही निकल ही जानी चाहिए। परमात्मा ने किया तो तुम जल्दी ही नीरोग हो जाओगी। खूब हिम्मत व उत्साह से रहना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ६ :

(वर्धा, १३-७-३३)

चि० कमला,

तेरा उपवास खूब उत्साह और संतोषकारक चलता देखकर सुख होता है और ईर्ष्या भी होती है कि मैं भी इसी प्रकार उपवास करके अपनी चरबी कम कर लूं तो कितना अच्छा हो। खैर, तू तो नीरोग होकर खूब

---

१. स्वास्थ्य सुधारने के लिए कमलाबाई ने उपवास किये थे।

खेलने-कूदने लग जा। चि० सुशील खूब ऊधम करता होगा। उसे मेरे पास भेज सकती है क्या ?

जमनालाल का आशीर्वाद

: ७ :

खंडवा से अजमेर जाते हुए
चालू रेल में
७-१२-३३

चि० कमला,

हम करांची के लिए ढाई बजे के करीब जवलपुर से निकलकर खंडवा होते हुए आज अजमेर जा रहे हैं। मेरा प्रोग्राम अजमेर ता० ८, सीकर ९-१०, नीम का थाना ११-१२, दिल्ली १३, १४ और १५ का है। वाद में शायद प्रयाग, वनारस, कलकत्ता जाने का वने। ता० १८ को निकलकर तुम वर्धा पहुंच सकती हो। मेरी समझ से, मैं आऊं तवतक, बंगले पर रहोगी तो ज्यादा ठीक रहेगा। वाकी जैसा तुम्हें ठीक लगे, वैसा निश्चय करना। संकोच नहीं रखना। तुम व मदालसा वाई केशर को पत्र भेज देना। उसमें लिख देना कि वह नर्मदा की चिंता विलकुल न करे। नर्मदा तो लिखा ही करती होगी।

चि० उमा तो वापू के साथ खूब अनुभव ले रही है। उसे थोड़ी सर्दी हो गई है, परन्तु जल्दी निकल जायगी। उसे कोई परवाह तो है नहीं। वापूजी को वीच-वीच में वहुत हँसाया करती है।

जमनालाल के आशीर्वाद

: ८ :

जयपुर-स्टेट कैदी,
२९-६-३९

चि० कमला,

तुम्हारा ता० २५-६ का पत्र मेरे व तुम्हारी मां के नाम का मिला। पत्र आया, उसी समय तुम्हारी मां सीकर जाते समय मुझसे मिलने आई थी। उसने दोनों पत्र पढ़ लिये।

तेरा पत्र आजतक नहीं आया था, इससे मैंने भी तुझे पत्र नहीं लिखा। इस बार मैंने प्राय: यही नीति रखी है कि जिसका पत्र आवे उसका जवाब तो आगे-पीछे दे दिया जाय, खुद होकर बने, वहां तक पत्र नहीं लिखता हूं।

तुझे व्यापार में खूब रस आने लगा है, यह जाना। कमल को खूब धनवान बनाना चाहती हो ? वह ज्यादा धनवान बन जायगा, तो फिर तुम लोगों से प्रेम व स्नेह नहीं रख सकेगा। प्राय: धनवानों का, धन के साथ जैसे-जैसे प्रेम बढ़ता जाता है, वैसे-वैसे घर-कुटुंबी तथा दुखी-गरीबों के साथ कम होता जाता है। तुम चाहो तो इसका पता लगा सकती हो।

क्या श्रीगोपाल का यूरोप जाने का निश्चय हो गया ? कब जायगा ? वहां की हालत तो अभी जाने लायक नहीं दिखाई दे रही है।

मेरे घुटने का दर्द मिटा नहीं है। अब बिजली का इलाज चालू हुआ है। संभव है, फायदा हो जाय। चिंता का कारण नहीं। मेरे पास विट्ठल रहता है।

चि० रामेश्वर के टांसिल बढ़े हुए हैं तो निकलवा लेना ठीक रहेगा। उसकी छाती की भी पूरी जांच करवा लेनी चाहिए। वह अपने स्वास्थ्य की फिक्र कम रखता है। नियमित खान-पान व व्यायाम की ओर उसका ध्यान कम रहता है। मैं उसके पास कोई योग्य मददगार भेजना चाहता हूं, जिससे उसे भी थोड़ा समय खेल-कूद, घूमने-फिरने का मिलता रहे। तुन भी ध्यान रखा करो। पर तुम खुद भी तो आलसी बन गई हो।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ९ :

जयपुर स्टेट-कैदी
३-८-३९

चि० कमला,

तुम्हारा २-२७ का तुम्हारी मां के नाम व मेरे नाम के पत्र मिले।

जिस पैर में टांके लगे हैं, उसी दाहिने पैर में दर्द रहता है। पहले ज्यादा हो गया था, अब कम होता जारहा है।

डा० शाह से तुमने बात की, वह मालूम हुई। मुझे इस कार्तिक शुक्ल १२ को पचास वर्ष पूरे होवेंगे।

नारायण तैल की जरूरत नहीं। यहां बहुत नामी वैद्य हैं।

तुम वहां सबों से मिल लीं, यह ठीक किया। श्री पार्वतीबाई से भी मौका लगे तो मिल लेना।

तुम्हारे यहां पहुंचने का दिन व गाड़ी पहले से निश्चित करके मुझे व दामोदर को पोस्ट-कार्ड में, (क्योंकि वह नहीं हो, तो दूसरा कोई भी पढ़ ले) लिख भेजना, जिससे तुम्हारी मां को भी सीकर से लाना होगा तो आ जावेगी।

तुलसीदास (फ़िल्म) तुम अकेले देख आईं, कुछ परिणाम हुआ क्या?

कमल परसों वर्धा गया। गुलाबबाई और उमा दो-तीन रोज में मिलने आनेवाले हैं।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १० :

गोला, २-६-४१

पूज्य काकाजी,

सादर प्रणाम! आपका पत्र भी मिल गया था। बाद में मदालसा का भी मिला। आपने ऐसी कमजोरी में भी वर्धा में ठीक आराम नहीं लिया, इसीसे पूज्य बापूजी ने आपको शिमला जाने की राय दी। दो महीने पहाड़ पर सिर्फ विट्ठल के साथ जरूर रह जाइये। मुझे तो पहले आपके शिमला जाने का मालूम नहीं था, इससे लिख दिया था। मैं तो दिल लगेगा तो महीने-डेढ़ महीने वर्धा रह लूंगी, नहीं तो अगली गर्मियों में देखा जायगा; मगर आप अपना प्रोग्राम दूसरों की वजह से न बदलें। आपको तो काफी आराम की जरूरत है।

नासिक में रहकर आप शायद विचार कर लें कि दो महीने यहां ही रह लिया जाय; पर नासिक में आपको ज़रा भी आराम नहीं मिलेगा। बंबई पास रहने से रोज लोगों के आने-जाने का तांता बना रहेगा। शायद

श्री विड़लाजी नासिक में महीने-वीस दिन रहनेवाले हों और वह कह दें यहीं रह जाइये, तो आपका दिल हो जाय । इन वातों में आपका दिल वहुत नरम है। दो महीनों के लिए तो आप सवका मोह छोड़ दें । हम लोग तो सव वर्धा मजे से रह लेंगे। राजकुमारीजी के पास रहने से आपको अवश्य आराम मिलेगा । वहां जाकर भी अधिक मित्र न वनावें । इन वातों में आपका मन वहुत कच्चा है, सो अव पक्का वनाइये । आराम करने तो अकेले ही जाना चाहिए । ज्यादा लोगों को ले जाने से तो उल्टा उनके इंतजाम का काम वढ़ जाता है। आपका और राजकुमारी वहन का खाना जम भी जायगा । उवले हुए साग वह भी खाती होंगी । इसी-लिए इस समय तो आप अकेले ही जाइये।

वम्वई आप राहुल से मिलने गये। वह अव काफी वदमाश हो गया होगा। मगर छोटे वच्चों का वदमाश होना ही अच्छा लगता है। कमल भी काफी शैतान था। वाई ता० १५ तक नागपुर पहुंचेगी, तभी मैं भी वर्धा चली जाऊंगी । आप अपने समय पर चले जाइये ।

कमला के प्रणाम

कमलनयन बजाज के नाम—

: ११ :

वम्बई, २४-४-२६

चि० कमलनयन,

तुम्हारा पत्र मिला । पत्र के अक्षर अगर तुम्हारे हों तो बहुत अच्छे समझना चाहिए । अगर तुम्हारे न हों, तो इस तरह से लिखना उचित नहीं है । अपने ही हाथ से चिट्ठी लिखनी चाहिए ।

एक घड़ी तुमको दी, सो तुमने तोड़ दी, इससे तुम अब घड़ी रखने के लायक नहीं दीखते । फिर भी यहां से कोई जानेवाला होगा, तो उसके साथ तुम्हारे लिए घड़ी भेज देंगे ।

तुमने क्या उन्नति की है, वह लिख भेजना । तुम्हारा मन किस बात में अधिक लगता है, लिखना । तुम्हारी माताजी व कमला वगैरा सब सीकर हैं । थोड़े दिन में सब आश्रम जायंगे ।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १२ :

वंबई, २५-१०-२६

चि० कमल,

आश्रम में तुमने अपनी माताजी को और बाई कमला को जो पत्र भेजे थे, वे उन्होंने मुझे यहां भेज दिये । तुम्हारे विचारों में उन्नति देखकर सुख हुआ, और आशा हुई कि तुम योग्य और होनहार बनोगे ।

पूज्य बापूजी (महात्माजी) यहां दक्षिण अफ्रीका के डेपुटेशन से मिलकर गये । रविवार को आये थे । उन्हें पहुंचाने हम लोग स्टेशन गये थे । लौटते समय हमारी मोटर दूसरी मोटर से जोरों से टकरा जाने का

डर हो गया था। परन्तु हमारे ड्राइवर ने मोटर को एकदम मोड़ दिया जिससे हमारी मोटर जोर से गिरकर उलट गई। हमारी मोटर में सात आदमी थे। श्री केशवदेवजी (कमला के काका-श्वसुर), श्रीगोपाल, चि० गंगाविसन, लालजी मेहरोत्रा, गिरधारी कृपलानी, ड्राइवर और मैं। परमात्मा की दया से और पूज्य वापूजी के आशीर्वाद से प्रायः सव बच गये। श्री केशवदेवजी को और मुझे थोड़ी चोट आई। मेरी छाती में अभी थोड़ा दर्द है। ४-५ रोज में ठीक-हो जाने की आशा है। यहां से सम्भव हुआ तो तारीख २८ को आश्रम जाने का विचार है। तुम चिन्ता न करना।

पू० विनोवा और श्री कृष्णरावजी (नाना कुलकर्णी) का पूरा विश्वास प्राप्त करने में ही तुम्हारी वहादुरी और कल्याण है।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १३ :

बंवई, २३-२-२७

चि० कमल,

तुम्हारा २१-२ का पत्र मिला। तुम्हारी माताजी के बवासीर का आपरेशन तारीख १७-२ को डा० दलाल की राय से करा लिया गया था। अब तवियत ठीक है। थोड़ा दर्द शेष है। ८-१० रोज में ठीक हो जायगा। तुम फिकर न करना। तुम्हारी आंख ठीक है, लिखा सो पढ़कर संतोष हुआ।

आश्रम के वातावरण के वारे में लिखा, सो इस तरह घवराना नहीं चाहिए। तुम तो वहादुर हो। श्री घोत्रे से मिलकर अपने मन की शंका का समाधान कर लेना। संभव हुआ तो वीच में एक वार मैं वर्धा आ जाऊंगा। छुट्टियों तक तो तुम मन लगाकर पढ़ते रहो। वाद में फिर विचार कर लिया जायगा।

पू० विनोवा, कुलकर्णी, घोत्रे जव वहां हैं, तो तुम्हें विशेष चिंता करने की आवश्यकता नहीं।

प्रामाणिकता से काम करते हुए या रहते हुए भी सच्चे-झूठे दोषारोपण कई बार सहन करने पड़ते हैं। आखिर में सचाई कायम रहती है।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १४ :

पूना, १२-७-२७

चि० कमलनयन,

तुम्हारा एक भी पत्र अवतक नहीं मिला। आगे से इजाजत लेकर महीने में एक पत्र जरूर लिखा करना।

श्री धोत्रेजी के पत्र से मालूम होता है कि आजकल तुमको आलस्य आ जाता है। यदि ऐसा हो तो कोशिश करके तुम्हें आलस्य निकाल डालना चाहिए। काम में और पढ़ाई में ध्यान रखना चाहिए। उसीमें तुम्हारा कल्याण है।

मैं आज यहां आया हूं। दो-तीन दिन में वम्बई पहुंच जाऊंगा। आशा है, तुम अपने नियमित पठन-पाठन व उत्साही सेवा-भाव से पू० विनोवा तथा अन्य गुरुजनों का प्रेम संपादन करने में सफलता प्राप्त करोगे। यह बात तुम्हारे हाथ में है। तुम चाहो तो कर सकते हो। विश्वास और श्रद्धा रखनी चाहिए।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १५ :

२८-७-२७

पूज्य पिताजी से कमलनयन का पांवाढोक वंचना। आपका पत्र मिला, पढ़कर आनंद हुआ। मेरी तवीयत ठीक है। मेरा चरखा अभीतक नहीं आया, इसका कारण क्या है, सो लिखना। मैंने भाई (धोत्रे जी) से कहा था कि एक चरखा आपकी पसंद का और उसके साथ ६ तकुवे और १२ चक्री लोहे की भेजना, तो उसका अभीतक पता नहीं। ये वने, उतनी जल्दी भेजने की कोशिश करना। मैंने सूत भेजा था, सो पहुंचा या नहीं,

लिखना। आप आगे कहां जाओगे और वर्धा कव आओगे, सो लिखना। पूज्य दादाजी की तवीयत कैसी है सो लिखना। मेरा कार्यक्रम मां की चिट्ठी में लिखा है। आप वर्धा आओ तो मेरे वास्ते सैंडो के डम्बल्स लेते आना और उसके सब स्प्रिंग भी, नहीं तो भिजवा देना। अभी और तो कुछ नहीं चाहिए। मात्र इतना सामान जरूर भेजना। आपने जो मीरावेन को चिट्ठी दी थी वह और ताऊजी को दी थी, वह उनको मैंने दे दी।

जव आपका पत्र आवेगा, तव उसका उत्तर देऊंगा।

आपका पुत्र
कमलनयन

: १६ :

सत्याग्रह-आश्रम, सावरमती,
३-८-२७

चि० कमल,

तुम्हारा न मिलनेवाला पत्र मिला, क्योंकि तुमने लिफाफे पर 'रामकुंवर वजाज' कर दिया था। आश्रम में इस नाम का कोई आदमी न होने के कारण पत्र वापस कर दिया गया था। २-३ रोज वाद उसपर वजाज नाम और वर्धा की छाप देखकर आश्रम की डाक लानेवाले गजानन राव ने मुझसे पूछकर लिफाफा खोला, तो अंदर तुम्हारे लिखे अपनी माता के व मेरे नाम के पत्र निकले। लिफाफा तुम्हारे देखने को भेजा है। आशा है, अव भविष्य में कम-से-कम ऐसी गलती तो नहीं करोगे।

तुम्हारे अक्षर तो मेरे से भी खराव हैं। पत्र भी शुद्ध लिखना नहीं आता। भविष्य में पत्र लिखा करो तो श्री धोत्रे या अन्य हिंदी-अध्यापकों से वरावर शुद्ध कराकर सुन्दर अक्षरों में लिखने का अभ्यास करोगे, तो उत्तम पत्र लिखने की आदत पड़ जायगी। और वह तुम्हारे लिए जरूरी भी है।

चरखा यहां से मंगाने में क्या फायदा ? यहां जिस प्रकार के चरखे हैं, वैसे तो वहां पर भी हैं। वहां तुमको चाहिए तो तैयार भी करा सकते हो।

यहां से भेजने में फिजूल रेल के ४-५ रुपये लग जायेंगे और रास्ते में खराब होने का डर भी रहेगा, इसलिए यहां से नहीं भेजेंगे।

चरखे के साथ तकुवे ६ व १२ चक्री साथ मंगाईं, सो ये भी वहीं मिल सकेंगी। ऐसी वहां न मिलती हों और तुम दूसरी तरह की मंगाना चाहते हो तो खुलासा लिखना।

तुम्हारा कार्यक्रम तुम्हारी माताजी की चिट्ठी में पढ़ा। अगर तुम नियमित रूप से उठकर उस मुताबिक कार्य पूरा कर सको तो बहुत संतोष होगा।

सैंडो के डंबल्स की जरूरत नहीं मालूम होती। अगर मंगाना हो तो पू० विंनोबा की परवानगी लेकर श्री धोत्रे की मार्फत मंगवा लेना। इस प्रकार सीधे नहीं लिखना चाहिए। तुम्हें पू० विनोबा का व अन्य अध्यापक-वर्ग का पूर्ण प्रेम हासिल करना चाहिए। वह तभी हो सकेगा, जब तुम खूब मन लगाकर उत्साह से पढ़ोगे व सब काम करोगे।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १७ :

लंडी कोटल, १६-७-२९

चि० कमलनयन,

पेशावर से हम लोग आज यहां खैबर पास लंडी कोटल देखते हुए आये हैं। यहां से आगे अफगानिस्तान की सरहद लगती है। यहां से काबुल शहर करीब १६० मील है। अफगानिस्तान की हद यहां से ६ मील हैं। यहां के लोग हमेशा लड़ने और मरने-मारने को तैयार रहते हैं। तुम साथ होते तो तुम्हें आनंद आता। हम लोग आज यहां से लाहौर जायेंगे। वहां से दिल्ली व ग्वालियर होते हुए तारीख २० को वर्धा रात्रि के ७॥ बजे, नागपुर होते हुए पहुंचेंगे। तुम्हारे लिए श्रीनगर के थोड़े फोटो लिये हैं।

जमनालाल का आशीर्वाद

पुनश्च—अभी हमने काबुल (अफगानिस्तान) की हद देख ली। अमीर का सरहद पर का बंगला भी देखा। —ज० ब०

: १८ :

नासिक रोड, सेंट्रल जेल
२२-७-३०

चि० कमल,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारी पढ़ाई की क्या व्यवस्था हुई ? तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक रहता है, यह जानकर खुशी हुई। क्या तुम चि० रिषभदास को कामकाज में मदद किया करते हो ? यदि नहीं करते तो करनी चाहिए।

चि० प्रहलाद जल्दी ही बाहर आयगा। उसे विद्यापीठ से परवानगी मिल जाय तो कुछ रोज के लिए वर्धा जाना ठीक रहेगा। चि० गुलाबचंद को लिख देना कि काम छोड़कर मिलने आना ठीक नहीं रहेगा। मेरा स्वास्थ्य ठीक है। १२ अगस्त को आश्रम के बहुत से लोग छूटेंगे, तब शेष सब खबरें तुम लोगों को मालूम हो जायेंगी।

मैंने मुलाकात की तारीख ९ अगस्त (राखी-पूर्णिमा) रखी है। वर्धा से बाई केशर व गुलाब आयेंगी। बम्बई से तुम्हारी माता बाहर रही तो वह, नहीं तो जो आना चाहेंगे, वे आ सकेंगे। मेरा वजन इस समय १८३ रतल हुआ। इन १५ दिनों में सात रतल बढ़ा। दुकान से पत्र मुझे ता० २९ को रवाना करेंगे। उस समय तक जो समाचार लिखना हो, लिख भेजना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १९ :

वरसोवा (बंबई)
२६-४-३१

चि० प्रहलाद व कमलनयन,

हम लोग यहां वरसोवा, जो विलेपार्ले-अंधेरी के पास समुद्र-तट पर है, ता० २३ से एक बंगला किराये पर लेकर रहने आये हैं। यहां आने के बाद विश्राम ठीक मिल रहा है। घूमने-फिरने का भी आराम है। मैंने तो कुछ समय के लिए यानी सात रोज के लिए मोटर व रेल में न बैठने का

निश्चय किया है। इससे भी शांति मिल रही है। जिन्हें मिलना होता है वे यहीं आ जाते हैं। जानकीदेवी का स्वास्थ्य भी सुधर रहा है। थोड़े रोज में पूरी ताकत आ जाने की आशा है।

तुम दोनों के बारे में पूज्य काका सा० से अबकी बार ठीक बातचीत होगई है। अब तुम दोनों अपनी दिनचर्या मुझे विस्तार से लिख भेजो, ताकि मुझे मालूम रहे कि पढ़ाई कितनी देर व किस प्रकार की होती है। कौन पढ़ाता है? आलस्य कम हो रहा है या नहीं? अगर होता है तो किस प्रमाण में? सभ्यता, व्यवहार दक्षता, सेवावृत्ति, प्रेमभाव, सचाई, नम्रता आदि में उन्नति हो रही है या नहीं? तुम दोनों को जो अनुभव जिस प्रकार होते हों, वे स्पष्ट और खुलासेवार अलग-अलग पत्र में लिखकर एक लिफाफे में बम्बई के पते से या वरसोवा, पोस्ट अंधेरी के पते से लिख भेजना।

जमनालाल का आशीर्वाद

पुनश्च—

विनोद के लिए यह लिखा है। चि० रामेश्वरप्रसाद का छोटा भाई बालकृष्ण है, जिसकी उम्र करीब १०-११ साल की होगी। उससे आज विनोद में बातें हो रही थीं। उससे मैंने उसके घर के व अपने घर के बच्चों की बुद्धिमत्ता के बारे में पूछा, तो उसने नीचे लिखे हुए क्रम के अनुसार नाम लिख दिये—

१ श्रीकृष्ण	१ मदालसा
२ शंकरदेई	२ रामकृष्ण
३ बालकृष्ण	३ कमला
४ रामेश्वरप्रसाद	४ उमा
५ कमलनयन	

उसे पूछा गया कि कमलनयन का नंबर आखिर में क्यों? तो उसने कहा कि उसमें सभ्यता बिल्कुल नहीं है और पढ़ाई भी बहुत कम है। छोटे-छोटे बालक भी किस प्रकार राय बनाते हैं, यह जानने को तुम्हें लिखा है।

प्रहलाद, नर्मदा, श्रीराम आदि से पूरा परिचय न होने से वह उनके बारे में राय नहीं दे सका। इसपर से तुम दोनों अपने तीनों कुटुम्बों के बालकों के बारे में नंबरवार अपनी राय लिख भेजना।—ज० ब०

: २० :

बंबई, ८-८-३१

चि० कमल,

मैंने श्री वकील का पूना का स्कूल देखा। वह तुम्हें रखने में खुश थे। परन्तु खूब विचार करने के बाद मुझे तो यही लगा कि तुम्हारी अंग्रेजी की संतोषजनक पढ़ाई अलमोड़ा में श्री वालजीभाई के साथ रहकर ठीक से हो जायगी और तुम्हें भी उससे शांति और सुख मिलेगा।

पू० वापूजी ने श्री वालजीभाई को लिखवाया है। तुम्हें वहां जाने के लिए गरम कपड़े वगैर यहां अथवा वहां वनाने पड़ें तो वना लेना। वहां जाने पर साइकिल की जरूरत पड़े तो ले लेना। पू० काकासाहव छोटा कैमरा लेने की इजाजत दें तो उनकी ही मार्फत मंगवा लेना। पर अब भी तुम्हारा पूना ही रहकर पढ़ने का विचार हो, तो मुझे स्पष्ट तौर से लिख भेजना। वैसे पूना से अलमोड़ा में खाने-पीने की व्यवस्था ठीक रहेगी।

जमनालाल का आशीर्वाद

: २१ :

वर्धा, २५-९-३१

चि० कमल,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम खूब खेलते-कूदते हो और प्रसन्न हो, यह जानकर खुशी हुई। एक वात का ध्यान रखना चाहिए। वह यह कि हास्य व विनोद ऊंचे दर्जे का होना चाहिए और निर्दोष भी। वह ऐसा नहीं होना चाहिए जो किसीको वुरा लगे। सभ्यतापूर्ण तो होना ही चाहिए।

मैं कलकत्ता जा रहा हूं। वहां का पता, मार्फत श्री सीतारामजी सेक-सरिया, शुद्ध खादी भंडार, १३२।१ हरिसन रोड, है।

अपनी राज़ी-खुशी के समाचार देते रहना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: २२ :

कलकत्ता, १४-१०-३१

चि० कमलनयन,

तुम्हारा तारीख ४-१०-३१ का पत्र मिला ।

श्री वालजीभाई वहां आ गये, सो ठीक । तुम्हारी पढ़ाई चालू हो गई होगी । तुम्हें अब खूब मन लगाकर पढ़ना चाहिए । श्री वालजीभाई कड़े मास्टर हैं । उनकी परीक्षा में तुम्हें पास होने की तैयारी करनी चाहिए ।

तुमने १००रु० मंगवाये, सो भिजवा दिये जायंगे । रुपये तुम अपने नाम से न मंगाकर श्री वालजीभाई के नाम से मंगवाओ तो ज्यादा उचित होगा ।

मैं आज पुरी की तरफ जा रहा हूं । तारीख १८ को यहां वापस आने का विचार है । तुम चाहो तो श्री वालजीभाई तुम्हें जी भरकर पढ़ा सकेंगे । इस प्रकार के शिक्षक मिलना दुर्लभ हैं । आशा है, तुम उनका पूरा फायदा उठाओगे ।

जमनालाल का आशीर्वाद

: २३ :

अल्मोड़ा, १२-११-३१

पू० पिताजी,

आपका पत्र मिला । वर्धा के पते से भेजा हुआ मेरा पत्र आपको मिला होगा ।

रुपयों के वारे में लिखा, सो ठीक है । श्री वालजीभाई मेरा खर्च लेने से साफ इनकार करते हैं । मेरे पूछने पर नाराज भी हुए और कहा "तुम्हें उससे क्या मतलब ! यदि मैं जमनालालजी के यहां जाऊंगा तो क्या वह मुझसे खर्चा लेंगे ?"

खर्च के वारे में आप ही उन्हें लिखें । पर शायद वह इस वात में आपकी भी न मानेंगे । पू० वापूजी के कहने पर ही सव ठीक होगा । यह सब आप देख लें ।

पढ़ाई तो ठीक चल रही है । इनकी पढ़ाने की शैली अच्छी है । यदि

इनके साथ तीन-चार साल बिना किसी रुकावट के रहन को मिले, व साथ ही इन्हें वक्त हो, तो मैं अपनी पढ़ाई की तरफ से निश्चित हो जाऊं। आपको भी विशेष चिंता न करनी पड़े।

पर अलमोड़ा से यदि वालजीभाई चले गये तो फिर मेरी पढ़ाई पहले-जैसी भटक जायगी। इसीकी मुझे फिक्र है।

मेरी तो यह इच्छा है कि आप पूरे तीन साल या इससे ज्यादा पढ़ने का प्रबंध कर दें। फिर कोई भी विक्षेप न करें। पढ़ानेवाला भी निश्चित होना चाहिए। अन्यथा इन चार-छह महीनों की पढ़ाई अगले चार-छह महीनों में भूलने की नौवत आ जायगी। आप कहेंगे कि मैंने तो इसका प्रवन्ध कई वार किया पर मेरे मन में पढ़ने का शौक है ही नहीं।

श्री मथुरादासभाई आपसे मिले होंगे। मैंने पूरी तरह से उनको अपनी स्थिति वता दी है। वह भी महसूस करते हैं कि मेरे तात्कालिक पढ़ाई का प्रवंध ठीक नहीं है। एक जगह पर बैठकर पढ़ाई दो-चार वरस कुछ नियमित रूप से हो तो ज्यादा अच्छा। शायद आपको भी ऐसा ही लगता होगा।

मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। आपका नरम है, यह जानकर दुःख हुआ। शांतावाई मजे में होगी। मैंने उन्हें पत्र दिया था, पर क्या जाने, उत्तर नहीं मिला।

पत्र दें। आपके अगले प्रोग्राम की नकल भेजें। कलकत्ता के 'एडवांस' पत्र में देखा था कि आप वर्धा करीव महीना रहेंगे।

हम सव यहां मजे में हैं। आशा है वहां सव मजे में होंगे व आपके फोड़े मिट गये होंगे। श्री वालजीभाई का पत्र व मेरा एक हफ्ते का समय-पत्रक साथ है।

कमलनयन के प्रणाम

: २४ :

वर्धा, २२-११-३१

चि० कमल,

तुम्हारा पत्र मिल गया था। पढ़ाई के वारे में तुम्हें अभी पूरा संतोष

नहीं हुआ, ऐसा मथुरादासभाई कहते थे। तुम्हें किस प्रकार संतोष हो सकता है, यह तो अब तुम्हें ही निश्चय करना चाहिए। श्री वालजीभाई-जैसे शिक्षक के पास भी तुम्हारा पूरा संतोष नहीं हो सकता तो कैसे संतोप होगा, यह बात मेरी समझ में नहीं आती।

अगर अंग्रेजी पढ़नी है तो मेहनत तुम्हींको करनी होगी। कोई भी शिक्षक तुम्हें अंग्रजी घोलकर पिलाकर विद्वान् तो बना नहीं सकता। मेरी समझ तो यह है कि अब तुम श्री वालजीभाई पर पूरी श्रद्धा रखकर अंग्रेजी का तथा कर्त्तव्य का ज्ञान ठीक तरह से प्राप्त कर लो। ज्यादा आलस्य और मजाक में समय व्यतीत होता हो तो वह थोड़ा कम कर दो। श्री मथुरादासभाई के कहने से तुम्हारा आलस्य कम हुआ मालूम होता है। अब तुम्हारे लिए थोड़ी सभ्यता का भी खयाल करना जरूरी है। नहीं तो भविष्य में तुम्हें दुःख होगा। यह बात मैं तुम्हें बराबर कहता आ रहा हूं।

आज मेरे ४२ वर्ष पूरे होकर ४३ वां वर्ष चालू हुआ है। परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि वह मुझे सद्‌बुद्धि प्रदान करें व कर्तव्य का पालन कराते रहें। तुम्हें आशीर्वाद भेजता हूं।

श्री वालजीभाई, प्रभुदासभाई, श्री वसुमतीबेन तथा अन्य मित्रों को मेरा वन्देमातरम् कहना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: २५ :

वर्धा, ३-१२-३१

चि० कमल,

तुम्हारा अंग्रेजी का पत्र पढ़ा। आशा है, अपनी अंग्रेजी की पढ़ाई से तुम संतुष्ट हो। भविष्य की चिंता-फिकर मत करो। अगर सत्याग्रह छिड़ गया तो जेल में या अन्य प्रकार से जो कुछ शिक्षण मिलेगा, वह मिलेगा ही। नहीं तो तुम्हें जिससे संतोष होगा, वैसी व्यवस्था हो जायगी।

पुस्तकों की सूची बंबई जल्दी भिजवा देना। तुम्हारा यह लिखना ठीक है कि कलकत्ते में उस समय इलाज करा लिया जाता तो ठीक रहता। परन्तु जब अवधि आती है, तभी तो ऐसा होता है। तुम चिंता न करना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: २६ :

वंबई, ९-१२-३१

चि० कमल,

तुम्हारा ३-१२ का पत्र मिला। तुम्हारे पत्र से तुम्हारी दिनचर्या जानी। घूमने में कुछ नियम रखना चाहिए। ऐसा नहीं कि एक दिन तीन मील तो दूसरे दिन तेरह मील। कोई एक मर्यादा रखनी चाहिए। पहाड़ों पर ऊपर-नीचे के रास्ते पर मील के पत्थर तो शायद लगे नहीं होते और तुम तो इधर-उधर घूमते होगे, किसी खास रास्ते पर नहीं। फिर यह मीलों का ठीक-ठीक हिसाव कैसे लगाते हो ? घूमने में कितना समय लगता है, यह भी लिखा करो।

श्री वालजीभाई के साथ का खूब लाभ उठाना। इससे अच्छा सीखने के लिए और कोई मौका मिलना मुश्किल है।

अगर सत्याग्रह नहीं छिड़ा व श्री वालजीभाई इधर चले आयंगे तो भी तुम्हारे शिक्षण की व्यवस्था संतोषजनक बनी रहे, ऐसा प्रबंध कर दिया जायगा। अभी जवतक वालजीभाई वहां पर हैं, तवतक चिंता करने की जरूरत नहीं।

पू० वापूजी ता० २७ को आनेवाले हैं। वर्किंग कमेटी की वैठक अहमदावाद में ३० तारीख को होगी। उस समय वहां जाना होगा। पू० इमाम साहव (आश्रम वाले) का कल स्वर्गवास हो गया। पू० वापूजी से नहीं मिल पाये।

जमनालाल का आशीर्वाद

: २७ :

(दिसंवर, १९३१)

(पत्र अपूर्ण मिला है।)

अगर श्री वालजीभाई वहां नहीं आवें तो तुम अपनी पढ़ाई की व्यवस्था चि० प्रभुदासभाई से मिलकर जरूर कर लेना, जिससे भविष्य में तुम्हें पूरा संतोष रहे।

श्री वसुमतीबेन का स्वास्थ्य कमजोर है। तुमसे हो सके तो उनकी

सेवा करना, अन्यथा कम-से-कम उन्हें कष्ट तो न देना। मैं तो चाहता हूं कि जिनके साथ रहते हो, उनके हृदय में अपने प्रति प्रेम पैदा कर सको तो ही तुम्हारी बुद्धिमानी है। अब तुम्हें कम-से-कम व्यवहार में सभ्यता तो जरूर लानी चाहिए। इसके बिना भविष्य में कई प्रकार की अड़चनें आना संभव है। तुमको इस उमर में कसरत-व्यायाम, खासकर घूमने-फिरने में तो आलस नहीं ही रखना चाहिए। पू० बापूजी की बातों का तो खयाल रखते ही होगे।

जमनालाल का आशीर्वाद

: २८ :

बंबई, ५-१-३२

चि० कमल,

तुम्हारा पत्र मिला। आज तुमको तार दे दिया है।

पू० बापूजी, सरदार वल्लभभाई और श्री राजेंद्रबाबू तो पकड़े ही गये हैं, वर्किंग कमेटी भी गैरकानूनी करार दे दी गई है। मैं किसी भी समय पकड़ा जा सकता हूं। वैसे आज डाकगाड़ी से वर्धा जाने का विचार कर रहा हूं। वहां तक जाने दिया जाऊंगा या नहीं, यह बात दूसरी है। श्री जानकीदेवी और चि० रामकृष्ण भी मेरे साथ वर्धा जानेवाले हैं।

युद्ध शुरू हो गया है। तुम श्री वालजीभाई के कहने के अनुसार काम करना। उत्साह रखना। सिर्फ जोश में आकर कोई काम न करना। जो कदम उठाओ, खूब सोच-समझकर उठाना, ताकि वह फिर पीछे न रखना पड़े। तुम किसी बात की चिंता मत करना।

मेरा स्वास्थ्य साधारणतया ठीक है।

जमनालाल का आशीर्वाद

: २९ :

धूलिया-जेल,
१८-४-३२

चि० कमल,

आशा है, मेरा भायखला जेल से लिखा हुआ पत्र तुम्हें मिला होगा।

मेरा मन और स्वास्थ्य ठीक है।

यहां पू० विनोवा के साथ दोनों समय प्रार्थना आदि में अच्छी तरह समय निकल जाता है। तुम अपना जीवन पवित्रता व विनम्रता के साथ विताने का खयाल रखना। जेल में जहां तक हो सके, भूख हड़ताल नहीं करनी चाहिए। इसका खयाल रखना। अपना स्वाभिमान तो रखना ही चाहिए। आशा है, हम लोग साथ ही वाहर आ जायेंगे।

तुम्हारी माता नागपुर में ठीक हैं। वर्धा में सव आनन्द में हैं। तुम्हें समय मिले तो अभ्यास वढ़ाते रहना। छूटने पर वर्धा आने का ख्याल रखना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ३० :

अल्मोड़ा, ६-५-३३

चि० कमल,

तुम्हारी अंग्रेजी व अक्षरों के वारे में चि० धन्नू ने तुम्हें लिखा ही है। चि० धन्नू मुझे यहां आशा से ज्यादा काम दे रहा है। मुझे उसके काम से संतोष है।

आशा है, महावलेश्वर में तुम्हारा आलस्य चला गया होगा। चि० रामकृष्ण वहां नहीं पहुंचा होगा। मैंने आज वम्बई लिखा है कि श्री घोत्रे यहां आनेवाले हैं, तो उनके साथ यहां भेज दें। वहां तुम्हारे पास पहुंच गया हो, तो फिर यहां आने की जरूरत नहीं रहती।

श्री पदमजी के कुटुंव का मोटर-एक्सीडेंट का समाचार पढ़कर दुःख हुआ। श्री पदमजी को मैं जानता हूं। तुम मेरी ओर से भी समवेदना उनके घरवालों के समक्ष प्रकट करना। वड़ी रोमांचकारी दुर्घटना हुई।

अल्मोड़ा-जेल वाहर से तो श्री वदरीदत्तजी पांडे ने यहां आते समय दिखा दी थी। जहां-जहां तुम रहे हो, वे सव स्थान देखने की इच्छा तो है।

तुम्हारा हिसाव वरावर नहीं हैं। ९० रु० श्री वकील ने जो तुम्हारे नामे डाले हैं, वे तुमने जमा नहीं किये। सो अभी से हिसाव वरावर रखने की आदत डालना वहुत जरूरी है।

श्री वकील व उनकी धर्मपत्नी को मेरा वंदेमातरम् कहना।

श्री लक्ष्मीनिवास विड़ला (श्री भाई घनश्यामदासजी के लड़के) वहां हैं। उनकी पत्नी श्री सुशीलादेवी का स्वास्थ्य कैसा है ? वहां जाने से उन्हें क्या फायदा हुआ ? वह बराबर जानकारी लेकर मुझे अवश्य लिखना। मुझे इस लड़की के स्वास्थ्य की थोड़ी चिंता रहती है। चि० शांताबाई के पिता भाई सूरजमलजी का देहांत होगया, यह तो तुम्हें मालूम हुआ ही होगा। तुमने पत्र भी भेजा होगा। चि० नानू को आशीर्वाद कहना।

उपवास के समय पू० वापूजी के पास जाकर उन्हें कष्ट मत देना।

यहां इस वर्ष वारिश ज्यादा पड़ रही है, जिससे सरदी भी ज्यादा है। इससे घूमना-फिरना भी कम हो पाता है। तुम वहां का पूरा वर्णन अंग्रेजी में लिखने का वरावर खयाल रखना। चि०धन्नू की चिट्ठी से घवराना मत।

चि० उमा का ठीक विकास हुआ है। मुझे इसके वारे में थोड़ा असंतोष रहता था। अव इसे देखकर संतोष हुआ। आशा है, यह भी होनहार लड़की तैयार हो सकेगी। अव तो चि० रामकृष्ण की ही थोड़ी फिक्र है।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ३१ :

शैल आश्रम, अल्मोड़ा
२३-५-३३

चि० कमल,

तुम्हारा बंवई से लिखा पत्र मुझे यहां १९ तारीख को मिला।

चि० रामकृष्ण का स्वास्थ्य सुधरा है, ऐसा तुम्हें भी महसूस होता होगा।

मुझे हमेशा तुम्हारे आलस्य व लापरवाही के स्वभाव की थोड़ी चिंता रहा करती है। वाकी तो संतोष है । चि० रामकृष्ण के कारण भी तुम्हें अपना आलस्य हटा देना चाहिए, जिससे उसमें आलस्य की आदत न पड़ने पाये। मेरा यह अनुभव व विश्वास हो गया है कि जिस किसी के शरीर में आलस्य भरा हो या जिसकी लापरवाही के कारण आलस्य की आदत पड़ गई हो, वह कभी भी जवावदारी का सुखकारक जीवन नहीं विता सकता। मेरा वालकपन से लाड़-चाव के कारण शरीर स्थूल

व आलसी था, परन्तु मैंने हमेशा पूरा उद्योग करके बालकपन से ही जवाबदारी का जीवन बिताने की कोशिश रखी, उसका मुझे अब प्रत्यक्ष लाभ व सुख मिल रहा है।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ३२ :

पूना, ३०-५-३३

चि० कमल,

तुम्हारी तारीख २८-५ की चिट्ठी व श्री वकीलजी की चिट्ठी कल मिली।

प्रार्थना के बाद दोपहर को १२-२५ पर पू० बापूजी ने नारंगी के रस से उपवास तोड़ा। वह कमजोर व थके होने पर भी प्रसन्न थे। डाक्टरों ने उन्हें कम-से-कम दो सप्ताह तक पूर्ण विश्राम लेने को कहा है।

करीब दो सप्ताह तक मेरा कार्यक्रम पूना व बंबई के बीच में अनिश्चित रहेगा। तुम श्री वकील को कह देना कि वह जल्दी न करें बल्कि तारीख ५ को जब तुम लोग यहां आ जाओगे तब उनसे मिलकर बातें हो जायेंगी।

तुम वहां पर लक्ष्मीनिवासजी बिड़ला से मिले होंगे, न कि 'लक्ष्मीनारायणजी बिड़ला से, जैसा कि तुमने चिट्ठी में लिखा है।

हिसाब के बारे में समक्ष मिलो, तब तुम अपना खुलासा मुझे समझाना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ३३ :

वर्धा, ३१-१०-३३

प्रिय कमल,

तुम्हारा २१ ता० का पत्र मिला। मैं इन दिनों काफी व्यस्त रहा। मदनमोहन ने तुम्हारे स्कूल की पुस्तिका मेरी फाइल में रख दी है; जब समय मिलेगा तब देखूंगा।

मैंने तुम्हारे स्कूल के उद्घाटन-समारोह पर अपना संदेश पहले ही भेज दिया है। आशा है, समय पर मिल जायगा।

इससे बढ़कर प्रसन्नता मुझे क्या होगी कि मैं तुम्हें जल्दी ही एक ऐसे सुशिक्षित नवयुवक के रूप में देखूं जिसकी तमाम शक्ति देश के हित में लगी हो!

शिक्षा चाहे कितनी ही गहन व व्यापक क्यों न हो, उसको ग्रहण करने का कोई अर्थ नहीं यदि वह सही मार्गदर्शन न करे और जीवन के वास्तविक अर्थ को समझने में सहायक न हो। एक बात और याद रखने को कहूंगा— और वह यह कि ज्ञान-प्राप्ति का कोई निश्चित राज-मार्ग नहीं होता। ज्ञान-प्राप्ति के लिए तो व्यक्ति को 'तपस्या' करनी पड़ती है। मस्तिष्क को केवल (विशेष) महत्त्वपूर्ण विषयों पर केंद्रित करने के लिए ट्रेनिंग देनी पड़ती है। मनुष्य को उसकी लगाम दृढ़ता से थामनी पड़ती है। ताकि उच्छृङ्खलता से इधर-उधर न भागे। तुम्हे हमेशा यह सुप्रसिद्ध कहावत याद रखनी चाहिए—

One thing at a time,
And that done well,
Is a very good rule,
That many can tell?

यदि तुम्हें अपने मस्तिष्क को सक्रिय बनाना है और उसे 'ट्रेंड' करना है, तो तुम्हें पहले अपने शरीर को स्वस्थ रखना होगा। "स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क।" अतः मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि तुमने घुड़-सवारी शुरू कर दी है। उसे नियमित रखो। उससे तुममें क्रियाशीलता आयेगी। यह बहुत अच्छी कसरत है। बस इतना ही है कि नियमित रहो। मुझे विश्वास है कि शरीर की तुलना में तुम्हारा मस्तिष्क पीछे नहीं रहेगा।

---

१ "एक समय में एक काम करो
और वह भी अच्छी तरह;
कई लोग बतायेंगे
कि यही नियम अच्छा है।"

मैं बापूजी के साथ अखिल भारत के दौरे पर नहीं जा रहा हूं। शायद मध्यप्रदेश के कुछ भागों में ही जाऊं।

रामकृष्ण के बारे में श्री वकील से मेरी ओर से पूछना कि क्या उसे वहां भेजा जा सकता है? यदि हां, तो कब? रामकृष्ण के बारे में उनका पुराना अनुभव कैसा है? क्या उसे वहां अधिक लाभ पहुंचेगा? मुझे उसकी पढ़ाई के बारे में चिंता है। मैं चाहता हूं कि उसकी पढ़ाई के बारे में कोई निश्चित प्रबंध अवश्य हो जाय।[1]

(अंग्रेजी से अनूदित) जमनालाल का आशीर्वाद

: ३४ :

वर्धा, १६-११-३३

चि० कमल,

चि० रामकृष्ण को आबिदअली के साथ भेजा है। इसके गले में सूजन है। कई डाक्टरों की राय है कि इसका आपरेशन करवाना चाहिए। आबिद-अली डाक्टरों से अच्छी तरह परिचित है। अतः अगर जरूरत समझो तो इसको दिखाकर जो उचित हो, उस तरह करवा लेना। तुम इसकी पढ़ाई की बराबर व्यवस्था कर देना। अब मैं इसकी पढ़ाई व इलाज के बारे में फिक्र नहीं करूंगा। तुम्हारी जिम्मेदारी है, ऐसा समझना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ३५ :

चिकलदा (अमरावती)
२३-११-३३

चि० कमल,

तुम्हारा १८-११ का पोस्ट-कार्ड मिला।

---

१. कमलनयनजी की अंग्रेजी की पढ़ाई में मदद हो, इसके लिए श्री महादेव देसाई ने सुझाया था कि उनके साथ सब लोग अंग्रेजी में पत्र-व्यवहार करें। इसी सिलसिले में जमनालालजी ने भी कुछ पत्र उन्हें अंग्रेजी में लिखे थे।

चि० रामकृष्ण पहुंच गया। उसके गले की तकलीफ के लिए तो आगे जाकर उसका आपरेशन डा० शाह के पास करवा ही लेना होगा; पर तुम्हारी मां को तभी संतोष होगा जबकि वह खुद अपनी हाज़िरी में आपरेशन करवाये या फिर मेरी हाज़िरी में। सो यह सब तो १० दिसंबर के बाद ही हो सकेगा।

कल तुम्हारा व आबिदअली का पत्र आया। आबिदअली ने लिख दिया है कि वह आपरेशन जल्दी करा लेगा, तब से तुम्ह री मां खूब नाराज़ व चिंतित हो रही है। बोलना-चालना भी बन्द कर रखा है। मैं उसे समझाने का प्रयत्न करूंगा। समझ जायेगी, ऐसी आशा है।

आबिदअली को भी तुम समझा देना कि जल्दी न करे। तुम्हारी मां को आपरेशन के नाम से चिंता और घबराहट हो जाती है, यह तो तुम जानते ही हो।

अपने स्वास्थ्य का हाल लिखना। परीक्षा खत्म हो गई होगी।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ३६ :

गोंदिया, २३-१-३४

चि० कमल,

तुम्हारा पत्र मुझे वर्धा में ही मिल गया था। तुम अपने जो विचार लिखकर दे गये थे, वे मैंने पढ़े हैं। तुमने अपने विचार साफ-साफ लिख दिये, यह जानकर बहुत खुशी हुई। मैं तारीख २६ को वर्धा पहुंचूंगा। वहां से उनकी एक नकल पू० बापूजी के पास भेज दूंगा, और इस विषय में उन्हें पत्र भी लिखूंगा। तुम भी संक्षेप में अपना इरादा उन्हें लिख भेजना। श्री वकील से भी बातचीत की होगी। उनकी क्या सलाह है? श्री पी० एस० पाठक को भी लिखकर पूछने का विचार है।

बिहार में बहुत हानि हुई। वहां जाकर कुछ सेवा करने की इच्छा तो जरूर होती है, परंतु हाथ में लिया हुआ काम छोड़कर जाने में संकोच हो रहा है। पू०बापूजी को तार दिया है। वर्धा जाकर विचार करूंगा। समय मिले तो बंबई से जो कुछ सहायता वहां भिजवाई जा सके, वह पू० राजेंद्र-बाबू के पास भिजवाने का खयाल तुम भी रखना।

चि० रामकृष्ण ठीक रहता होगा। उसे आशीर्वाद कहना। चि० इन्दू[1] को भी कहना कि समय मिले तो पत्र लिखे।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ३७ :

पटना, १९-४-३४

प्रिय कमल,

तुम्हारा १५-४ का पत्र मिला। तुम व चि० रामकृष्ण वर्धा पहुंच गये होंगे। तुम, चि० रामकृष्ण और श्री लोंढे मास्टरजी इधर होकर घूम फिर-कर अल्मोड़ा या जहां जाना चाहो जा सकते हो। पू० वापूजी से पटना में तो मुलाकात होना कठिन होगा, क्योंकि वह तो यहां २४ तारीख को कुछ ही घंटे ठहरनेवाले हैं। परन्तु उनके दौरे में जाकर तुम उनसे मिल सकते हो। मैं यहां २७ तारीख तक तो रहूंगा ही, वाद में शायद रांची जाना पड़े। तुम्हारा यहां आना निश्चित हो जाय तो दिन और गाड़ी लिख भेजना, जिससे मुझे मालूम रहे।

तुम्हारी माता आजकल ज्यादा चिंतित रहती हैं। तुम उसका समाधान कर सको तो प्रयत्न कर देखना। केशरवाई और मां वगैरा भी चिंतित रहते हैं। तुमको समय हो तो दोनों के मन को समाधान मिले, ऐसा प्रयत्न करना। मैंने चि० प्रह्लाद से भी कहा है। आज तुम्हें तार भी भेजा है। तुम्हारी मां की इच्छा हो और वह यहां आना चाहती हो और कमला भी आना चाहती हो, तो उन्हें तुम साथ ला सकते हो। जैसा तुम सवको समाधान हो वैसा करना। मैं अव ज्यादा चिंता नहीं करूंगा।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ३८ :

वर्धा, ३-६-३४

प्रिय कमल,

आशीर्वाद। पटना से इलाहावाद, करंजिया, अनंतपुर, वेतूल होता

१. श्रीमती इंदिरा गांधी। उन दिनों कमलनयनजी और वह एक ही स्कूल में पढ़ते थे।

हुआ परसों यहां आया हूं ।

मेरा विचार तो १०-१२ तारीख तक यहां रहकर वंबई-पूना होकर पटना जाने का था; पर आज राजेंद्रवाबू का तार आया है कि उनके बड़े भाई महेंद्रवावू का स्वर्गवास हो गया है। इसलिए आवश्यक हुआ तो कल या परसों ही मुझे पटना जाना पड़ेगा । आज मैंनें पटना तार किया है । अतः उत्तर आने पर निश्चय होगा ।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ३९ :

वम्वई, २४-१२-३४

प्रिय कमल,

तुम्हारा २१-१२ का पत्र आज प्रातःकाल मिला । पत्र इतनी देर से मिला, यह देखकर आश्चर्य हुआ । यदि तुम्हारे लिखे अनुसार वह एक दिन देरी से, अर्थात् २२ की मेल से, भी चला होता तो भी मुझे कल मिल जाता । पत्रों के भेंजने में इस प्रकार असावधानी रखना ठीक नहीं ।

सव दृष्टि से विचार करते हुए मुझे तुम्हारा कोलम्वो जाना ही ठीक मालूम होता है । वहां जाने से तुम्हारी अंग्रेजी भी काफी सुधर जायगी तथा सामान्य-ज्ञान में भी अच्छी वृद्धि होगी । आशा है, तुम व श्री महादेव मिलकर अपनी माताजी आदि सभीको संतोष दिलाकर कोलम्वो जाने का निर्णय कर लोगे । जाना हो तो फिर जितनी जल्दी जा सको, उतना ही अच्छा है । देरी नहीं करनी चाहिए । वंबई होकर जाना पसंद हो तो मुझसे मिलते हुए चले जाना । मद्रास होकर जाना हो तो प्रोग्राम निश्चित करके मुझसे एक वार मिलकर जा सकते हो ।

पूज्य वापू व विनोवा का आशीर्वाद अवश्य प्राप्त कर लेना ।

जमनालाल के आशीर्वाद

: ४० :

वंबई, ९-१-३५

चि० कमल,

इन दिनों मैं पत्र नहीं लिख सका । आज वापूजी का पत्र मिला है कि

सीलोन में मलेरिया वंद हो जाने के वाद तुम्हें भेजेंगे। सो ठीक है। तुमने अपनी तैयारी तो प्रारंभ कर ही दी होगी।

चि० ओम के कान का क्या हाल है? अगर अभीतक विलकुल ठीक नहीं हुआ हो तो उसे यहां भेज देना ठीक होगा। वापूजी ने भी लिखा है। उन्होंने ओम को वम्वई भेजने के वारे में वर्धा तार भेजा है। मुझे पूरी हालत लिखना।

चि० मदालसा का वजन वढ़ना शुरू हुआ? उसका ठीक चलता होगा। चि०रामकृष्ण का कैसा चल रहा है? श्री नाना की व्यवस्था ठीक होगई होगी? चि० लाली राजी है। डा० खानसाहेव कल यहां आनेवाले हैं। तुम्हारी माता का दिल व दिमाग शांत होगा। उसे भी कहो कि वह अपना वजन बढ़ाकर वतायें, तव ही उसके इलाज में दूसरों को श्रद्धा पैदा हो सकती है।

तुम्हें व्यायाम व कसरत का खूब अभ्यास करना चाहिए।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ४१ :

भुवाली (नैनीताल),
२-६-३५

प्रिय कमल,

तुम्हारे ता० २७ व २९ के पत्र मिले। मैं वीच में नैनीताल गया था। वहां एक दाढ़ और एक दांत निकलवाया था, अतः तीन रोज ठहरना पड़ा। नैनीताल में यू०पी० के सरकारी अफसरों व अन्य मित्रों से मिलना हुआ। एस० पी० शाह—आई० सी० एस०, सैक्रेटरी इंडस्ट्री व एजुकेशन; साठे—आई० सी० एस०, सैक्रेटरी फाइनेंस; सर कुंवर महाराजसिंह, होम मेम्वर; हिम्मत सिंहजी, अंडर सक्रेटरी फाइनेंस; खेर—इनकमटैक्स कमिश्नर आदि से वातें हुईं। इनमें कई से पहले ही परिचित था, वाकी से अव हो गया। श्री शाह ने मुझे भोजन के लिए भी आमंत्रित किया था। श्री शाह की लड़कियों ने गायन व नृत्य दिखलाये।

चि०राम के वारे में जो तुमने अपना अभिप्राय लिखा, वह पढ़कर मुझे

बहुत सुख हुआ। मुझे तो उससे पहले से ही काफी आशा है। उसकी इच्छा हो तो तुम उसे कैमरा भेज सकते हो।

तुमने जो वर्धा से तार भेजा, उसमें एक शब्द के गलत हो जाने से दूसरा ही अर्थ निकलता था। आगे खयाल रखना चाहिए कि तार-भाषा का अर्थ है संस्कृत की सूत्र-भाषा—Conciseness and Clearness (संक्षिप्त व स्पष्ट)

बम्बई में जरूरत से ज्यादा समय व्यतीत न हो, इसका खयाल रखना।

चि० उमा की पढ़ाई का इंतजाम कर दिया होगा। अपना प्रोग्राम व कोलम्बो का पता शीघ्र लिखना। नाना की अगर कोल्हापुर में रहकर वहां का काम संभालने की इच्छा हो तो मैं उन्हें अवश्य वचनमुक्त कर सकूंगा। उन्हें जहां पूरा समाधान हो, वहां वह रह सकते हैं।

श्री केशवदेवजी से कह देना कि ज्यादा असुविधा हो तो मोटर भेजने की जरूरत नहीं। कंपनी के काम में अड़चन न पड़े और उन्हें जरूरत हो तो भेजी जा सकती है।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ४२ :

भुवाली, ८-६-३५

चि० कमल,

तुम्हारा ५ तारीख का पत्र मिला। तुम्हारे पत्र की तो मैं कई दिनों से राह देख रहा था। मैं समझता हूं कि तुम टीके लगवाने के झंझट में न पड़ो और रेल से ही चले जाओ। आते समय स्टीमर से आ जाना।

डा० जवाहरलालजी के बारे में डाक्टर की जो रिपोर्ट भेजी, सो मिली। प्यारेलालजी की बहन चि० सुशीला आजकल यहां आई हुई है। उससे मैंने रिपोर्ट को समझा। उसकी राय में तो ज्यादा घबड़ाने की बात नहीं है, फिर भी आराम और इलाज की आवश्यकता तो है ही।

डा० जवाहरलालजी का प्रोग्राम निश्चित होने पर मुझे मालूम हो जायेगा तो ठीक रहेगा। मेरा कच्चा प्रोग्राम इस प्रकार है :

२१ को रवाना होकर २२-२३-२४ मसूरी में पू० मालवीयजी तथा

अन्य मित्रों से मिलना। २५ को देहरादून। २६-२७ कनखल-हरद्वार। २८-३० दिल्ली। १ से ६ जुलाई तक कानपुर 'गणेशशंकर विद्यार्थी-स्मारक' के लिए। दो-तीन रोज में पक्का प्रोग्राम निश्चित होने पर दुकान के पते पर लिखूंगा।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ४३ :

भुवाली, १८-६-३५

चि० कमल,

तुम्हारे भेजे हुए दोनों तार मिले। तुम कुशलपूर्वक पहुंच गये तथा प्रवास में कष्ट नहीं हुआ, यह जानकर संतोष हुआ।

तुम्हारे खाने-पीने आदि का प्रबंध किस प्रकार हुआ, सो लिखना। प्रति सप्ताह मुझे पत्र देते रहना। इनमें वहां का वर्णन होगा, अतः मैं ये पत्र संभालकर रखूंगा और जब तुम आगे कोलंबो के अपने अनुभव लिखना चाहो, तब तुम इनका उपयोग कर सकते हो।

मैं दो रोज नौकुचिया ताल भी गया था।

तुम्हारे भेजे हुए फोटो तथा पत्र मिले। पैदल के रास्ते से मैं आज अल्मोड़े की ओर जा रहा हूं। साथ में पंडित रामनरेशजी त्रिपाठी भी हैं। चार-पांच रोज लगेंगे। इलाहाबाद के डा० काटजू भी साथ रहेंगे।

फर्स्ट क्लास की टिकट व खाने-पीने का क्या खर्च पड़ा? खाना कैसा मिला?

जमनालाल का आशीर्वाद

: ४४ :

करांची, ६-७-३५

चि० कमल,

तुम्हारा तारीख २६-६ का पत्र कल करांची में मिला। तुमने अपना पहले का स्थान बदल दिया, यह मालूम हुआ। मेरी तो हमेशा से यही राय रही है कि अपने कारण दूसरों को जितना हो सके, उतना कम कष्ट दें।

अतः रहने के वारे में तुम दूसरों की सुविधा का खयाल रखकर ठीक प्रवंध कर लेना। महादेवभाई का भी पत्र आया होगा।

तुम जनवरी के वजाय अव जून में परीक्षा दे सकोगे, सो ठीक है। पांच-छः महीने का फर्क पड़ जायेगा।

चि० मदू तथा जानकीदेवी शैलाश्रम में रह रही हैं। प्रसन्न हैं। तुम भी उन्हें शैलाश्रम (विन्सर), अल्मोड़ा के पते से पत्र भेज देना। वे फिलहाल वहीं रहेंगी। मुझे अव पत्र वर्धा ही दिया करना।

जमनालाल वजाज का आशीर्वाद

: ४५ :

वर्धा, १३-७-३५

चि० कमल,

तुम्हारा पत्र मुझे वंवई में मिल गया था। मैंने उसे पढ़ा। संतोष हुआ।

चि०...यहां आने वाली थी। परन्तु कल ही...का तार मिला कि वह नहीं आ रही है।

यह तार पढ़कर थोड़ा आश्चर्य तो हुआ ही, वाद में स्टेशन पर डा०...मिला था। उसे मैंने अलग ले जाकर पूछा तो मालूम हुआ कि चि०...अभी तक संवंध का निश्चय नहीं कर पाई है। मन डांवाडोल है। यह सुनकर आश्चर्य हुआ और थोड़ा वुरा भी लगा, परन्तु मैंने उसी समय ...को कह दिया कि अव वात चारों ओर फैल गई है। तथापि चि०...को संतोष नहीं है तो इस संवंध के विषय में फिर से विचार किया जा सकता है। क्या तुम्हें वंवई में इसका पता नहीं लग सका। खैर, कोई वात नहीं, तुम चिंता विल्कुल मत करना। जो कुछ होगा वह ठीक होगा। हां, तुम्हें ऐसी हालत में चि०...से पत्र-व्यवहार वंद कर देना चाहिए। उसका पत्र कोई तुम्हारे पास आये तो पहले मुझे भेजने का खयाल रखना। तुम परेशान मत होना।[1]

---

१. कमलनयनजी की जहां सगाई हुई थी, वह वाद में टूट गई। उसी की चर्चा इस तथा आगे के पत्रों में है।

: ४६ :

वर्धा, १७-७-३५

चि० कमल,

तुम्हारा तारीख ७-७-३५ का पत्र मिला। मैंने श्री आलूविहारे को भी कल पत्र भिजवाया है। वहां रहने में उनको ऐसी किसी प्रकार की असुविधा न हो, इसका तुम खयाल रखना।

तुम सेंट पीटर्स कालेज में दाखिल हो गये, सो ठीक है। तुमने अपने प्रोग्राम व डिवेट (वाद-विवाद प्रतियोगिता) के बारे में लिखा, सो मालूम हुआ। श्री महादेवभाई ने कहा कि अंग्रेजी में वहुत परिश्रम करने की आवश्यकता है। वह भी तुम्हें वरावर लिखा करते हैं।

तुम दिसंवर में यहां आने का इरादा रखते हो, सो ठीक है। तुम अव अपनी जिम्मेदारी स्वयं ज्यादा समझते हो, अतः जैसा तुम उचित समझो करना। मुझे वहां आने के लिए लिखा, सो ठीक। तुम वहां अधिक समय तक रह सकोगे तो मैं भी आऊंगा।

चि०···को आज मैंने पत्र[1] भेजा है। उसकी नकल तुम्हें भेज रहा हूं। तुम्हारा तार मिल गया। पत्र भी मिल जायेगा।

जमनालाल वजाज का आशीर्वाद

---

१. यह पत्र निम्न प्रकार है—

वर्धा, १७-७-३५

चि०······

तुम्हारे पिताजी के तार व पत्र से तुम्हारी इच्छा यह संवंध नहीं रखने की मालूम हुई। थोड़ा वुरा तो मालूम हुआ; परन्तु मैंने तुम्हें पहले ही कह रखा था कि आखिर तक तुम्हें छूट रहेगी। उसी मुताविक पत्र मिलते ही मैंने लिख दिया था कि तुम्हारी इच्छा कम है, तो तुम्हें संकोच में डालकर और किसी प्रकार का दवाव डालकर संवंध रखना उचित नहीं। तुमने मेरा पत्र पढ़ा होगा। हां, मुझे तुम्हारे विचार-परिवर्तन का निर्णय पहले मालूम हो जाता तो ज्यादा ठीक रहता। ख़ैर! जो कुछ हुआ या होता है वह ठीक ही है। अगर

: ४७ :

कोलम्बो, १८-७-३५

पूज्य काकाजी,

दो रोज पहले मैंने आपको तार और पत्र भेजा था। आज आपका दूसरा पत्र मिला।

आप मेरी तरफ से पूरा विश्वास रखिये। मेरी चिंता नहीं करें। यह तो मामूली चोट है। मुझे तो राजनीतिक कार्य करने की महत्वाकांक्षा है, उसमें असफलता की जो चोटें सहनी पड़ेंगी, वे और भी भारी होंगी। मुझे विश्वास है कि इस तरह की चोटें सहन कर हताश और निराश होने के बजाय मैं अपनेको और भी मजवूत, संयमी और दृढ़ बना सकूंगा।

कौन जानता है ईश्वर ने मेरे पूर्व कर्मोंके दंड-रूप ही यह शिक्षा दी हो, या वह मेरी परीक्षा लेना चाहता हो। मुझे ईश्वर में पूरा विश्वास है। सिवाय भले के आजतक उसने मेरा और कुछ नहीं किया। जो-कुछ बुरा

तुम खुद मेरे पास आकर अपने विचार प्रकट रूप से कह देतीं और फिर यह संवंध टूटता तो मुझे ज्यादा संतोष रहता। परंतु अब इसका कोई विचार नहीं करना है।

मैं तो तुम्हें यह पत्र इसलिए लिख रहा हूं कि मैंनें तो तुम्हें लड़की कहकर माना है, और ईश्वर की इच्छा रही तो मानता रहूंगा। जहां कहीं भी तुम रहोगी तुम्हारी सव तरह से उन्नति चाहता रहूंगा। तुम अगर ठीक समझो तो मुझसे उपरोक्त संवंध व पत्र-व्यवहार विना संकोच चालू रख सकती हो। अगर तुम मुनासिव समझो तो अपने विचार-परिवर्तन का खानगी पत्र मुझे भेज सकती हो। अगर संकोच मालूम हो तो कोई आवश्यकता नहीं। मेरे पास इस संवंध के वारे में तुम्हारे जो पत्र वगैरा हैं क्या वे तुम्हें भेज दिये जायें? तुम्हारा भविष्य का क्या प्रोग्राम है? कहां पढ़ने का निश्चय किया है? इस संवंध के टूटने के वारे में मने पूज्य वापूजी से कह दिया है व चि० कमल को भी लिख दिया है।

जमनालाल के आशीर्वाद

किया मालूम होता था, वह भी कालांतर से समझ में आ जाता था कि वह भला ही था; और उसके लिए मैं ईश्वर को हमेशा धन्यवाद देता रहा। मैं आलस्यवश प्रार्थना आदि तो नहीं कर पाता, परंतु मैं अपनेको ऐसी परिस्थिति में नहीं डालता कि ईश्वर मुझे अपने (ईश्वर के) अस्तित्व के बारे में भुलावा दे।

मेरा यदि कुछ भी विकास हो रहा है तो यह ईश्वर के प्रति आंतरिक श्रद्धा, भक्ति और प्रेम के कारण हैं। और यही वजह है कि मैं हमेशा संतोषी और आनंदी रहता हूं। इस स्थिति के लिए मैं आपका ऋणी हूं, यह कहकर आपके ऋण को कम नहीं करना चाहता। पू० विनोवाजी का भी मैं हमेशा के लिए ऋणी हो गया हूं। सद्भाग्य से मुझे ऐसे कई मौके आये जबकि उनकी ईश्वर में अटल भक्ति और विश्वास देखकर मैं आश्चर्यचकित हो जाता था। यद्यपि इस शक्ति की मुझे पूरी कल्पना नहीं है, फिर भी उसकी उपयोगिता और कीमत से मैं वाकिफ हूं। पू० बापूजी में भी यही शक्ति है, जिससे वह इतनी दृढ़ता, निडरता और आत्मविश्वास से काम करते हैं।

एक तरह से तो यह बहुत ही अच्छा हुआ कि यह संबंध टूट गया। मैं जब भी अपने भावी कार्यक्रम का विचार करता था, तो मुझे इस छोटी उम्र में शादी कर लेना बहुत खटकता था। मुझे हवाई जहाज आदि चलाने और भी कई साहसिक कार्य करने की इच्छाएं थीं, वे शादी करने के बाद उस तरह पूरी नहीं कर पाता। मेरी जवाबदारी और ही कुछ हो जाती। जब मैं.....को अपना जीवन-साथी बनाने का वचन दे चुका था, तो अपने विचार हमेशा उसी पर केंद्रित करने लगा था।

पर संभव है कि यदि मेरी शादी नहीं हुई, तो मेरा पतन भी हो। परन्तु मेरी उन्नति करने का मौका भी मुझे उसीमें ज्यादा है। मैं पतित होने से घबराता नहीं, मुझे पाप का भी डर नहीं; परंतु मैं उससे सावधान रहने की कोशिश करता हूं। पूज्य बापूजी ने जो लिखा था कि "अभी कमल को बहुत-कुछ सीखना-सिखाना बाकी है," उसका मुझे पूरा खयाल है। अपनी कमजोरियों को मैं ज्यों-ज्यों अनुभव करता हूं, मेरा आत्मविश्वास बढ़ता ही जाता है।

मुझे जब ऐसे विचार आते थे कि शादी करना बंधन में पड़ना है तो

मैं उन्हें रोक देता था। परंतु अब ईश्वर ने मुझे फिर एक मौका दिया है कि मैं अच्छी तरह सोच लूं। फिर मुझे सबसे ज्यादा संतोष और सुख इस का है कि संबंध टूटा तो वह भी अपनी ओर से नहीं। मैं नहीं समझता, इससे ज्यादा और क्या भला हो सकता था !

इस नई परिस्थिति का लाभ लेते हुए यद्यपि मैं आपको आज निश्चित रूप से नहीं लिख सकता हूं कि मैं आगे शादी करना पसंद करूंगा या नहीं, क्योंकि उस तरफ मैंने विचार करने की चेष्टा ही नहीं की। इतना ही नहीं, विचार आते थे तो रोकता था। फिर भी, अभी यही अच्छा है कि कहीं भी मेरे संबंध के विषय में अपनी तरफ से चर्चा न करें। शायद एक या दो महीने के भीतर मैं आपको निश्चित कुछ कह सकूंगा।

मेरी यही इच्छा है कि परमात्मा मुझे आपका विश्वासपात्र बनावे और वह शक्ति दे जिससे मैं आपकी आशाओं को कार्य-रूप में परिवर्तित कर सकूं।

आपने मुझे लिखा कि जरूरत समझूं तो मैं आपके पास चला आऊं; यह पिता के नाते आपको शोभा देता है। परंतु आप मेरी तरफ से निश्चिंत रहिये। सामान्य बेचैनी के सिवाय जब मैं विचार करता हूं तो मेरा बोझा मुझे बहुत हलका मालूम देता है। शायद संबंध का टूट जाना मेरे अभ्यास के लिए भी अच्छा साबित होगा।। अब मुझे एकाग्र होने का ज्यादा अच्छा मौका है।

परिस्थिति को देखते हुए मैंने···को तथा उसके पिताजी को पत्र लिखना जरूरी समझा। उनकी नकलें आपको भेजता हूं। आप अपनी राय लिखियेगा।

मेरे यहां होते हुए यदि मुझे यूरोप जाने का पासपोर्ट मिल सकता हो तो आप कोशिश कर देखियेगा। पू० बापूजी को तथा पू० महादेवभाई को प्रणाम कहें। विशेष कुशल !

आपके बालक

कमल के प्रणाम

: ४८ :

वर्धा, २०-७-३५

चि० कमल,

तुम्हारे दो तार व तारीख १६-७ का पत्र पढ़कर संतोष हुआ और सुख मिला। तुम्हारा तार पू० वापू, महादेवभाई, काका सा० को वहुत पसंद आया। मेरे मन में जो थोड़ी चिंता थी वह तुम्हारे तार से दूर हो गई। तुमने थोड़ी भूल की। जब वंबई में तुम्हें थोड़ा संदेह हो गया था कि मन स्थिर नहीं है, व कुछ मित्र लोग वुद्धि-भेद कर रहे हैं तो अच्छा होता कि तुम मुझे इशारा कर देते। खैर, अनुभवों से ही मनुष्य सीखता है। मुझे भी इस घटना से काफी सीखने को मिला है।

अपनी माता को तुम एक सुंदर पत्र अवश्य लिख भेजना—शैलाश्रम के पते पर। अपने रहने, खाने-पीने, पढ़ाई की व्यवस्था श्री आलूविहारे की सलाह व संतोष के माफिक कर लेना। आशा है, वह खर्च ले लेंगे।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ४९ :

वर्धा, २२-७-३५

चि० कमल,

तुम्हारा १८-७ का पत्र आज मिला। तुम्हारे विचारों में ईश्वर पर विश्वास देखकर मन को सुख मिला। ईश्वर तुम्हारी सद्‌बुद्धि वनाये रखे। मेरा तो हरदम आशीर्वाद व ईश्वर से प्रार्थना है कि वह तुमको सच्चाई के मार्ग पर कायम रखते हुए देश की सेवा के लायक वनाये। फिलहाल तो मैं तुम्हारे संबंध का विचार नहीं करूंगा। तुम पूर्णतया समझ-विचारकर जव मुझे लिखोगे या मुझसे मिलोगे, तव ही विचार करना है।

इस घटना से मेरे विचारों में भी थोड़ा फर्क हुआ है। उस संबंध में तुमसे मिलने पर विचार-विनिमय होगा। मेरी समझ से तुमने जो पत्र ···को तथा उसके पिताजी को भेजे, उनकी भाषा-भाव तो ठीक हैं, परंतु तुम्हें अव एकवारगी पत्र-व्यवहार उनसे वंद ही कर देना चाहिए। उनकी दृष्टि से यह ठीक होगा। अन्यथा उनपर नैतिक दवाव पड़ने या फिर से

आकर्षण पैदा होने का डर है। अपनेको इस प्रकार अब खेंचना तो है नहीं। और अगर पत्र भेजो तो भी मेरे ही मार्फत भेजना उचित है। कोई जवाब आये तो लिखना। मेरे पत्र का हाल में कोई जवाब नहीं आया है। तुम्हारे पासपोर्ट के बारे में तुम जब दिसंबर में आओगे, तब विचार करना ठीक रहेगा। आजकल १०-१५ दिन तो मेहमान व कमेटी की धूम रहेगी।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ५० :

(वर्धा, ६-८-३५) ?

चि० कमल,

तुम्हारे लिखे मुताबिक आश्रम-भजनावली, गीता, गीताई व 'हरिजन' भेजने की व्यवस्था करने को दामोदर को कह दिया है।

तुम्हारी माता का सांत्वना का सुन्दर पत्र तुम्हें मिला, यह पढ़कर संतोष हुआ। पत्र मुझे भी मिला है।

कांग्रेस के आफिस लेने के बारे में तुम्हारे विचार जाने। सरदार साहब को अभी तुम्हारा पत्र पढ़ने को दिया है।

श्री राजेंद्रबाबू, सरदारजी वगैरह अभी यहीं रहेंगे।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ५१ :

इलाहाबाद, ४-९-३५

चि० कमल,

तुम्हारा पत्र मिला। सीकर, जयपुर तथा दिल्ली का कार्य समाप्त करके मैं १ सितंबर को यहां आया। सीकर में जाटों के बारे में वहां के सीनियर आफिसर, केप्टन वेब तथा जयपुर के आई०जी०पी०, मि०यंग से बातें हुईं। जाटों के मामले में जाटों की ओर से भी भूलें तो हुई हैं, पर वे यह भी नहीं चाहते कि केप्टन वेब को निकाला जाय। केप्टन वेब द्वारा किसानों का हित होने की संभावना भी है। जाटों के घोड़ी पर बैठने के बारे में राजपूत लोगों की भी राय मैंने ली। श्री रावराजा तथा अन्य राजपूत

नेताओं को इसमें आपत्ति नहीं मालूम होती।

जयपुर में वाइस-प्रेजीडेंट सर वीचम सेंट जॉन से भेंट हुई। वह आदमी ज़रा कड़ा मालूम हुआ। उससे जाटों के प्रति सहायता की कम आशा है।

मैं जयपुर से दिल्ली आ गया था। अजमेर नहीं आ सका। तुम्हारा अजमेर का लिखा पोस्ट-कार्ड दिल्ली में मिला। लोहारू में जाटों पर अत्याचार हुआ है, इस बारे में स्वतंत्र जांच की आवश्यकता है। बीच में एक रोज के लिए मेरठ और हापुड़ भी हो आया था।

कानपुर में स्व० गणेशशंकरजी के स्मारक का फंड संग्रह करने के लिए मैं तथा टंडनजी प्रयत्न कर रहे हैं। ता० ७ तक मैं यहां रहूंगा।

मेरी भी अल्मोड़ा जाने की इच्छा है, क्योंकि इन दिनों बहुत भारी कामकाज रहा। कुछ विश्राम मिल जाय। परंतु वर्धा में आवश्यक काम अटका पड़ा है, इसलिए वहां जाना जरूरी है। करीब १२ अक्तूबर से आगे एक सप्ताह मद्रास में वर्किंग कमेटी तथा अ० भा० कां० कमेटी की सभा है। उसके बाद यदि हो सका तो कुछ रोज आराम करने की दृष्टि से मेरा कोलम्बो आ जाने का विचार है। यदि आना संभव हुआ तो निश्चित सूचना दूंगा। वहां किसी होटल में शाकाहारी भोजन का प्रबन्ध हो सकेगा या नहीं, लिखना। किसी मित्र के यहां उतरना मैं पसन्द नहीं करूंगा; इससे तो दूसरों को बिना कारण तकलीफ होती है।

तुम्हारी दिसम्बर की छुट्टियां कब से कबतक हैं, यह लिखना। दिसम्बर में तुम मेरे साथ वर्धा में या जहां मैं रहूं, वहां रहो, यह मैं पसंद करूंगा।

अभी पं० ज़वाहरलालजी की रिहाई की सूचना मिली थी। उनसे फोन पर बात भी हुई। उनसे मिलने के लिए इलाहाबाद जा रहा हूं।···से व उसके माता-पिता व बड़ी बहन से बहुत देर तक खुलासेवार स्पष्ट बातचीत हुई। मैंने उनके यहां की जो स्थिति देखी, उससे प्रायः सब ही यह संबंध रखना चाहते हैं।.···भी फिर से विचार कर रही है। अब वह अधिक विचारपूर्वक सोच रही है। उसने मुझसे खासकर दो बातें कहीं। एक तो उसने कहा कि मुझे दूसरे लड़के से कमल का मिलान करने का मौका नहीं दिया गया। एकदम कमल का नाम मेरे सामने रखा और सभीने जोर दिया

कि तुम्हें यह संबंध स्वीकार कर लेना चाहिए। यानी मुझे स्वतंत्रतापूर्वक विचार का मौका नहीं मिला। मेरे ऊपर घरवालों के प्रेम का एक प्रकार का दबाव रहा। दूसरे उसने कहा कि कमल के 'मेनर्स' मुझे पसंद नहीं हैं।

आखिर यह निश्चय हुआ कि अभी संबंध छूटा न समझा जाय। बातचीत चल रही है व विचार हो रहा है। फिर भी चि०···अपनी जिम्मेदारी पर यह संबंध करना पसंद करे, और तुम्हें भी स्वीकार हो तो यह संबंध पक्का हो जाय, अन्यथा दोनों स्वतंत्र रहोगे। अब तुम अपने विचार दिल खोलकर स्पष्ट मुझे लिख भेजना। तुम्हारा पत्र आने पर मुझे अधिक विचार करने का मौका मिलेगा।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ५२ :

कानपुर, ६-९-३५

प्रिय कमल,

मैंने कल तुम्हें एक पत्र दिया है। मिला होगा। मैं इलाहाबाद से कानपुर पं० जवाहरलालजी के साथ ही हवाई जहाज से लौट गया था। आज फिर इलाहाबाद जा रहा हूं। श्री राजेन्द्रबाबू ज़रूरी मिलना चाहते हैं। वहां से बरेली जेल में खां साहब से मिलूंगा। अपने गत पत्र में तुमने सीलोन के बारे में लिखा है। तुम्हें मालूम होगा कि उस समय मैं कान के आपरेशन के कारण अखबार आदि बहुत कम पढ़ता था और सीलोन के हालात से पूर्णतया वाकिफ नहीं था। मेरा खयाल है कि पू० महात्माजी ने इस बारे में पत्र-व्यवहार किया है। उनका शायद यह मानना है कि सीलोन का संगठन भी बराबर नहीं है और वहां ठीक से काम नहीं हो पाता है। मैं समझता हूं कि तुम इस विषय में पू० बापूजी से पत्र-व्यवहार करो। वहां से कई लोगों ने बापू को यह भी लिखा है कि बाहरी मदद की जरूरत नहीं, ऐसा मेरा अंदाज है, पक्का नहीं मालूम।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ५३ :

शैल आश्रम (अल्मोड़ा)
१०-९-३५

प्रिय कमल,

मेरा कानपुर से भेजा हुआ पत्र मिला होगा। तुमने ध्यानपूर्वक पढ़ा होगा। तुम्हारी जो राय हो, वह मुझे साफ तौर से लिख भेजना। मेरे मन में तो यही जंच रही है कि अगर चि०···प्रसन्नतापूर्वक तुमसे संबंध करने को तैयार हो तो तुम तो यही संबंध सबसे ज्यादा पसन्द करते होगे। अगर मेरी यह समझ सही न हो तो तुम्हें साफ कह देना चाहिए, क्योंकि अब यह प्रश्न मैं अपनी पद्धति से तय करना चाहता हूं। अगर किसी कारण से तुम्हारा मोह या प्रेम न रहा हो तो साफ लिख भेजना। अगर तुम्हें इस संबंध से संतोष है तो मुझे तो रहेगा ही। परन्तु मन में दो ही प्रश्न उठते हैं। एक तो चि०···बहुत मज़बूत (स्वास्थ्य में) नहीं है, दूसरे उसपर पश्चिमी ढंग के वातावरण का अधिक असर है। शायद हम लोग चाहते हैं उस प्रकार के धार्मिक तथा नैतिक सिद्धांतों पर उसका विश्वास दृढ़ नहीं दिखाई देता। अगर उसमें सत्य का आग्रह होता तो इतनी कमजोरी सामने नहीं आती। तुम्हारे अंदर पूरा आत्म-विश्वास हो कि इस नाजुक व उड़नेवाली लड़की से संबंध हो जाने पर भी सुखी रह सकोगे और उसे भी अपने मार्ग पर लाकर सुखी बना सकोगे, तो मुझे फिर कोई चिंता नहीं रहती। मैंने तो उसे भुवाली में वचन दिया था, उसी प्रकार उसे लड़की का प्रेम देता रहूंगा व उसकी उन्नति चाहता रहूंगा। तुम इस पत्र का जवाब यहां भेज सकते हो। मेरा यहां तारीख २० तक रहना होगा।

मेरे साथ यहां चि० सफिया, नर्मदा, दादा धर्माधिकारी, दामोदर व कानपुर से जानकीदेवी भी साथ हैं। जानकी व नर्मदा तो कानपुर में गंगा में डूबते-डूबते बच गईं। यह एक ईश्वर की दया का ही कारण है। जो होता है, वह ठीक होता है।

मुझे लगता है कि तुम्हारा समय फिजूल की लिखा-पढ़ी तथा अन्य बातों में विशेष चला जाता होगा। तुम्हें अब अपनी परीक्षा की खूब अच्छी तैयारी का खयाल रखना चाहिए।

व्यायाम, मन में दृढ़ संकल्प, लगन व खान-पान में हलका भोजन व कम आहार रखने से आलस्य कम होगा और उत्साह व स्फूर्ति ज्यादा मालूम दे सकेगी। तुम खुद ही विचार करते हो, तब मुझे चिंता करने का कोई कारण नहीं रह जाता है।

जब कभी समय मिला तो तुम्हें बौद्ध धर्म का सही ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए। मुझे तो बुद्ध के जीवन से बहुत लाभ पहुंचा है। और भी पहुंचना संभव है। यहां आराम व शांति ठीक मिल रही है।

श्री दादा धर्माधिकारी से जैसे-जैसे परिचय बढ़ता जाता है, सुख मिलता है। वे विद्वान और सुलझे हुए व्यक्ति हैं।

चि० सफिया तो अब कमला, मदालसा, नर्मदा के माफिक हो गई है।

चि० दामोदर खूब ही प्रेम से सेवा व मेहनत करता है।

जमनालाल के आशीर्वाद

: ५४ :

अल्मोड़ा, २४-९-३५

चि० कमल,

तुम्हारे दो पत्र मिले।

तुमने अपने प्रोफेसरों की रिपोर्ट भेजी, सो देखी। इनकी कापी तो तुम्हारे पास होगी ही। व्याकरण व निबंध के बारे में प्रोफेसर की राय पर विचार करना चाहिए। साथ ही उस दिशा में कोशिश करना भी आवश्यक है। भाषा, शैली एवं व्याकरण को सुधारने के लिए अंग्रेजी उपन्यासों का पढ़ना वे आवश्यक समझते हैं। आशा है, तुम इस दिशा में अवश्य अमल करोगे। भूगोल के अभ्यास के लिए पब्लिक लाइब्रेरी में जाने की उन्हें आवश्यकता मालूम देती है।

शायद तुम्हारे पास इन रिपोर्टों की नकलें न हों, इसलिए ये वापस भेज रहा हूं। ताकि तुम उनको देखकर उसके अनुसार सुधार कर सको।

तुम्हारे स्पष्ट विचार पढ़कर सुख मिला। विवाह-संबंध के बारे में मेरी तो यह राय है कि तुम विशेष विचार न करो। इस विशेष परि-स्थिति में मित्रों को भी न लिखना ठीक रहेगा। चि०···को स्वतंत्रतापूर्वक विचार करने दिया जाये। उसकी इच्छा व आग्रह तुमसे मिलने का होगा तो इस प्रकार की व्यवस्था हो जायेगी। अपनी ओर से विशेष आग्रह नहीं रखना है। मेरी उससे ठीक-ठीक बातें हुई हैं।

तुम्हारा पत्र चि०···के पिताजी को अभी नहीं भेजूंगा। उनका या चि०···का कोई पत्र आयेगा और उस समय तुम्हारे विचार उन्हें बताना आवश्यक मालूम देगा तो मैं भेज दूंगा। तुम्हारे पास उनकी ओर से या चि०··· का कोई पत्र आये और वे तुम्हारे विचार जानना चाहें तो तुम उन्हें लिख देना कि तुमने अपने विचार मुझे लिख भेजे हैं। अतः वे मुझ से जान लें।

मेरा इस समय शायद कोलम्बो जाना नहीं होगा। दिसम्बर में तुम्हें मेरे पास आना पड़ेगा। इसलिए अभी मद्रास आने की जरूरत नहीं।

श्री मोहगांवकर असिस्टेंट मैनेजर होकर अक्तूबर के अखिर तक कोलम्बो जायंगें। उसकी अच्छी तरक्की हुई है। वह तुम्हें मिलता रहेगा।

श्री महादेवभाई का पत्र था कि तुम्हारी खबरें उन्हें इन दिनों नहीं मिलीं। मैंने लिख दिया है कि मेरे पास पत्र आते रहते हैं।

तुम अपने अभ्यास में अधिक ध्यान लगाने का प्रयत्न तो रखते ही होगे।

मुझे हर इतवार वर्धा पत्र भेज सको तो भेज दिया करो। ज्यादा चिंता व बोझ रखने की आवश्यकता नहीं।

आज बापूजी का जन्म-दिन है। दादा (धर्माधिकारी) का अभी सुंदर प्रवचन शुरू होनेवाला है।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ५५ :

वर्धा, १३-११-३५

चि० कमल,

तुम्हारे पत्र यथासमय मिल गये थे। पढ़कर संतोष हुआ। तुम्हारे

हृदय की शुद्धता एवं वुद्धि की स्थिरता कें वारे में मुझे अधिक विश्वास होता जा रहा है। तुमने उचित ही किया।

तुम्हारे पत्र पू० वापू को पढ़ाकर चि०···के पिताजी को अपने अंतिम निर्णय के साथ भिजवा दिये हैं। आशा है, अव तुम इस विषय को भुला दोगे तथा अभ्यास में पूरी तरह जुट जाओगे।

तुम्हारी मां तथा मदू के पत्र आते रहते हैं। मदू को तो काव्यमय पत्र लिखने कीस्‍ फूर्ति होती रहती है। कल उसका एक लंवा सुंदर पत्र आया है।[1]

चि० राधाकृष्ण के विवाह की तारीख हाल में निश्चित नहीं हुई है। संभव हुआ तो दिसम्बर में, नहीं तो जनवरी में राधाकृष्ण, प्रह्लाद और भेरू तीनों के विवाह होंगे।

परसों अंवुजम्मा यहां आई थीं। उसके द्वारा चि० ओम की कुशलता का संतोषप्रद समाचार मिला। उसकी अंग्रेजी में अच्छी प्रगति हो रही है।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ५६ :

वर्धा, १-१२-३५

चि० कमल,

तुम्हारा तारीख २५-११ का पत्र मिला। तुम्हारी इच्छा तीनों-चारों विवाहों में सम्मिलित होने की है, तथा तुम कांग्रेस और साहित्य-सम्मेलन पर भी हाजिर रहना चाहते हो, सो जाना। दोनों साध लेना तुम्हारी शक्ति के वाहर हैं, ऐसा मैं नहीं कहता। परंतु इस सव में खर्च होनेवाले समय से अपने अभ्यास की हानि-लाभ का अन्दाज तुमको कर लेना होगा।

चि० प्रह्लाद का विवाह तारीख १८ जनवरी को है। राधाकृष्ण का तारीख २८ जनवरी को है। सफिया का विवाह २६ जनवरी को है।

कांग्रेस संभवतः मार्च के अंत में या अप्रैल के दूसरे सप्ताह में होगी। अप्रैल में भी हो सकती है। अभी निश्चित नहीं हुआ है, क्योंकि असेंवली के अधिवेशन मार्च में होते हैं। मार्च में वजट पर वहस चलेगी। फलतः असें-

---

१. देखिये पत्र सं० ११५

बली के मेम्बर कांग्रेस में सम्मिलित नहीं हो सकेंगे। इसलिए बहुत मुमकिन है कि कांग्रेस-अधिवेशन अप्रैल में हो। कांग्रेस के समान सम्मेलन की भी तारीखें अभी अनिश्चित हैं। ईस्टर की छुट्टियों में सम्मेलन के होने की संभावना है।

मेरा प्रोग्राम यद्यपि निश्चित नहीं हुआ है, तो भी तुम मेरे साथ रह सकोगे। इंग्लैंड जाने के बारे में तुमने अपने विचार लिखे, सो जाने।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ५७ :

वर्धा, ७-१२-३५

चि० कमल,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे स्वास्थ्य के समाचार जानकर चिंता होती है। तवीयत सुधारने की दृष्टि से यहां आना आवश्यक प्रतीत होता हो तो तुम यहां आ सकते हो। अन्यथा मेरे खयाल से यहां आने में तुम्हारा समय व्यर्थ ही नष्ट होगा।

तुम फेल होकर विलायत जाओ, यह कल्पना मुझे ठीक नहीं लगती। इसमें प्रतिष्ठा को धक्का ही लगता है। और फिर यदि यहां सफलता नहीं मिल सकती, तो वहां सफलता मिल ही जायगी, इसमें संदेह होता है। परंतु इसका यह अर्थ नहीं कि तुम अपना स्वास्थ्य बिगाड़कर भी अभ्यास करो। तवीयत अच्छी नहीं रहती हो तो यहां आ जाना अच्छा है। मुझे उसमें संतोष है। फेल होने का अर्थ तो यही है कि उस कार्य में अपना मन नहीं लगता। सहज ज्ञानवाला होशियार विद्यार्थी परीक्षाओं में फेल हो, इसका कोई कारण नहीं दीखता। यहां आना होगा तो यहां अभ्यास नहीं हो सकेगा, इस बात का पूरा खयाल रखकर ही आना चाहिए। स्वास्थ्य के लिए परीक्षा का मोह छोड़कर भी आ सकते हो।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ५८ :

कोलम्बो, १०-१२-३५

पू० काकाजी,

आपका पत्र मिला। भारत आने के बारे में अभी मैं कुछ निश्चय नहीं कर पाया हूं।

विलायत जाने के विषय में मेरा ऐसा कहना नहीं है कि मैं नापास होकर ही विलायत जाऊंगा। लेकिन किसी कारणवश सफल न हुआ, तिसपर भी मैं विलायत जाऊं, इसमें मैं किसी प्रकार की हानि नहीं देखता। प्रतिष्ठा में यदि धक्का पहुंचेगा तो वह नापास होने से पहुंचेगा, विलायत जाने से नहीं।

एक कार्य को हाथ में लेकर उसमें सफलता प्राप्त करना सर्वथा उचित ही नहीं, प्रशंसनीय है। लेकिन किसी कारणवश सफलता प्राप्त नहीं करने से यदि प्रतिष्ठा को धक्का लगता है, तो ऐसी प्रतिष्ठा की मैं कीमत नहीं करता।

आखिरकार मुझे यही देखना है कि मेरा ज्यादा-से-ज्यादा लाभ किधर है। यदि ऐसा करने में कुछ लोगों को गलतफहमी हो जाये तो उसे मैं नहीं बचा सकता, न मुझे उसकी परवाह ही करनी चाहिए।

असमर्थता तो इस बात की है कि जून की परीक्षा के रिजल्ट अगस्त २२ को इंग्लैंड में मालूम हो सकते हैं और सितम्बर की परीक्षा की आखिरी तारीख अप्लीकेशन के लिए अगस्त २५ है। यदि मैं पास हो गया तो मुझे सितम्बर की परीक्षा में बैठने की जरूरत नहीं। अन्यथा सितम्बर में परीक्षा देने से (क्योंकि यह परीक्षा तब इंग्लैंड में देनी होगी) अक्तूबर के पहले उसका रिजल्ट आ जाता है और मैं १९३६ के अक्तूबर में ही कालेज में भरती हो सकता हूं। इसमें भी असफल होने पर जैसा कि मैंने पहले लिखा है, 'लिटल गो' नाम की परीक्षा देकर भी भर्ती हो सकता हूं। इस परीक्षा के लिए एक-दो रोज पहले अप्लीकेशन दे देना काफी होता है।

मान लिया कि इतना सब करने पर भी कालेज में भर्ती न हो पाया तो यहां जनवरी १९३६ में न बैठकर विलायत में दूसरी परीक्षा में बैठूंगा। और इसी विषय का अध्ययन करूंगा कि एक होशियार

'कामनसेन्स' वाला लड़का आखिर एक ही परीक्षा में कितनी वार नापास होता है।

सब तरह से असफल होने से जो चार-पांच वर्ष विलायत में खराब करने की इच्छा है, वह चार-पांच महीनों में ही पूरी करके यशस्वी हो घर लौट आऊंगा।

यदि प्रतिष्ठा पर इससे धक्का पहुंचता है तो मेरी प्रतिष्ठा होगी तभी तो पहुंचेगा! अभीतक मैंने किया ही क्या है, जिससे मेरी प्रतिष्ठा हो। आपके पुत्र कहलाने मात्र से यदि कुछ झूठी प्रतिष्ठा जबरदस्ती मेरे पल्ले बंधी होगी तो उसके नष्ट होने में किसी प्रकार की हानि मैं नहीं देखता। कम-से-कम दुनिया तो आपके लाड़ले बेटे की कीमत कर ही लेगी और सिर्फ, आपका पुत्र हूं, इस वजह से 'एक्सप्लाइट' होने से बचेगी।

इतने पर भी आप यही अच्छा समझें कि मुझे यहीं से परीक्षा पास करके जाना चाहिए तो जनवरी तक मैं यहां रहने को तैयार हूं।

मेरे स्वास्थ्य के बारे में चिंता न करें। करने की जरूरत हो तो अभ्यास के विषय में ही है। विशेष कुशल,

कमल के प्रणाम

: ५९ :

वर्धा, १७-१२-३५

चि० कमल,

तुम्हारा पत्र मिला। मैंने अपने विचार अपने गत पत्र में ही स्पष्ट रूप से लिखे हैं। तुम विलायत जाने की फिक्र न करते हुए, इस परीक्षा में पास होने की कोशिश करो। तुमको मैंने अपने विचार तो मद्रास में भी स्पष्ट रूप से बताये हैं। अधिक बातें तो मिलने पर हो सकेंगी।

मेरा यह मानना है कि जिस आदमी का दिल पढ़ाई में नहीं लगता हो, उसको पढ़ाई में न पड़कर अपनी रुचि के किसी अन्य कार्य में पड़ना चाहिए।

बीच में पू० बापू का स्वास्थ्य नरम हो गया। ब्लड-प्रेशर बढ़ गया था। अब तबीयत ठीक है, आराम की बहुत जरूरत है।

आजकल यहां खूब मेहमान आते रहते हैं। सरदार, राजेन्द्रबाबू, कृपालानी व डा० जीवराज मेहता अभी हैं।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ६० :

वर्धा, १-२-३६

चि० कमल,

इन दिनों मेरे नाम तुम्हारा कोई पत्र नहीं आया। मैं भी तुम्हें नहीं लिख सका। मुझे भी यह मास प्रायः चिंता में विताना पड़ा। पहले पू०बापूजी के स्वास्थ्य की चिंता थी, बाद में तीन-चार विवाहों की व्यवस्था वगैरह की रही। आशा है, अब शायद थोड़ा आराम मिल जाय। दस-बारह दिन में पांच विवाह हुए व दो सगाई का निश्चय हुआ। विवाह प्रह्लाद-पन्ना, भैंरू-मणी, सफिया-शादुल्ला, अमरचन्द पुंगलिया-स्नेहप्रभा (विधवा, साथ में दो वर्ष की लड़की), राधाकृष्ण-अनसूया के हुए। यहां खूब मित्र-मंडल जमा हुआ था। काफी भीड़ रही। सगाई चि० कृष्णदास गांधी की मनोज्ञादेवी, (हीरालालजी अग्रवाल की कन्या) से की गई है।

चि० सीता (गंगाविसन की लड़की) की सगाई की बात भी हुई है। सगाई अभी पक्की नहीं हुई है। जल्दी ही होना संभव है। लड़का अमरावती कालेज में फर्स्ट ईयर में पढ़ता है। २१ वर्ष का है।

वर्धा, कलकत्ता, बम्बई में प्रायः तुम्हारी याद की गई। तुम्हारे विवाह संबध के बारे में मेरी राय तो तुम जानते ही हो। विवाह करके ही तुम्हें यहां से यूरोप जाना चाहिए। मेरी इस राय में लगभग अन्य सब ही गुरुजनों की राय भी शामिल है। जैसे पू० बापू, काका सा०, जाजूजी, विनोबा आदि। अब रहा लड़की का प्रश्न। वैसे तो कई लड़कियों के प्रस्ताव हैं, पर इस समय दो प्रस्ताव खास मेरे सामने हैं। उनमें से एक कानपुर के पास फर्रुखाबाद में है। श्री रामकुमारजी ने उसकी बहुत तारीफ की है। दूसरी कलकत्ता में है जिसके बारे में पंडित नेकीरामजी शर्मा, सीतारामजी सेक्सरिया, बसंतलालजी मुरारका तथा अन्य मित्रों ने कहा है। मेरा इस समय इस लड़की की ओर झुकाव है।

यह ताराचन्दजी घनश्यामदास वाले लक्ष्मणप्रसादजी पोद्दार की लड़की सावित्री है। इस बार मैट्रिक की परीक्षा देगी। इस लड़की सहित परिवार के सब सदस्य यूरोप हो आये हैं। लड़की होशियार व बहादुर है। हवाई जहाज चलाना भी सीखने का निश्चय किया है। घोड़े आदि पर बैठती है। अंग्रेजी ढंग से हाल में रहती है। पिछले वर्ष मैंने लड़की को देखा था। लड़की के पिता श्री लक्ष्मणप्रसादजी तो बिलकुल तैयार हैं। आखिरी फैसला तो तुम्हारे लड़की को देख लेने तथा लड़की के तुम्हें देख लेने पर ही हो सकेगा। लड़की की उमर १६ के करीब होगी। तुम्हें इस विषय में जो कुछ कहना हो, वह मुझे लिखना। मैं एक बार कलकत्ता जाकर श्री-लक्ष्मणप्रसादजी व सावित्री से खुलासेवार बात कर लेना चाहता हूं। कई सामाजिक व राजनैतिक कारणों से भी मुझे यह कलकत्ते वाला संबंध ज्यादा अच्छा मालूम देता है। अभी इसकी चर्चा तुम अन्य मित्रों से पत्र द्वारा न करना।

तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक रहता होगा। पढ़ाई ठीक चलती होगी। परीक्षा खतम करके ही आने का विचार है या बीच में ही आना होगा? लिखना।

तुम्हें यह तो मालूम हुआ ही होगा कि चि० नागर (गंगाबिसन का भाई) १७ वर्ष का हो गया था। काशी-का-बास के पास बाघ आया। उसे देखने दूसरे दो लड़कों के साथ वह गया था। बाघ ने उसपर हमला किया। घायल होने पर भी वह बहादुरी के साथ चलता हुआ पैदल घर आया। उसे इलाज के लिए सीकर ले जाया गया था। वहां तीसरे रोज चल बसा। उसने खूब बहादुरी व हिम्मत दिखाई। इसका पूरा वर्णन तुम्हें बाद में भेजूंगा। चि० गुलाबचन्द सीकर गया है। विवाह के समय इस घटना से मन में विचार तो जरूर रहा।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ६१ :

कोलंम्बो, ३-२-३६

पूज्य पिताजी,

आज बहुत दिनों के बाद आपको पत्र लिख रहा हूं। मेरा अभ्यास-क्रम

ठीक चलता है। इकोनामिक्स में मुझे डर लगता है अन्यथा पास होने की आशा रखी जा सकती है। टेनिस खेलना मैंने शुरू कर दिया है। दस-एक रोज से खेलता हूं। मेरे मास्टर कहते हैं कि टेनिस हमेशा खेलता रहूं तो दो-तीन वर्ष में अच्छे खिलाड़ी हो जाओगे।

मैं पंद्रह-बीस रोज में ही, विलायत में लंदन मैट्रिक की जो परीक्षा सितम्बर १९३६ होनेवाली है उसके लिए, फीस भेजने का निश्चय कर चुका हूं। जिससे यहां जून में किसी कारणवश नापास हो गया तो लंदन में फिर परीक्षा में बैठ सकूंगा।

गंभीरता से सोचने तथा मनन करने के बाद मैं इस निश्चय पर पहुंचा हूं कि विलायत मुझे अवश्य जाना है और परिस्थितियों को देखते हुए मुझे देर-से-देर अगस्तमें ही हिंदुस्तान से निकल जाना चाहिए।

विलायत में मैं निम्न प्रकार का अध्ययन पांच वर्ष में पूरा करना चाहता हूं।

१–अर्थशास्त्र (मुख्य विषय) इसके साथ राजनीति, बैंकिंग, या कामर्स आदि अन्य विषय, जो मुझे वहां जाकर उपयोगी जान पड़ें, लूंगा। इसकी बी० ए० (इकोनामिक्स) की डिग्री लूंगा। साथ ही बैरिस्ट्री भी करनी है। यदि संभव हुआ तो यूरोप के भिन्न-भिन्न देशों की दो यूनिवर्सिटियों में मिल कर इस अध्ययन को पूरा करना है। इंग्लैंड और फ्रांस या जर्मनी अथवा और किसी अन्य देश में—जिससे राजकीय तथा स्वतंत्र राष्ट्रों की शिक्षा दोनों का लाभ मिले। यह तो कालेज-शिक्षा हुई। इसके अलावा जितने प्रकार की मुख्य राजनीतिक विचारधाराएं, खासकर पाश्चात्य देशों में, प्रचलित हैं, उनका पारस्परिक तथा तुलनात्मक अध्ययन हिंदुस्तान की परिस्थिति के दृष्टिकोण में लेते हुए तथा ऐतिहासिक दृष्टि से करना है।

२—विमान चलाना तथा किसी भी एक खेल में, जैसे—टेनिस, क्रिकेट, हाकी, फुटबाल आदि, (खासकर टेनिस) में निपुणता प्राप्त करने की चेष्टा करना, तथा शौक के रूप में छुट्टियों आदि में घुड़-सवारी, तैरना, स्केटिंग, फोटोग्राफी, बोटिंग, टाइपराइटिंग-शार्टहैंड आदि का ज्ञान, जो थोड़ा-बहुत है भी, तो उसको ठीक तरह से हस्तगत करना।

३—जितना भी संभव हो, किसी धर्म का ऐतिहासिक, सामाजिक

राजनीतिक तथा व्यावहारिक दृष्टि से विश्लेषण करते हुए, बौद्ध, इस्लाम तथा हिन्दू धर्म का समन्वयात्मक दृष्टि से ज्ञान प्राप्त करना।

४–भ्रमण में यूरोप तो पूरा घूमना ही है, और हो सके तो आते-जाते समय अमेरिका, चीन, जापान का भी भ्रमण करना है।

इतना कोर्स पूरा करने के लिए मैं चार वर्ष पर्याप्त समझता हूं। इसके अलावा एक वर्ष दक्षिण अमेरिका में अमेजन या दक्षिण अफ्रीका में कांगो प्रदेश या आर्क्टिक प्रदेश अथवा अन्य कहीं (हिन्दुस्थान में ही) 'एक्सप्लोरेशन' (खोज) की भी महत्त्वाकांक्षा भरी है। इसकी मैं अपने चरित्र तथा मानसिक प्रगति के लिए जरूरत समझता हूं।

खर्च का मुझे बराबर अंदाज नहीं है, पर मेरी समझ है कि निम्न प्रकार खर्च होगा :

१–कालेज-शिक्षा तथा वैरिस्ट्री, रहना, खाना, पीना इत्यादि १५०००)
२–वैमानिक शिक्षा ५०००)
३–भ्रमण, खोज-जांच, कपड़े-लत्ते, बीमारी व अन्य खर्च ५०००)

मैंने तो अपनी तरफ से हिसाब करते समय ठीक-ठीक गुंजाइश रखी है। परंतु शिक्षा में १५०००) पूरे होंगे या नहीं, इसमें ज़रा शंका है। थोड़े-कम ज्यादा हो सकते हैं, पर सब मिलकर २५०००) से ज्यादा खर्चा नहीं होना चाहिए, ऐसी मेरी समझ है।

विवाह के संबंध में मैं इस निश्चय पर पहुंचा हूं कि अभी कम-से-कम तीन वर्ष तक तो किसी भी हालत में (विलायत जाऊं या न जाऊं) कुछ नहीं करना है। उसके बाद परिस्थिति के अनुकूल जो कुछ भी उचित मालूम दे, उस प्रकार देखा जायेगा।

विलायत जाते समय भी मैं किसी भी प्रकार की प्रतिज्ञा आपके या अन्य किसीके सामने नहीं करूंगा। लेकिन किसी भी समय, किसी भी कारण से अथवा विना कोई कारण बतलाये भी आप या पूज्य बापूजी मुझे हिन्दुस्तान लौट आने का आग्रह करेंगे या मुझे इस प्रकार आने का आदेश देंगे, तो मैं अपना सारा कार्यक्रम छोड़कर एकबार आना तो कर्त्तव्य समझूंगा।

इन विषयों पर आपके विचार मुझे मालूम हैं। उन सबका विचार करते हुए ही मैंने आपको यह पत्र लिखा है। अब मेरा जून के पहले तो वहां

आना संभव है नहीं, तथा जन में आने के बाद समय इतना थोड़ा रहेगा और मुझे विलायत जाने की तैयारी भी करनी पड़ेगी।

४-२-३६

आपका पत्र अभी-अभी मिला। विवाह के विषय में मैं किसी भी तरह का विचार करने के लिए अपनेको अभी तैयार नहीं पाता हूं। आप सब लोगों की सलाह के विरुद्ध यह निश्चय करते हुए मुझे काफी दुःख रहा। मुझे यह भी खयाल है कि ऐसे निश्चय से मैं अपनी जिम्मेदारी वहुत वढ़ा लेता हूं। इतना सब होते हुए मैं दूसरा किसी भी प्रकार का निश्चय करने के लिए अपनेको असमर्थ पाता हूं। फिर भी आप लोगों की आज्ञा होगी तो मैं श्रद्धापूर्वक विवाह के लिए अनुमति दे भी दूंगा। लेकिन ऐसा करने में मैं अपने प्रति तथा जिस लड़की से विवाह करूंगा उसके प्रति पूरा न्याय करने से वंचित रहूंगा। आपका पत्र मिलने के पूर्व जो विचार मैं लिख चुका हूं, वे ज्यों-के-त्यों अभी कायम हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि आप मुझे मेरे जीवन को जोखिम में देखते हुए भी स्वतंत्रता देंगे। यदि किसी भी समय मुझे विवाह करने की इच्छा हुई तो मैं पहले आपको ही इत्तिला दूंगा, इसका आप पूरा भरोसा रखें। मैंने कोई किसी तरह की प्रतिज्ञा तो की नहीं है।

नागर की वीरोचित मृत्यु सुनकर दुःख तो हुआ, लेकिन और किसी तरह मरने से इसी तरह मरना ठीक था। मैं अपने लिए भी ऐसी ही मौत को पसंद करूंगा। भगवान जाने, इतनी हिम्मत और वहादुरी मेरे में है या नहीं।

मैंने शंकर को एक पत्र लिखा था। उसका जवाव आया है। दोनों पत्र आपको भेजता हूं। आप पढ़कर मुझे विना देर किये वापस भिजवा देवें।

मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। टेनिस खेलने से मन प्रफुल्ल रहता है। आप किसी प्रकार की चिंता नहीं करें। पत्र का जवाव शीघ्र दें।

वालक

कमल के प्रणाम

: ६२ :

सावरमती, १२-२-३६

चि० कमल,

चरखा-संघ की बैठक के लिए मैं यहां आया था । तुम्हारा पत्र मुझे यहां आने पर मिला ।

चि० सतीश का पत्र एक तरह से ठीक मालूम हुआ । लड़का होनहार है इसमें तो मुझे कोई संदेह है ही नहीं । यदि तुम्हारा इंग्लैंड जाने का निश्चित हो जाये तो यह मेरी भी राय है कि किसी संस्कारी, चरित्रवान अंग्रेज कुटुम्व में ही तुम रह सको तो विशेष लाभदायक हो सकता है । बहुत-सी वातें स्वाभाविक तरह से सीखने को मिल जायेंगी ।

विवाह-संवंध के वारे में तुम्हें विशेष आग्रह न करने के लिए और एक प्रकार से तुमको स्वतंत्रता देने के लिए भी मैं तैयार हो जाता, परंतु मेरे सामने जिन होनहार लड़कियों के प्रस्ताव हैं, उनको देखते हुए व अन्य गुरुजनों की सलाह को ध्यान में रखते हुए, मैं तुम्हारे हित की दृष्टि से ही इस वात को सामने रख रहा हूं । सतीश भी तो संवंध करके ही यहां से गया है ।

पर मेरी वात रहने भी दो तो भी यदि पू० वापू एवं विनोवा को तुम संतुष्ट कर सकोगे तो फिर मेरे पास कुछ अधिक कहने को नहीं रहेगा ।

सारी वातों का विचार करते हुए मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि छुट्टियों में तुम इधर आ सको तो आना ठीक होगा । कांग्रेस में भी हाजिर रह सकोगे । अवकी वार प्रदर्शनी का भी एक नया रूप देखने को मिलेगा । वातावरण भी नया रहेगा । तुम उस तरफ घूमना चाहते हो तो इधर भी घूम सकते हो । पू० वापू एवं पू० विनोवा से वातें भी हो सकेंगी । इससे भविष्य का प्रोग्राम निश्चित करने में सहायता मिल सकेगी । मौसम गर्मी का होने की वजह से धूप की कुछ तकलीफ तो रहेगी, परंतु इससे तुम डरोगे नहीं, ऐसी आशा है ।

सतीश का पत्र अंवालाल पटेल को पढ़ने के लिए दिया है । काका साहव के साथ वह यहां मिला था । अंवालाल की इच्छा भी विवाह करके ही यूरोप जाने की है, ऐसा कल उसने व काका साहव ने मुझे कहा है ।

कई होनहार नवयुवक, जो विवाह किये विना यूरोप वगैरा गये हैं, उनके जीवन में काफी धक्का पहुंचा है। मुझे तो जितने विचारवान व भविष्य के सोचनेवाले मिले हैं, उनमें से प्रायः सभीकी यही राय सामने आई है कि विवाह करके ही बाहर भेजना ठीक है। तुम और विचार करो। तुम्हारी छुट्टी कब से कबतक है, लिखना।

श्री कु० म्यूरियल लस्टर (वापू की लंदन की मेजवान) तारीख २२-२-३६ को कोलम्बो जा रही हैं। तुम्हारा पता उन्होंने कल लिख लिया है। तुम्हारे बारे में मैंने उनसे बात भी की है। तुम भी हो सके तो जरूर मिल लेना; भली बाई हैं।

जमनालाल का आशीर्वाद

६३ :

वर्धा, २७-२-३६

चि० कमल,

आज के अखवारों से यह जानकर आश्चर्य व दुःख हुआ कि श्री आलूविहारे के जलूस में चार आदमी मारे गए तथा श्री आलूविहारे स्वयं घायल होकर अस्पताल में पड़े हुए हैं। मैं समझता हूं तुम भी उस जलूस या सभा में अवश्य होगे। मैंने आज तुम्हारे नाम एक तार भी भेजा है[1]। उसकी नकल इसके साथ है। तुम्हारा पत्र आने से सब हाल विदित होंगे। अबतक तुम्हारी तरफ से तार भी आ जाना चाहिए था। जो लोग गोली के शिकार हो गये उनके कुटुम्बियों के प्रबंध तो वहां की सरकार या जनता करेगी ही। श्री आलूविहारे की तबीयत के हाल मुझे बराबर लिखते रहना।

---

1. Thank God Aluvihari's merciful escape. Hope condition satisfactory My heart felt sympathy with the bereaved May God protect Cylon from us by cult association.

Jamnalal Bajaj

तुम्हारे मन पर इस घटना का क्या असर पड़ा ? लिखना । पर तुम अपना अभ्यास जारी रखना । उसमें ढील मत आने देना ।

जमनालाल का आशीर्वाद

पुनश्च—आज अखवार में वहां की खवर पढ़कर मन में विचार चल रहा है ।

: ६४ :

८, एंडरसन रोड,
कोलम्वो, १-३-३६

पूज्य पिताजी,

आपका पहला पत्र, तार तथा दूसरा पत्र, सव साथ ही आज मिले । गोलीकांड की घटना के समय मैं उनके स्थान मातले में ही होता, परन्तु उसी रोज मिस म्युरियल लेस्टर आनेवाली थीं, इससे नहीं जा सका । वहां जाता तो श्री आलूविहारे की मोटर में ही होता । और यदि मरता नहीं तो घायल तो जरूर ही हुआ होता ।

आपको मेरा पहला पत्र मिला होगा । मैं इस घटना के वाद आपको तार करनेवाला था, लेकिन यह सोचकर कि आप ज्यादा चिंतित होवेंगे, मैंने तार नहीं किया; लेकिन दूसरे ही रोज अखवारों की कटिंग जितनी मिलीं, आपको भेज दीं । शायद वे आपको समयपर पहुंच गई होंगी । एक-दो रोज में दूसरी कटिंग भी भेजूंगा । अभीतक ९ आदमी मर चुके हैं । एक-दो वहुत वुरी हालत में हैं । उनका वचना कठिन लगता है ।

श्रीयुत आलूविहारे के चुनाव का नतीजा २४ ता० को निकला । वहुत वड़ी संख्या से जीते हैं । चुनाव में उनके विरुद्ध तीन उम्मीदवार खड़े हुए थे । उन लोगों ने काफी पैसा खर्च किया था तथा श्री आलूविहारे पर गंदे व भद्दे आक्रमण किये गए । चुनाव के नतीजे से जव चारों ओर खुशी हो रही थी, विरोधियों ने श्री आलूविहारे पर गोली चलाकर घातक हमला किया । गोली के पांच वार हुए, उनमें तीन तो खाली गये । दो के सिर में चोट आई है । वे अस्पताल में हैं । उनकी तवीयत सुधर रही है । चिंता की वात नहीं

है। इस गोलीबार से, जो कि इनके एक विरोधी के ड्राइवर ने किये थे, पांच आदमी मर गए तथा १५ बुरी तरह घायल हुए हैं। गोलीवार के वाद आमने-सामने जोरों की मार-पीट हो गई थी। पुलिस नहीं आती तो कई और खून होते।

इस घटना से सारे सीलोन में खलवली मच गई है। श्री आलूविहारे के मरने तक की अफवाह उड़ गई थी। उनके पिताजी की भी मृत्यु के समाचार आये थे। उनकी अवस्था अस्सी-पचासी वर्ष की है। परन्तु सब आनंद में हैं। यहां के अखबारों की कटिंग आपको भेजता हूं, जिससे आपको पूरी कल्पना हो जायेगी। ये कटिंग महादेवभाई को भी वता दें।

श्री आलूविहारे यहां वहुत प्रख्यात हैं और जनता उन्हें खूब चाहती है। उनकी तवीयत के हाल पूछने दूर-दूर से दिन-रात मेरे पास भी टेलीफोन आते रहे और इस पत्र को लिखते-लिखते भी मुझे टेलीफोन सुनने व समाचार देने उठना पड़ता है।

इस इलेक्शन में खास वात ध्यान में रखने की यह है कि तीनों प्रतिस्पर्धी श्री आलूविहारे के मित्रों में से ही हैं, तथा तीनों की आपस में अनवन रहती थी, क्योंकि सभी चुनावों में वे आपस में लड़ते रहते थे। इतना होने पर भी अवकी उन्होंने एक होकर आलूविहारे के विरुद्ध गलत वातें फैलाने का प्रयास किया, पर विफल रहे। इससे क्रोध में आकर उनका खून तक करने को उतारू हो गए।

श्री आलूविहारे को मैं यहां (कोलम्बो) ले आया हूं। वह अब चलते-फिरते हैं। उनका स्वास्थ्य ठीक है। घाव भर रहे हैं। ड्रेसिंग करते समय आज मैं उनके पास ही था। चिंता की कोई वात नहीं है।

शायद आपको मालूम नहीं होगा कि उनके पिताजी का चौरासी वरस की उम्रमें पिछले वुधवार को स्वर्गवास हुआ। उन्हें निमोनिया हो गया था। मरने के आधे घंटे पूर्व मैं उनके पास ही था। वे वहुत ही प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। उन्होंने सरकार का भी विरोध किया था। सरकार ने लगान वढ़ा दिया तो उन्होंने वढ़े हुए लगान को देने से इंकार कर दिया और अड़ गये, तथा दूसरे किसीको वसूल भी नहीं करने देंगे, इसकी चुनौती भी दे दी। नतीजा यह हुआ कि उनका इलाका छोड़ वाकी सारे सीलोन में से 'वढ़ा हुआ

लगान' वसूल किया गया। वह वहुत ही उदार वृत्ति के तथा वहादुर मुखिया माने जाते थे।

श्री आलूविहारे को आपका तार तथा पत्र का सारांश वतला दिया है। वे यहां की कानून की परीक्षा के परीक्षक हैं। थोड़े दिनों में ठीक होनेपर और पेपरों की जांच से छुट्टी पा लेने पर आपको लिखेंगे। वे आपके तार और पत्रों के लिए वहुत ही अनुग्रहीत हैं।

उनके पिताजी की मृत्यु के लिए आपको तार करने की अव जरूरत रह नहीं जाती। पत्र में जिक्र करदें तो काफी है।

मिस म्यूरियल लेस्टर से मैंने मुलाकात की। दो-तीन घंटे तक खूव वातें होती रहीं। रविवार को सुवह उनका व्याख्यान था। मैं सुनने गया था और वहीं मैंने उनसे मुलाकात की। वाद में उन्होंने १॥ वजे अपने स्थान पर मुझे वुलाया। करीव पांच वजे तक उन्हींके पास था। ३॥ वजे तक तो उन्हींसे वातें कीं। मेरे मना करने पर भी उन्होंने समय की चिंता नहीं की। वाई वहुत ही भली, प्रेमल तथा नम्र जान पड़ी। मुझसे तो वहुत प्रेम से वातें करती थी। उनका जीवन सादा तथा विचार उन्नत मालूम दिये।

विलायत में उनकी देखरेख में मुझे ज्यादा उत्साह और आत्म-विश्वास रहेगा। उनके साथ जो जापानी लड़की थी उससे भी काफी वातें हुईं। लड़की सिद्धांतवादी तथा कुछ अंशों में रूढ़िवादी, लेकिन सुधारक प्रवृत्ति रखनेवाली जान पड़ी।

उमा का पत्र मिला। उसकी आंख के लिए काफी चिंता-सी होती है। ईश्वर ठीक ही करेगा। विशेष कुशल,

आपका वालक
कमल

: ६५ :

वर्धा, ८-३-३६

चि० कमलनयन,

तुम्हारा पहली तारीख का पत्र तुम्हारी मां के पास रह जाने के कारण मुझे आज ही मिला है।

श्री आलूविहारे के पिता के देहांत की खबर तुम्हारे पत्र से मिली। मुझे आशा थी कि कभी सीलोन जाना हुआ तो वहां उनसे भेंट होगी, परंतु ईश्वर को वह मंजूर नहीं था। उसकी इच्छा पूर्ण हो। मैं श्री आलूविहारे को अलग से नहीं लिख रहा, क्योंकि मैं उन्हें उत्तर देने की तकलीफ नहीं देना चाहता। परंतु तुम मेरे भाव तो जानते ही हो। उनको मेरी हार्दिक सहानुभूति पहुंचाना।

चुनाव और उसके वाद की घटनाओं से तुम्हारी पढ़ाई में हर्ज तो काफी हुआ होगा परंतु आशा है कि अब उसका सिलसिला यथापूर्व फिर जारी हो गया होगा। कल बापूजी दिल्ली गये हैं।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ६६ :

दिल्ली, २४-३-३६

चि० कमलनयन,

तुम्हारा पत्र मिला। सतीश के दोनों पत्र भी पहुंच गये। पढ़ लिये हैं मैं १० तारीख की शाम को इलाहावाद पहुंच गया था। जवाहरलाल १० ता० की सुवह वहां पहुंचे। वहां से वनारस, कलकत्ता और लखनऊ होता हुआ १७ तारीख को यहां पहुंचा।

आजकल यहां वर्किंग कमिटी की वैठक हो रही है। उसमें काफी समय देना पड़ता है। साथ साथ डेयरी-फार्म का काम भी है। उतारा तो 'किंग्सवे' पर नये 'हरिजन इंडस्ट्रियल होम' में ही है। वापू, जवाहरलालजी व अन्य नेता तथा वर्किंग कमिटी के सदस्य भी यहीं ठहरे हैं। मदालसा वा के साथ परसों हरिजन-परिषद के लिए अमृतसर गई थी। आज सवेरे वहां से वह लौटी है। २५ या २६ की शाम को यहां से लखनऊ जाना होगा। वहां पर ग्रामोद्योग प्रदर्शनी के संबंध में काम है।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ६७ :

कोलम्बो, १९-४-३६

पूज्य काकाजी,

कल सुवह आपका तार मिला। पंडित जवाहरलालजी ने समाजवादी लोगों को कार्यकारिणी समिति में लेकर मेरी समझ में अच्छा ही किया है। लेकिन मुझे शंका है कि कहां तक कांग्रेस का वहुमत पंडितजी की नई कार्यकारिणी समिति से संतुष्ट होगा। पंडितजी को राष्ट्र ने सभापति चुना है और पंडितजी ने कार्यकारिणी समिति को चुना है, इस नाते वे संतुष्ट हो सकते हैं। मुझे भी लगता था कि पंडितजी की कार्यसमिति में एक-दो समाजवादी तो होने ही चाहिए।

मेरी समझ से श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय को उन्हें समिति में जरूर लेना था।

उन्होंने सारी परिस्थिति को देखकर ही चुनाव किया है। श्रीयुत अच्युत पटवर्धन उत्साही नवयुवक जरूर हैं, पर शायद इनकी जगह पर श्रीमती चट्टोपाध्याय का चुनाव ज्यादा उपयुक्त होता। इसका यह मतलव नहीं कि अच्युत पटवर्धन कार्यसमिति के सदस्य होने लायक नहीं हैं।

अध्ययन ठीक चलता है। स्वास्थ्य अच्छा है। आपका आगे का प्रोग्राम लिखें।

वालक

कमल के प्रणाम

: ६८ :

वर्धा, ३-५-३६

प्रिय कमल,

तुम्हारा १९-४-३६ का पत्र यथासमय मिल गया था। वर्किंग कमिटी की पहली मीटिंग तारीख ३० को समाप्त हुई। इस वार तुम इस ओर रहते तो भारत की राज़नीति में जो भिन्न-भिन्न तब्दीलियां हुई, वे देख सकते। खैर !

तुम्हारा अभ्यास ठीक चल रहा होगा। मैं इस वार कहीं वाहर नहीं जा रहा हूं। यद्यपि आवश्यकता तो वहुत महसूस हो रही है।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ६९ :

'कांते वर्दे' जहाज पर से
११-७-३६

पू० पिताजी,

वम्वई से जहाज में वैठने तक का हाल तो मां और उमा द्वारा मालूम हुआ ही होगा।

समुद्र में तूफान तो काफी है। हमारी केविन की खिड़की, जो समुद्र से ४०-५० फुट ऊंची है, हमेशा बंद रखनी पड़ती है क्योंकि उसमें भी ऊपर तक पानी उछलकर आ जाता है।

हम २५ लोगों में से मैं और दूसरे दो-तीन ही ऐसे हैं जिन्हें समुद्र का असर विल्कुल नहीं हुआ। वाकी लोग तो दो रोज तक काफी तकलीफ में रहे। आज कुछ अच्छे हैं। दो-चार रोज में सव अच्छे हो जावेंगे, ऐसी आशा है।

जहाज इतना हिलता है कि पत्र लिखने में भी दिक्कत आ रही है।

आपके तथा पू० वापूजी के पत्र वम्वई में मिल गये थे।

आपके पुत्र होने में काफी जिम्मेदारी मालूम होती है। जितनी स्वतंत्रता से मैं विचार करना पसंद करूं, उतना नहीं कर पाता। शायद यह अंकुश मेरे लिए लाभदायक ही सावित हो। परन्तु यह अंकुश भी अंकुश है, इसलिए मुझे पसंद नहीं है। वड़े वाप का वेटा होना कोई सहज खेल नहीं है। ऐसे वेटे को काफी सहना पड़ता है। इतना जरूर है कि मैंने कम-से-कम सहा है और ऐसी मुसीवतें आगे भी कम-से-कम ही सहता रहूंगा।

वड़े वाप का वेटा होते हुए भी मुझमें काफी ऐसी वातें हैं जो सर्वसाधारण वच्चों में पाई जाती हैं। ऐसे ही गुणों पर मेरा आधार है और विश्वास है। वही मेरी पूंजी है, जिससे कि मैं अपना भविष्य वनाने चला हूं।

मदालसा से मिलकर इस समय मुझे वहुत सुख हुआ। उसका विकास

सर्वथा उचित व योग्य ही हो रहा है। जिन गुणों का मैं भूखा हूं और जो जीवन मुझे आदर्श मालूम होते हैं, वे उसके आचरण में स्वाभाविक रूप से आ रहे हैं। उसे पूरी स्वतंत्रता देने में मुझे किसी प्रकार का डर या संकोच नहीं है। यद्यपि मैं परदेश जा रहा हूं, फिर भी मैं जितनी स्वतंत्रता मदालसा के लिए जरूरी समझता हूं, उतनी स्वतंत्रता की मैं अपने लिए कल्पना भी नहीं कर सकता। वह नालवाड़ी में भी रहकर ज्यादा स्वतंत्रता से रह सकती है, मैं लंदन में भी रहकर आपके आदेश में रहूंगा। उसकी स्वतंत्रता में आपने कमी की तो उसकी उन्नति में बाधा आवेगी और जितनी स्वतंत्रता मैं जबरदस्ती आपसे ले लूं, उससे कहीं आपने मुझे ज्यादा दी, तो मेरी अवनति अनिवार्य है। मदालसा की स्वतंत्रवृत्ति है, मेरी स्वच्छंद प्रवृत्ति है। एक को आपको उत्साहित करना चाहिए, तथा दूसरे को निरुत्साहित करना चाहिए। आजतक तो आपका वर्ताव ऐसा ही रहा है। आगे, चूंकि मैं परदेश जा रहा हूं, आपको मेरी तरफ से ज्यादा सचेत होने की आवश्यकता जरूर है। आप और जिन लोगों पर मुझे श्रद्धा है वे मुझे दूर से भी काबू में रख सकते हैं; जबकि अन्य लोग साथ में रहते हुए भी मुझे अपने वश में नहीं रख सकते।

इस चीज को आप समझे नहीं हैं, ऐसा नहीं है। मैंने दूसरों से सुना भी है कि यही बात आपने दूसरे रूप में औरों से मेरे बारे में कही है। परंतु मेरा इस बात को स्पष्ट कर देना ज्यादा जरूरी है। यद्यपि इससे आपको कोई नई बात नहीं मालूम हुई, तब भी मेरा दिल हलका हो जाता है।

उमा के लिए मैंने काफी सोचा है। उसका प्रश्न बड़ा कठिन है। उमा के और मेरे कई गुण-दोषों में समानता है। वह अकेले अपनी जिम्मेदारी पर कहीं ज्यादा रही नहीं इस कारण विचार-शक्ति, हिम्मत, आत्मविश्वास आदि गुणों का विकास करने का उसे उचित अवसर नहीं मिला।

वह लड़की है। यह भी उसकी एक सबसे बड़ी कमी है। यदि वह लड़का होती तो उसका सवाल भी, जितना मेरा सवाल था या है, उससे ज्यादा कठिन नहीं होता।

बालक
कमल के प्रणाम

पुनश्च : १४-७-३६

करीब १५० जापानी, चीनी युवक भी ओलम्पिक के लिए जा रहे हैं। वे सब हमारे साथ हैं। व्यायाम तथा अन्य खेलों का अभ्यास वे करते हैं तब देखने का मजा आता है।

मेरा लंदन तथा बर्लिन का पता आपके पास है ही। मां-दादी जी को प्रणाम कहें। —कमल

: ७० :

'कांते वर्दे' जहाज पर से
१७-७-३६

पू० पिताजी,

आपको मेरा मसावा से भेजा हुआ पत्र मिल गया होगा, या इस पत्र के साथ ही मिलेगा ! वह पत्र साधारण मेल से भेजा था जबकि यह 'एयर' से जायगा। मसावा पहुंचने के पहले की खबरें तो आपको थोड़े में मैंने लिख दी थीं।

मसावा शहर इटालियन रिवियरा में है। वहां हमें तीन-चार घंटे घूमने के लिए मिले। अबीसीनियन लोगोंको भी देखने का मौका मिला। कुछ हिन्दुस्तान के व्यापारी कच्छी तथा बोहरे लोगों से भी मुलाकात हुई। वे इटली और अबीसीनिया की लड़ाई के समय की अमानुषिक बातें बताते थे। आजकल भी, वे लोग कहते थे, कि गावों में काफी अत्याचार होता है। जितनी बातें उन्होंने कहीं वे सत्य हों, तो उनका दसवां हिस्सा भी भारत के अखबारों में प्रकाशित नहीं हुआ है। इटालियन सेना के कई सिपाही भी मसावा से हमारे साथ हो गए हैं। उन लोगों की आदतें आदि जानने का काफी अच्छा मौका मिल गया है। मसावा पहुंचने के एक-दो रोज पहले ही सब लोग अच्छे हो गए थे।

खेर साहब, जो आपके साथ विले पार्ले छावनी में काम करते थे, का लड़का भी हम लोगों के साथ है। उससे मेरी अच्छी दोस्ती हो गई है। काफी अच्छा लड़का है। वह तो सिर्फ तीन-चार महीने घूमने-फिरने के इरादे से यूरोप जा रहा है। बाकी के लोग जो हमारी पार्टी में हैं, उन्हें पाश्चात्य

रीति-रिवाज की गंध तक नहीं है। उन्हे 'टेबिल मैनर्स' आदि बातें हमीं दोनों को वतलानी पड़ती हैं। अंधों में कानों का राज है।

डा० पटवर्धन ने तो काफी मेहनत की, लेकिन समय के तथा धन के अभाव से जैसी टीम चाहते थे, वे चुन नहीं सके। मालूम होता है पांच-सात आदमी, जो सचमुच में अपने-अपने विषयों में बहुत ही कुशल खिलाड़ी हैं, वे जरूर हिन्दुस्थान का नाम करेंगे। वाकी के लोगों में ज्यादातर साधारण ही हैं। शायद हिन्दुस्तान में उनको इतनी तारीफ न मिले जितनी पाश्चात्य देशों में वे कमा सकेंगे। दो-चार मेरे जैसे लोग भी इस टीम में हैं, जो टीम का नम्वर वढ़ाने के काम आवेंगे। साधारण कवायद वगैरा उन्हें सिखा दी गई है। कबड्डी, खोखो आदि खेलों में वे भाग भी ले सकेंगे।

इतना होते हुए भी वे शायद अच्छा ही काम कर बतावेंगे। सबसे बड़ी कमी, जो मुझको मालूम होती है, वह यह है कि इनमें एक भी ऐसा आदमी नहीं है जो पहले कभी यूरोप गया हो और जिसे ज़रा भी पाश्चात्य संस्कृति या सभ्यता से परिचय हो। जोरों से चिल्लाते हैं। मेज पर अस्त-व्यस्त, चाहे जैसे खाते हैं। कई छोटी-छोटी बातें ऐसी हैं जो बिना कारण ही टीम के प्रति खराब असर पैदा कर देती हैं। यें देश के जाटों से ज्यादा सभ्य नहीं मालूम देते। उन्हें कितना भी समझाने की कोशिश करो वैसे-के-वैसे ही रहते हैं। मेरा खयाल था कि टीम में दो-चार आदमी ऐसे जरूर होंगे जिनसे मुझे जहाज में व्यवहार, तौर-तरीके आदि की काफी बातें सीखने को मिलेंगी। परंतु सीखना तो दूर रहा, हम ही दो लोग हैं जो उन्हें कुछ वतला सकते हैं।

जर्मनी में हम लोगों को यदि चाय या रात के भोजन के लिए कहीं जाना पड़ेगा तो परिस्थिति मुझे बहुत ही गंभीर मालूम होती है। वहां के लोगों पर जो असर होगा, उसका अंदाज लगाना कठिन नहीं है। वाकी अखवारवाले तो यूरोप और हिन्दुस्तान दोनों जगह तारीफ करेंगे, क्योंकि यह टीम उन्हें जो खेल ओलम्पिक में वतलावेगी वे उनके लिए नई चीजें होंगी। यदि वे हम लोगों की जंगली आदतों के बारे में टीका-टिप्पणी न करें, तो खेलों के संवंध में तो आशा है, पहली वार अच्छा ही असर होगा।

आज हम स्वेज पहुंच जावेंगे। वहां से संभव हुआ तो काहिरा आना है। हमारा जहाज इटालियन होने के कारण स्वेज़ में उतरने के समय कुछ दिक्कत होना संभव है। बर्लिन में मेरा १० अगस्त तक रहने का विचार है; उसके बाद स्विटजरलैंड या फ्रांस में घूमते हुए, मैं और खेर साहब का लड़का श्रीकृष्ण, अगस्त के तीसरे सप्ताह तक लन्दन पहुंचेंगे। वर्लिन के बाद मुझे आप खत लन्दन ही भेजें। मिस लेस्टर को मैं एक पत्र डाल रहा हूं।

हमारी टीम के बारे में जो अखबारों में छपे उसकी कटिंग जरूर भिजवायें। मेरा स्वास्थ्य बहुत अच्छा है। आप किसी प्रकार चिंता नहीं करें।

आपका बालक
कमल

: ७१ :

वर्लिन, २९-७-३६

पू० काकाजी,

आपको मेरी गये सप्ताह भेजी हुई खबर मिली होगी। पोर्ट सईद के बाद आप लोगों में से किसीका भी खत अभीतक नहीं मिला है।

बर्लिन की आव-हवा बहुत अच्छी मालूम होती है। अभीतक तो सूरज हर रोज निकलता है, ठंड ज्यादा नहीं पड़ती। कभी-कभी दिन में भी थोड़ी गर्मी मालूम होती है। बरसात बीच-बीच में कभी घंटा-आध-घंटा हो जाती है। दृश्य वगैरा यहां बहुत सुंदर है। वर्लिन इतना वड़ा शहर होते हुए भी वाग-बागीचों की यहां कमी नहीं है। इससे शहर में काफी हरियाली बनी रहती है। जर्मन लोग खुली हवा खूब पसंद करते हैं। यहां 'ओपन एयर थियेटर' भी हैं। वह देखने लायक हैं। अप्राकृतिक रूप से उसे बनाया गया है। फिर भी आसपास की प्राकृतिक सुंदरता काफी अच्छी मालम देती है।

नाजी सरकार यहूदी लोगों और अनार्य लोगों से बहुत कड़ा व्यवहार करती है। हिन्दुस्तानियों को भी सामान्यतः नीची निगाह से देखती है। वर्षों से यहां रहनेवाले भारतीय नाजी सरकार के इस व्यवहार से संतुष्ट नहीं हैं। इतना होते हुए भी आजकल तो विना कुछ भेदभाव के वे सबकी खूब खातिरदारी करते हैं। ओलम्पिक में भाग लेनेवाले प्रत्येक

सदस्य को उन्होंने 'आइडेंटीफिकेशन कार्ड' दिये हैं, जिसपर सदस्य की फोटो होती है। उस कार्ड से वे र्बालिन के अन्दर रेलवे, बस, ट्राम आदि में मुफ्त आ-जा सकते हैं। खाने-रहने का भी हम सब लोगों का इंतजाम मुफ्त है। हम लोग जहां भी जाते हैं, जनता खूब कुतूहल, आश्चर्य तथा श्रद्धा से हमारा सम्मान और सत्कार करती है। अभीतक पता नहीं कितने लोगों को अपने हस्ताक्षर हमें देने पड़े होंगे। जहां जाते हैं वहां सैकड़ों की तादाद में लोग चित्र खींचते हैं। यहां की जनता तथा सरकारी नौकर भी बड़ी सभ्यता से पेश आते हैं। हमारे आराम के लिए वे हरेक प्रकार का काम-काज करने को तैयार रहते हैं। रास्ता भूल जाने पर यहां के लोग अपना काम छोड़कर बड़ी खुशी से दो-दो तीन-तीन फरलांग और कभी-कभी तो मील-मील, दो-दो मील तक हमें पहुंचाने स्वयं आते हैं। इतना सब तो वे दुनिया पर अपनी अच्छी छाप डालने के लिए करते हैं। जनता इसलिए उत्सुक रहती है कि उन्हें हम लोगों से बात करने को मिल जाता है।

यहां के लोग काफी संस्कृत, सभ्य तथा आनंदी मालूम देते हैं। हिन्दुस्तानियों की तरह उन्हें जिंदगी भार-स्वरूप नहीं मालूम देती, बल्कि वे अच्छी-से-अच्छी जिंदगी बिताने को तत्पर रहते हैं।

नाजी सरकार ने ओलम्पिक खेलों के लिए अरबों रुपया खर्च किया है। अलग-अलग खेलों के लिए अलग-अलग स्टेडियम बनाये हैं और वह भी एक-से-एक बढ़कर। छोटे-से-छोटा स्टेडियम भी, जो शायद टेनिस, वालीबाल, बास्केटबाल आदि खेलों का होगा, उसमें भी २० से ४० हजार आदमियों के बैठने की व्यवस्था है। ऐसे सब स्टेडियम कुल मिलाकर दस-बारह तो होंगे। बड़ा-से-बड़ा स्टेडियम, दस लाख आदमी बैठ सकें, ऐसा बनाया है। २०-२५ हजार लोग खड़े भी रह सकते हैं। वह स्टेडियम तो एक अद्‌भुत चीज मालूम होती है।

इतना सब पैसा बर्बाद करने का मुख्य उद्देश्य तो मुझे यही लगा कि सारी दुनिया पर यहां की सरकार अपना प्रभाव डालना चाहती है। इसके साथ-ही-साथ खेलों तथा व्यायाम पर वह खूब जोर देना चाहती है। जर्मनी में सैनिक शिक्षा सबके लिए अनिवार्य है। यहां की सैनिक शिक्षा तथा उसके नियम देखकर मुझे घृणा-सी हो गई है। इसमें शक नहीं कि यहां के लोगों

ने खेलों में, भिन्न-भिन्न व्यायाम करने की पद्धति में तथा सैनिक शिक्षा में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त की है । लेकिन शिक्षा यहां की इतनी कड़ी होती है कि मनुष्य मनुष्य न रहकर मशीन हो जाता है । हिटलर और मुसोलिनी, दोनों जनता को ऐसी ही जीती-जागती मशीन बनाने में लगे हैं। ये लोग अपने देश की आत्मा पर ही आघात कर रहे हैं। इन देशों का भविष्य मुझे उज्ज्वल नहीं मालूम देता । यूरोपियन सैनिक-शिक्षा से जिस प्रकार की मनोवृत्ति बन जाती है, उससे विश्व-युद्ध अनिवार्य-सा मालूम देता है। एक बड़ी मशीन में जिस प्रकार उसके तमाम पुर्जों में एकता रहती है, उसी प्रकार यूरोपियन राष्ट्रों में, खासकर जहां सैनिक शिक्षा अनिवार्य है, जन-समूह में एक प्रकार की एकता तो जरूर है लेकिन वे मशीन के पुर्जों के माफिक जुड़े हुए मालूम देते हैं। आत्मिक एकता की बनिस्वत शारीरिक एकता पर ही ज्यादा महत्व दिया जाता है।

यहां पर देखना तथा घूमना वगैरा तो होता ही है, लेकिन अन्य राष्ट्रों के जो खिलाड़ी आये हुए हैं, उनसे चर्चा करने में मैं काफी समय देता हूं और इससे मुझे बहुत जानकारी मिलती है। दुनिया के लगभग सभी देशों के नव युवक यहां जमा हुए हैं। उनके रीति-रिवाज, आचार-विचार सहज में ही जानने को मिलते हैं। नवयुवक सभी देशों के करीब-करीब उदार दिल के व विस्तृत विचारवाले मालूम देते हैं। कई देशों की ऐसी टीमें भी आई हैं जो अपने काम में कुशल हैं । मुझे यहां आने से खेलों की बनिस्वत अन्य जानकारी ही ज्यादा लाभदायक मालूम देती है । इस मौके का मैं पूरे-से-पूरा लाभ उठाने की कोशिश करता हूं ।

यहां पर कैम्प का जीवन बिताना पड़ता है तथा यूरोपियन सैनिक कैम्प तथा उसका जीवन किस प्रकार होता है, इसका भी अच्छा अनुभव मिल रहा है ।

इस पत्र पर लगी टिकटें ओलम्पिक के समय खास जारी की गई टिकटें हैं। उसका पूरा सेट धीरे-धीरे इकट्ठा करके रामकृष्ण को भेजूंगा। ये टिकटें थोड़े दिन तक ही चलेंगी । काम में लाई हुई ये टिकटें भी आज कम दामों पर बिकती हैं।इसका पूरा सेट संभालकर रखने को उसे कह दीजियेगा। आगे जाकर इस सेट की कीमत काफी बढ़ जायगी, ऐसा लगता है ।

साथ के पत्र पू० वापूजी तथा महादेवभाई को दे देवें । मेरी किसी प्रकार चिंता नहीं करें। लन्दन पहुंचने तक आपको एयर मेल से हर सप्ताह पत्र भेजता रहूंगा । मैं डायरी नहीं लिखता । डायरी की बातें आपको पत्रों में ही लिख दिया करूंगा । इससे इन पत्रों को आप अपने पास अलग फाइल में या सावित्री रखना चाहे तो उसे रखने दीजियेगा । हिन्दुस्तान के समाचार नहीं मिल रहे हैं । आपके पत्रों की राह आतुरता से देख रहा हूं विशेष कुशल !

आपके वालक
कमल के प्रणाम

: ७२ :

चि० कमल, वर्धा, १३-८-३६

तुम्हारे पत्र वरावर मिलते हैं ।

मैं ता० १७ को यहां से वम्वई के लिए रवाना होऊंगा । वर्किंग कमेटी, ए०आई०सी०सी०, पार्लियामेंटरी वोर्ड की सभाएं हैं । पू० राजाजी फिर हमेशा के लिए कांग्रेस से रिटायर हो गए । त्रिचनापल्ली के डा० राजन उनके वड़े साथी हैं । म्युनिसिपल इलेक्शन में डा० राजन चेअरमैन की जगह चुनाव में हार गये, इससे राजाजी को वहुत दुःख हुआ । इस हार का कारण वे वताते हैं कि कांग्रेस के भीतर अनुशासन की कमी है । यह स्टेटमेंट पढ़कर राजाजी के सभी मित्रों को वहुत दुःख हुआ है ।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ७३ :

वर्धा, २४-९-३६

प्रिय कमल,

तुम्हारा ११-९ का पत्र वम्वई से तुम्हारी मां के पास से मेरे पास आया । तुम कोलम्वो की परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हुए, वाद में लन्दन में परीक्षा में बैठे, उसमें भी आशा कम है, यह मालूम हुआ । मुझे खुद को तो परीक्षा का मोह नहीं है और तुम सफल नहीं हुए, उसका विशेष विचार भी नहीं है । परन्तु मैंने तुम्हें वहुत समझाकर कहा है कि तुम इस प्रकार की परीक्षा की

पढ़ाई का मोह छोड़ सको तो तुम्हारे लिए ज्यादा अच्छा है। तुम एक बार दो बार, तीन बार फेल होते रहो, यह मुझे तुम्हारे भविष्य की दृष्टि से कुछ ठीक मालूम नहीं देता। तुममें बुद्धि व विचार-शक्ति तो काफी है, परंतु परीक्षा के लिए जिस प्रकार के परिश्रम व वृत्ति की आवश्यकता है, वह न तुममें है और न मुझमें। इसलिए मेरी तो वही पहलेवाली ही राय है कि तुम सब तरह का ज्ञान थोड़े समय में प्राप्त कर यहां आने का विचार रखोगे तो तुम्हारे लिए ज्यादा लाभदायी सिद्ध होगा। इतने पर तुम्हारी इच्छा।

चि० रामेश्वर के बारे में तुमने जो राय लिखी है, वह प्रायः ठीक मालूम देती है। उसका भी एक छोटा-सा सुंदर पत्र आया है। तुम्हारे लिए ठीक राय लिखी है।

चि० उमा को यूरोप भेजने के बारे में तुम्हारे विचार जाने। मुझे विशेष उत्साह नहीं है। तुम्हारे आने पर तुमने क्या लाभ प्राप्त किया, वह देखने के बाद उसका आग्रह होगा तो भेजना ही होगा; अन्यथा विवाह के बाद ही जाना ठीक रहेगा।

चि० सावित्री के साथ तुम्हारी सगाई हो गई, उससे तुम्हें संतोष रहता है, जानकर सुख होता है। चि० सावित्री के लिए मेरे मन में भी खूब प्रेम व आशा बढ़ रही है। परमात्मा ने किया तो वह भी एक होनहार बालिका निकलेगी। दिसम्बर में तो वह मेरे पास रहेगी ही। बन सका तो उसे नवम्बर में ही बुला लेने का विचार है।

तुम्हारा यह पत्र भी मैंने सावित्री के पास खासगी निशान कर भेज दिया है।

बापू के संबंध की श्री वकील की भविष्यवाणी (१८ अक्तूबर को दिन के १० बजे हार्टफेल होने की) गलत ठहरी, इसका तो समाधान है। परंतु उनकी भविष्यवाणी से तुम्हारी मां बहुत चिंतित रही। यहां भी थोड़ी चिंता रही और कुछ व्यवस्था रखनी पड़ी। बिना कारण तार का खर्च भी हुआ। मुझे तो विश्वास नहीं था। भविष्य में तुम भी खयाल रखना।

ता० २० को आशादेवी के बालक का नाम-संस्कार था। करीब १२५ लोगों को निमंत्रित किया था। श्री राजेन्द्रबाबू व खान साहब भी थे।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ७४ :

जुहू (वंबई),
१२-१०-३६

चि० कमल,

तुम्हारा तारीख २९-११ का पत्र मिला।

डॉ० स्टेनली जोन्स मिले, सो ठीक।

कु० मेरी जिलेट के वारे में मालूम हुआ।

चि० मदन पित्ती भारत कव आरहा है? उसे मिलो तो कहना इधर उसका पत्र नहीं मिला।

श्री परांजपे का लड़का क्या पढ़ता है? उसका नाम क्या है?

कुमारी अगाथा हेरिसन ने तुम्हें व चि० इन्दिरा को नाश्ते के लिए बुलाया था, सो ठीक। भारत में आने पर उनसे मिलना होगा ही।

चि० इंदिरा का स्वास्थ्य क्यों ठीक नहीं रहता? उसमें जो फर्क हुआ है, वह किस प्रकार का दिखाई देता है? क्या उससे कुछ भारत की राजनीतिक सेवा की आशा रखी जा सकती है? तुम मिलो तो मेरा आशीर्वाद कहना और स्वास्थ्य ठीक रखने को कहना।

श्रीपाठक साहव का पत्र आया है। तुम उनसे मिले, ऐसा उन्होंने लिखा है। तुमने तो उनकी मुलाकात के वारे में कुछ भी नहीं लिखा। मेरी तो यह इच्छा है कि तुम उनसे अक्सर मिलते रहो। मेरे वह मित्र भी हैं। मैं उन्हें वहुत ही आदर की दृष्टि से देखता हूं। मुझे उनकी संगत से ठीक लाभ पहुंचा है। तुम उनके कुटुम्व से संपर्क वढ़ा सकोगे तो मुझे सुख मिलेगा। श्रीपाठक को मैंने पत्र लिखा है। मैं तो उन्हें भारत वुलाना चाहता हूं। तुम भी मेरी ओर से कहना।

सर शादीलालजी से भी एकाध वार तो जरूर मिल लेना। उन्होंने मिलने को कहा है।

तुम जनवरी में फिर लंदन मैट्रिक की परीक्षा दोगे, सो ठीक है। अंग्रेजी भाषा पर अपना पूरा अधिकार करने के लिए तुम्हें पूरी कोशिश करनी चाहिए। इसमेंश्री पाठक की राय भी लेना। मेरी राय से तो विद्वान

अंग्रेज कुटुम्ब में रहने से ही अंग्रेजी सुधर सकेगी । इसका तो तुम्हें पूरा खयाल रहेगा ही।

चि० सावित्री के पत्र मेरे पास भी बराबर आते रहते हैं। उसका वजन चार रत्तल बढ़ा है ।

तुम्हारी माता का स्वास्थ्य बहुत ठीक हो रहा है । उसे पूरा संतोष है । उसका स्वास्थ्य सुधर जायेगा, तो मानसिक स्थिति भी सुधर जायेगी । हिम्मत व विश्वास बढ़ जाने से उसे भी सुख व समाधान मिलेगा और घर का वातावरण और भी सुंदर व सुखकर हो सकेगा। मुझे भी अधिक शांति मिल सकेगी ।

श्री नगीनदास मेहता आज मुझसे मिलने आया था। जुहू पर उसने बर्लिन के सब फोटो दिखलाये । तुम्हारी मां व उमा भी थी । तुमने संगीत में भाग लिया व कवड्डी में भी, यह सब बताया ।

यहां जुहू में जमीन ली है। वहां एक छोटा-सा बंगला बनाने का विचार है। तुम्हारे ध्यान में कोई प्लान हो तो लिखना । उसका खयाल कर लिया जायेगा ।

जमनालाल के आशीर्वाद

: ७५ :

डब्लिन, ३१-१०-३६

पू० काकाजी,

जुहू से लिखा आपका पत्र ता० १२-१० का मिला ।

मां का स्वास्थ्य सुधर रहा है; जानकर बहुत सुख होता है। उसका स्वास्थ्य अच्छा रहे तो उसकी चिंता भी मिटेगी । मानसिक शांति मिलने से उसे सभी प्रकार लाभ पहुंचेगा। आपको तो आराम मिलेगा ही, लेकिन अपने घर का आधे से ज्यादा फिजूल सोच कम हो जावेगा। अब एक बार वह बिलकुल स्वस्थ हो जाय तो किसी प्रकार का भय फिर नहीं रह जाता ।

उमा की सगाई तो कर देने में हर्ज नहीं है । मुझे कभी-कभी लगता था कि अपने उदार स्वभाव तथा बड़ों के प्रति आदर होने की वजह से

वह कभी-कभी संकोच कर जाती है। कुछ आदर्शों को सामने रखकर विवाह करने की अपेक्षा अपनी रुचि व इच्छा के अनुसार उसे विवाह करने की पसंदगी होनी चाहिए । आपसे वह शायद उतनी खुलासेवार बात अपनी रुचि के हिसाब से नहीं कर पाती, जितनी वह मेरे साथ कर लेती है। आज से चार-पांच वर्ष पहले जब आप मुझसे ऐसी बातें करते थे, तब, यद्यपि मैं आपसे काफी साफतौर से बातें करता था, फिर भी आपके आदर्शों का प्रभाव मुझ पर पड़ता था और मेरे विचारों पर उसका गहरा असर होता था । कभी-कभी तो ऐसा भी मेरे मन में लगता था कि आप तो उदार हैं और अपनी उदारता और आदर्शों के बीच हम बच्चों को, पता नहीं, कहां फंसा देंगे ।

मैं पूरी तरह समझता था कि आप सब तरफ से सोचेंगे; पर जैसा अपने घर का वातावरण है, उसके प्रति श्रद्धा और प्रेम रखते हुए अपनी रुचि के अनुसार, जरूरत हुई तो, भिन्न मार्ग लेने के लिए काफी आत्म-विश्वास, हिम्मत, होशियारी तथा नम्रता की जरूरत होती है ।

उदाहरण के लिए, आश्रम की लड़कियों के प्रति मुझे हमेशा श्रद्धा रही है। वे आदर्श गृहणियां होंगी इसमें भी मुझे शंका नहीं थी, फिर भी मैं किसी आश्रम की लड़की से विवाह करने को तैयार नहीं होता। मुझे आदर्श लड़की नहीं चाहिए थी। मैं चाहता था मुझे मेरे ही माफिक कोई शैतान लड़की मिले । चरखा-तकली के प्रति श्रद्धा हमेशा रही। इसी प्रकार प्रार्थना में भी मेरा पूरा विश्वास है । पर जबतक चरखा, तकली और प्रार्थना मेरे जीवन के अंग नहीं बन जाते, मैं ऐसी लड़की से विवाह कर पूरा सुख प्राप्त नहीं कर सकता था जो कि चरखा, तकली और प्रार्थना आदि इसी प्रकार के आदर्शों के प्रति समर्पित हो । मैं यह जरूर चाहता था कि लड़की ऐसी जरूर हो जो आदर्शों को माने, लेकिन स्वयं आदर्शमूर्ति न हो ।

अपनी इस रुचि को आप लोगों के सामने रखना एक जटिल समस्या थी। मेरे मन में छिपाने का कुछ भी भाव नहीं है, पर आप लोगों के सामने अपने विचारों को किस प्रकार रखना, यह मुझे पहले-पहल तो नहीं समझ पड़ता था। आगे जाकर मैं किस प्रकार अपनाचाहा आप लोगों को

समझा सका और अभी तक करता आया, यह अब भी मुझे आश्चर्य-सा मालूम होता है । ऐसी परिस्थिति में उमा के मन में उसके न चाहते हुए भी किसी प्रकार का संकोच रह जाता हो तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा ।

जब सीलोन में था तब यह नहीं सोचा था कि विलायत जाने के पूर्व मैं अपनी सगाई की अनुमति दे दूंगा। चर्चा होने पर अपने बारे में न सोच कर बहनों के बारे में ही सोचता था। पर जब समय आया तो मैंने संबंध तो अपना कर लिया और बहनों के बारे में सोचता ही रहा। उनसे कह भी नहीं सका कि उनके लिए मैं क्या सोचता हूं। सबसे ज्यादा मैं उमा के संबंध के लिए ही सोच रहा हूं। अपने संबंध में मुझे कभी ज्यादा सोचना नहीं पड़ता ।

लड़कियां दिल की ज्यादा साफ होने के कारण उन्हें ज्यादा आकर्षण होता है। उमा को जबतक किसी लड़के के लिए आकर्षण नहीं हो, मेरी राय में, तबतक उसका संबंध नहीं करना चाहिए।

उमा का संबंध करने में यदि आप मेरा वहां किसी प्रकार उपयोग समझें तो लिखिये। मैं १९३७ की गर्मी तक आने की कोशिश करूंगा और मुझे आने में उत्साह भी रहेगा। अपना विवाह करने का मुझे स्वयं अभी उत्साह नहीं है। सावित्री को यदि विवाह करने से कुछ लाभ मिल सकता हो तो मैं भले ही विवाह जल्दी भी करलूं, पर उससे मेरा सारा प्रोग्राम अस्त-व्यस्त हो जायेगा ।

जुहु में आप जगह ले रहे हैं, सो ठीक। मेरे ध्यान में कोई खास प्लाट अभी नहीं आ रहा है। मैं चाहूंगा कि, जहां तक हो सके, घर के चारों तरफ काफी खुली जमीन रहनी चाहिए ।

चार-पांच गाय, दो-चार घोड़े, एक-दो मोटर, एक-दो विमान के रहने की जगह तो वहां होनी ही चाहिए। यदि ये चीजें नहीं भी हुईं तो गांधी सेवा-संघ की मीटिंग के लिए ही वह जगह काम आ सकेगी । मेरे कहने का मतलब इतना ही है कि मैदान आपको काफी लेना चाहिए। खाड़ी के पास की जमीन लेना ठीक नहीं होगा। वहां का पानी बड़ा सड़ता है। आप स्वयं भी इन सब बातों को सब तरह से सोच तो लेंगे ही ।

दो नई भाषाएं सीखनी हैं, इससे काम काफी करना पड़ता है। आपको

अब १५–२० रोज के अंतर से पत्र दिया करूंगा। पत्र न आवें तो चिंता न करें। यहां के प्रोप्राइटर की स्त्री अच्छी बाई हैं, और मेरे लिए खास खाना बनवाती हैं। गरम कपड़ों का पूरा इंतजाम है। बरफ पड़ेगी तो कमरे में आग जलाने का बंदोबस्त है।

विशेष कुशल।

कमल के प्रणाम

: ७६ :

बंबई, ९-१२-३६

चि० कमल,

तुम्हारे पत्र बराबर मिलते रहते हैं। वर्किंग कमिटी की बैठक के लिए मैं कल यहां आया। आज १ बजे से भलाभाई के मकान पर बैठक होगी।

चि० रामकृष्ण परसों से मारवाड़ी बोर्डिंग, वर्धा में रहने लगा है। श्री आर्यनायकम् और श्रीमन् की उसपर देखरेख रहेगी। मारवाड़ी विद्यालय का नाम बदल कर अब 'नवभारत विद्यालय' रखा गया है। इसी प्रकार 'हिन्दू महिला मंडल' का नाम 'महिला सेवा मंडल' हो गया है।

अपने खर्चे का बजट, भविष्य, डब्लिन मैट्रिक की परीक्षा के बाद का प्रोग्राम आदि लिख भेजना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ७७ :

वर्धा, ८–१–३७

चि० कमल,

इन दिनों तुम्हारा कोई पत्र नहीं मिला। मैं कांग्रेस के बाद यहां आया। श्री जानकीदेवी, चि० उमा तथा चि० कमला तो बंबई गये थे। मैं भी आज धूलिया होकर बंबई जाने के लिए रवाना हो रहा हूं।

यहां डा० पोलक आये थे। कु० मिस हेरिसन भी आई थीं। वह तुम्हारे बारे में पूछ रही थीं।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्[1]

: ७८ :

वर्धा, २०-२-३७

प्रिय कमल,

तुम्हारे ता० ६ व ९-२ के पत्र मिले थे।

परीक्षा आदि के बारे में तो मेरे विचार वही हैं, जो तुम्हें कई बार साफतौर से कहे हैं। मेरी इच्छा तो यही है कि तुम कुछ और समय तक वहां का सब प्रकार का साधारण अनुभव लेकर भारत वापस आओ। श्रीलक्ष्मणप्रसादजी की इच्छा जल्दी विवाह करने की है। वह भी पूरी हो जायेगी। उसके बाद ही चि० सावित्री का यहां रहना संभव दिखता है। पहले भेजने की उनकी इच्छा कम है। चि० सावित्री का सब दृष्टियों से यहां रहना बहुत ही जरूरी है। यहां आने पर तुम्हें व्यापार का काम हाथ में ले लेना चाहिए। साथ में थोड़ा अभ्यास भी जारी रखा जा सकता है। एक-दो वर्ष बाद तुम्हारी इच्छा हो तो तुम कुछ समय के लिए फिर

---

१. उपरोक्त पत्र के उत्तर में कमलनयन ने लिखा—

"शायद आदत से लाचार हो सभी चिट्ठियों पर जिस प्रकार सही कर दिया करते हैं, उसी प्रकार आपने मेरी चिट्ठी पर भी सही कर दी है। आपके 'वन्देमातरम्' स्वीकारने के लिए मैं तैयार नहीं हूं। आपके प्रेम और आशीर्वाद के लिए जो मेरा हक है, वह कभी नहीं छोड़ने वाला हूं। आप अपने लड़के को भूल सकते हैं और उसे 'वंदेमातरम्' भी लिख सकते हैं, लेकिन शायद यह मेरा दुर्भाग्य ही हो कि मैं अपने पिताजी को नहीं भूल सकता। टाइप किये हुए पत्र भेजने पर ऐसी गलतियां हों तो कोई ताज्जुब नहीं। आपका पत्र वापस लौटाने की धृष्टता के लिए क्षमा करें। अपने सेक्रेटरी साहब से कहें कि 'कुमारी' और 'मिस' साथ-साथ नहीं लिखा जाता।"

जा सकते हो। अन्यथा चार-पांच वर्ष बिना किसी खास परिणाम के व्यर्थ जाते नजर आते हैं। मुझे तो यह भी डर है कि शायद फिर तुम व्यापार के लायक न रहो, क्योंकि फिर उसकी आदत छूट जावेगी। यदि तुम शांत-चित्त से इस पर विचार करोगे तो मेरी सलाह में तुम्हें जरूर वजन दिखाई देगा। मुझे तो लगता है कि तुम ऐसा नहीं करोगे, तो बड़ी भूल होगी। मेरी यह इच्छा होते हुए भी आखिर तुम जो उचित समझोगे या परमात्मा तुम्हें जिस प्रकार की बुद्धि प्रदान करेगा, उसमें संतोष मान लूंगा।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ७९ :

वर्धा, ९-५-३७

चि० कमल,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं कल कलकत्ते जा रहा हूं। वहां जाने से श्री लक्ष्मणप्रसाद जी के साथ विवाह-स्थान आदि के बारे में बातें भी हो सकेंगी।

रजिस्टर्ड विवाह करने की अपनी कल्पना तुमने लिखी, इस विषय में भी कलकत्ते विचार हो सकेगा। मुझे खास कोई आपत्ति नहीं है अगर चि० सावित्री व लक्ष्मणप्रसादजी पसंद करते हों तो। श्री डंकन ने १७५ रुपये तुम्हें दिये हैं, सो ठीक। उनको यहां से भी पत्र लिख दिया जायेगा।

मैं यहां ता० १६ की शाम को वापस आ जाऊंगा। मैंने दो अखबारों पर मानहानि का दावा कर रखा है। उसमें मेरी गवाही, जिरह चल रही है। कोर्ट में ठीक जमघट जमता है।

तुम आओगे तब तुमको भी सुनने को मिलेगा। ता० १४ जून से १९ जून तक फिर मुझसे जिरह होनेवाली है। शायद ज्यादा दिन भी चले।

विवाह के बारे में तुमने अपने विचार तो लिखे ही हैं। चि० सावित्री व लक्ष्मणप्रसादजी को जिसमें संतोष होगा, वही निश्चित कर दिया जायेगा।

यहां अपने पहुंचने की निश्चित तारीख व स्टीमर के नाम की सूचना देना ।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ८० :

जुहू, ३-६-३७

प्रिय कमल,

तुम्हारा २६ तारीख का पत्र मिला। तुम 'स्पेशल एंट्रेंस' परीक्षा में पास हो गये यह अच्छा हुआ। विशेष खुशी नहीं मालूम होती; क्योंकि तुम्हारी मां कहती है कि यदि तुम परीक्षा में फेल हो गये होते तो तुम्हारे हिन्दुस्तान में रहने में ज्यादा सुविधा होती।

तुमने जो 'रजिस्टर्ड मेरिज' के बारे में लिखा था सो उसके लिए श्री-लक्ष्मणप्रसादजी तथा चि० सावित्री और उनकी माता कोई भी तैयार नहीं है। यदि उनमें से कोई तैयार होता तो हम कह सकते थे, परंतु जब कोई भी तैयार नहीं है तो हम उन्हें किस तरह से आग्रह कर सकते हैं।

विवाह कलकत्ते ही होगा। विवाह में आदमियों को ले जाने के बारे में तीन विचार हैं। (१) केवल ५ आदमियों को, (२) १० या १२ आदमियों को, (३) २५ आदमियों को। आदर्श तो केवल पहला ही हो सकता है। विवाह में धार्मिक रीति के अलावा और कोई आडम्बर नहीं होगा। कलकत्ते के इष्ट-मित्र वहीं शामिल हो सकते हैं। वैसे यदि निमंत्रण पत्रिका बाहर भेजें तो सैकड़ों आदमी आ सकते हैं।

पूज्य बापूजी को विवाह में सम्मिलित होने का आग्रह करने का उत्साह मुझे नहीं होता है। वैसे भी वह कलकत्ता जाना पसंद नहीं करते हैं।

बरात में तुम कम आदमी ले जाना पसंद करो तो ठीक ही है; अन्यथा जो तुम्हारी राय हो, जहाज पर से ही तार कर देना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ८१ :

वर्धा, ५-९-३७

चि० कमल,

मैं कल दोपहर को बंबई से यहां आया था। यहां मगनवाड़ी में श्री छोटेलालजी जैन ने, जो मियादी बुखार से बीमार थे, ता० १ को कुएं में गिर कर आत्महत्या कर ली है। एक बहुत ही सच्चे व त्यागी कार्यकर्ता की इस प्रकार की मृत्यु से दुख होना स्वाभाविक है। खासकर इसी कारण मैं एक रोज़ बंबई से जल्दी आ गया था।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ८२ :

वर्धा, २-१२-३७

प्रिय कमल,

मेरा बंबई का पत्र मिल गया होगा। चि० नर्मदा का विवाह वर्धा में भली प्रकार से हो गया। बरात में दस आदमी घर के व तीन नौकर आये थे। नर्मदा २–३ महीने कलकत्ते रहेगी। चि० सावित्री व विमला का भी कलकत्ते से राजी-खुशी पहुंचने का तार कल आ गया था।

पू० बापूजी का स्वास्थ्य इधर कुछ दिनों से ज्यादा नरम रहता है। ब्लड-प्रैशर सुबह २००–११४ हो जाता है। दोपहर को कभी-कभी १५०–९० भी हो जाता है। इतना हमेशा रहे तो बहुत ठीक हो। डाक्टर लोगों को भी थोड़ी चिंता है। उनको पूरा आराम मिले, इसका ख्याल तो रखा जाता है। मैं प्रायः सेगांव में ही सोता हूं। मुलाकातें वगैरह बंद हैं। यहां आराम न हुआ तो फिर उन्हें वहीं समुद्र तट पर ले जाना पड़ेगा। बापू तो जाना नहीं चाहते हैं। तुम चिंता न करना। ईश्वर को उनसे सेवा लेनी होगी तो कोई अनहोनी बात नहीं होगी।

अपने वहां के खर्च का तुम्हें ठीक ध्यान रखना चाहिए। बालकपन के कारण फिजूलखर्च नहीं होना चाहिए। हिसाब तुम्हें अवश्य रखना चाहिए। अगर यह मामूली नियम, जो बहुत ही आवश्यक है, तुम न पाल सकों तो अच्छी बात नहीं है। आशा है, इस बारे में अधिक लिखने की

जरूरत नहीं पड़ेगी । लिखने में तकलीफ व संकोच भी होता है, परंतु क्या किया जाय ।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ८३ :

जुहु, १४-१२-३७

चि० कमल,

तुम्हारा पत्र मिला । काफी दिलचस्प था । साहस को तो मैं भी अच्छी चीज मानता हूं । पर विना काम दुःसाहस करना बुरा है । तुम में आलस्य है, वह बुरा है । इसका तुमको भी ख्याल है, तुम उसको हटाने का प्रयत्न करते हो, यह अच्छा है । पर मुझे अब इसके लिए तुम्हें कुछ कहने की इच्छा नहीं होती । मैंने इसका उपाय सोच लिया है और इसका प्रयत्न भी शुरू कर दिया है । मुझे अपना आलस्य दूर करना चाहिए, यही इसका उपाय है ।

पू० वापूजी का स्वास्थ्य इन दिनों काफी गिर गया था । ब्लड प्रैशर वहुत वढ़ा हुआ रहने लगा था । डाक्टरों ने उन्हें समुद्र किनारे रहने की सलाह दी और सात दिन हुए पू० वापूजी को लेकर हम सव लोग यहां जुहू में आये हुए हैं । आते ही पूज्य वापूजी अपनी झोंपड़ी में ठहरे थे । पर बाद में नर्सिंग के सुभीते के विचार से डाक्टरों ने उन्हें विड़ला काटेज में रखा है । डा० जीवराज मेहता, गिल्डर व दिनशा मेहता उनकी संभाल लेते हैं । पू० वापूजी को यहां की हवा से काफी लाभ पहुंच रहा है । इस महीने के आखीर तक तो अभी यहीं रहने का विचार है । वे तो जल्दी ही सेगांव जाने को कहते रहते हैं । पर अभी तो यहीं रहना उनके लिए लाभकर है । यहां का मौसम भी इस वक्त वहुत अच्छा है । जवतक पू० वापूजी यहां हैं, मेरा विचार भी तवतक तो यहां रहने का है ।

चि० सावित्री तो कलकत्ते चली ही गई है । अभी कुछ महीने तो उसका वहीं रहने का विचार है । उसके पत्र आते रहते हैं । उसके स्वभाव आदि के वारे में मुझे जो लिखना था, वह मैं अपने पहले पत्र में तुमको लिख ही चुका हूं ।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ८४ :

वर्धा, २४–१–३८

प्रिय कमल,

वापूजी का स्वास्थ्य पहले से ठीक है। लॉर्ड लोथियन यहां तीन रोज रह गये। सेगांव में अपनी झोंपड़ी में ही ठहरे थे। वर्धा में अपने घर पर भोजन व वातचीत करने आये थे। यहां की सव संस्थाएं देखीं। आदमी सज्जन व ऊंचे हृदय के मालूम हुए। वह १२५ पौंड की सहायता यहां दे गये हैं। उन्होंने वताया कि आजतक उन्होंने शराव और सिगरेट नहीं पी है। सेगांव में तो दूध ही पीते थे; याने चाय भी यहां नहीं पी। मौका लगे तो तुम उनसे मिल लेना। मैंने तुम्हारे वारे में कह दिया है। उन्होंने कहा है कि मैं तुम्हें मिलने के लिए लिख दूं।

जवाहरलालजी की माता व मौसी, बीवी अम्मा दोनों चौबीस घंटे के अंतर से चल वसे। पहले स्वरूपरानी गईं।

श्री एन्ड्रूज कहते थे कि तुम्हारे प्रिंसिपल ने उन्हें लिखा है कि तुम्हारी नियमित अभ्यास करने की आदत नहीं रही है, इससे अभ्यास वरावर नहीं होता है। अभ्यास के वारे में मैं क्या लिखूं? तुम्हारे अंदर जो आलस्य भरा हुआ है, वह अगर किसी तरह से निकल जाय व जवावदारी का भान हो जाय तो भावी जीवन उन्नत वन सकेगा, अन्यथा चाहे जितना पैसा और समय खर्च करो कोई खास परिणाम आनेवाला नहीं है। कम-से-कम तुम अच्छे खिलाड़ी ही हो जाओगे तो स्वास्थ्य के लिए तो ठीक ही रहेगा। तुम अपना पाई-पाई का हिसाव व नियमित डायरी रखने लग जाओ तो भी मुझे थोड़ा संतोष होगा।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ८५ :

मोरांसागर (जेल में), २२-२-३९

प्रिय कमल,

तुम्हारा १७–२ का पत्र व तार कल शाम को मिले। तार की

जरूरत तो थी नहीं। मेरा पत्र पीछे से मिल गया होगा। इस स्थान से तार चिट्ठियां भेजने के साधन नहीं के बराबर हैं।

तुमने मि० यंग[1] को पत्र भेजा, उसकी नकल मिली। मैं भी बराबर पूछ रहा हूं कि मेरे हक वगैरह क्या हैं; पर अभी तक जवाब नहीं मिल रहा है। वैसे मि० यंग खासगीतौर से मेरे साथ बहुत ही अच्छा बर्ताव रख रहे हैं।

मुझे बाहर का खाने-पीने का सामान मंगाना पसंद नहीं है। इसलिए संतरे वगैरा मत भेजना। यहां जरूरत होगी तो राज-वाले आप ही व्यवस्था कर देंगे।

वर्धा में मेहमानों की अब मैं चिंता क्यों करूं? तुम समर्थ हो।

चि० उमा का संबंध उसकी पूरी प्रसन्नता व उत्साह से ही करना है। उस पर दबाव तो डालना ही नहीं है। हां, समझाना जरूर चाहिए। कभी गोला या आगरा जाओ तो मुझसे मिलने आ जाना। केवल मिलने के लिए इतनी दूर आने की जरूरत नहीं।

महीने में चार से ज्यादा मेरे पत्रों की अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए। मैं तो दो ही भेजना पसंद करता, परंतु जबतक 'स्टेट प्रिजनर' हूं, चार भेज दिया करूंगा।

पू० काकासाहब व दादा (धर्माधिकारी) से कहना कि 'सर्वोदय' मैं बहुत ध्यानपूर्वक पढ़ता हूं। मेरे काम की बातें भी जरूर लिखा करें, जिससे मुझे उपदेश, लाभ व शांति में मदद पहुंचे।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ८६ :

मोरांसागर, २२-३-३२

प्रिय कमल,

बहुत दिनों बाद तुम्हारा १६–३ का लिखा हुआ पत्र कल शाम को मिला। साथ में तुम्हारी मां व उमा के पत्र भी मिले।

श्री हीरालाल कारीवाल का झुंझुनू का मकान शायद अपने पास

१. इंस्पेक्टर जनरल पुलिस, जयपुर।

गिरवी है। उसकी कार्यवाही की जा सकती है। चिरंजीलाल जब बंबई जाये तब उनसे पूछ सकता है। मकान के अलावा पहले जो रकम दी हुई है, वह तो उनकी सुविधा से ही वसूल करने का ख्याल रखना है।

श्रीनौरोजी (वेलगांववाले) से रुपये वसूल हो सकते हैं तो कोशिश करने में हर्ज नहीं। क्रानिकल-वालों से तो फैसला कर लिया गया था। बंबई कोई जाये तो वेलगांव-वालों से मिलकर बातचीत कर सकता है, या पत्र दिया जा सकता है।

रामनरेशजी त्रिपाठी का फैसला चिरंजीलाल के जिम्मे छोड़ दिया जाय तो वह कर लेगा। उनके कई पत्र आये हुए हैं। पहले वे सब पढ़ लेने चाहिए। मेरी तो राय है कि मूल के रुपये या थोड़े-बहुत कम ज्यादा आ जाने चाहिए। चिरंजीलाल जब कभी उधर जाये तब श्री-मार्तण्ड उपाध्याय की सलाह से पुस्तकें लेकर फैसला कर सकता है। तुम और रामेश्वर वहां हो तो उससे सलाह ले लेना। नालिश करने की मेरी इच्छा नहीं है। उनसे बहुत वर्षों पुराना संबंध है। अपनी तरफ से जहां-तक हो, वहांतक प्रेम से समस्या सुलझाने की कोशिश करनी चाहिए।

श्रीचिरंजीलाल को तुम्हारे पास ही काम करना चाहिए। इतने पर भी उसकी बहुत ही ज्यादा इच्छा हो जाय तो मई मास में उसे छुट्टी देने का विचार कर सकते हो।

श्रीसागरमलजी को कानून से तो पगार देने की जरूरत नहीं है, तथापि बाद में भी वह अपने यहां काम करनेवाले हों तो आधी पगार देना ठीक होगा। पहले भी हमने आधी पगार ऐसे मौकों पर दी है, ऐसा याद आता है।

जुहू का बंगला सदानन्द को दिया, वह तो ठीक किया। किराया बराबर आये, इसकी ठीक व्यवस्था कर लेनी चाहिए। उसकी तरफ अपनी रकम लेनी थी। उसकी किस्त बराबर आती होगी। नहीं तो ख्याल रख कर वसूल करते रहना चाहिए।

जुहु की मोटर का क्या किया? क्या उसे म्हात्रे के साथ व्यवस्था करके टैक्सी में चालू की है या दूसरी व्यवस्था की है? कुएं के पास के प्लाट में झोंपड़ी बनवा ली होगी।

बंगले पर की रेंगी खेती में काम आये तो ठीक है, नहीं तो घोड़े गांव पर भेज दिये जायं। जब जरूरत होगी तब मंगा लिये जा सकते हैं। चिरंजीलाल की सलाह से जैसा ठीक समझो वैसा करना। घोड़े का तांगा महिला आश्रम में रखकर देखना चाहिए। महीने का कितना काम वहां से मिलता है। थोड़ी कसर भी रहे तो हर्ज नहीं। गांव में भाड़े से चलाना तो घोड़ी को मारना ही होगा। वह ठीक नहीं मालूम देता है।

तुम्हारे लगभग सारे प्रश्नों का खुलासा लिख भेजा है। बाकी तुम्हें वर्धा की तरफ का कोई महत्व का प्रश्न लगे तो चि० गंगाबिशन, चिरंजीलाल, द्वारकादास की राय से कर लेना चाहिए। इस बात का पूरा ख्याल रखना चाहिए कि किसी के साथ अन्याय न होने पाय। बंबई की ओर के जो प्रश्न हों वे श्रीकेशवदेवजी की राय से सुलझाये जा सकते हैं।

मेरा जब छुटकारा होगा तब कुछ तो इधर ही रहना पड़ेगा। बाद में पौनार विनोबा के पास रहने की इच्छा है। उसके बिना मुझे पूरी शांति व समाधान नहीं मिलेगा। मेरे ये विचार तुम्हारे ख्याल में रहें इसलिए लिख दिया है। मेरी इच्छा अब व्यापार का काम देखने या बंबई ज्यादा जाने-आने की नहीं होती है। उसी तरह सार्वजनिक सेवा भी, नेतागिरी की जवाबदारी से बचकर, आत्म-साधना के साथ-साथ, जिसमें ज्यादा भाग-दौड़ न करनी पड़े व मानसिक सुख व शांति मिले, उसी प्रकार से सादा जीवन बिताते हुए और अपने ऊपर बहुत ही कम खर्च करते हुए, करने की है।

आज वर्ष का नया-दिन (गुड़ी पड़वा) है। इन दो वर्षों में मुझे वास्तविक शांति व समाधान नहीं मिल सका। इसके लिए जवाबदार तो मैं ही हूं। मुझे आशा है कि जैसी मेरी इच्छा है तुम मेरे लिए वैसा ही वातावरण तैयार कर रखोगे। पचास वर्ष पूरे होने आये हैं। अब जीवन में दूसरी प्रकार का अनुभव लेने की इच्छा बढ़ रही है। वर्तमान स्थिति में मुझे या तो विनोबा के पास समाधान या शांति मिल सकती है या मि० पाठक के पास। वे लन्दन में हैं और उनके पास जाना अब संभव भी नहीं है।

चि० सावित्री व मदालसा से कहना कि त्रिपुरी के पूरे अनुभव

सविस्तार लिखें। यहां आजकल एकांत में स्वाध्याय, पढ़ने, कातने, विचार करने आदि का तो खूब लाभ मिल रहा है। परंतु हास्य-विनोद का पूरा अभाव रह जाता है। वालकों के इस प्रकार पत्र आते रहें तो उससे विनोद का स्वाद मिल सकता है। उमा इस काम की सबसे ज्यादा योग्यता रखती है। परंतु वह तो बेचारी परीक्षा की फांसी में फंस रही है। पर शायद वह जल्दी ही मुक्त हो जाय।

अपनी दिनचर्या मैंने ऐसी वनाई है कि दिन-रात वहुत ही जल्दी समाप्त हो जाते हैं। दिन कैसे वीते, यह तो प्रश्न ही खड़ा नहीं होता। दिन जल्दी ही वीत गया और पढ़ना वाकी रह गया, ये विचार भले ही आते हों। यहां के पहरेदारों का व्यवहार ठीक है। वे बेचारे मुझे प्रेम व इज्जत से ही देखते हैं।

किशोरलालभाई की तीनों पुस्तकें पढ़ ली हैं। उनसे ठीक समाधान मिला। आजकल 'सुख व शांति' का मराठी अनुवाद पढ़ रहा हूं। सर्वोदय के आठों अंक यहीं पढ़ सका। इस प्रकार के जीवन में पढ़ने व विचार करने का अच्छा संतोष देनेवाला लाभ मिलता है।

चि० उमा से कहना कि उसका पत्र मिल गया। अंग्रेजी के परचे अच्छे हो गये, सो मालूम हुआ। असली परिणाम तो परीक्षा का नतीजा निकलने पर ही मालूम होगा। परंतु उसे संतोष है, यह खुशी की बात है।

चि० रामेश्वर की मां वहां हों तो मेरा प्रणाम कह देना। नये वर्ष के मेरे प्रणाम पू० मा, जाजूजी, काका सा०, विनोवा, किशोरलालभाई आदि को कहना। मित्रों को वन्देमातरम् व वालकों को प्रेम आशीर्वाद। अगर संभव हो तो तुम मुझे नीचे लिखी हुई वातों का व्यौरा लिख भेजना।

वच्छराजजी, सदीवाई(दादी), रामधनजी, वसन्तीबाई, कनीरामजी, माधोजी, बद्री, इन सबकी जन्म तिथियां, तारीखें व मत्यु की मिती। सन् वगैरा तो रोकड़ से मिल सकते हैं। साल और महीना अंदाज से पू० मा, वनसीजी घेलिया व गोरीलालजी की मां को याद होगा। इनमें से बहुतों की जन्म-पत्रिकायें अपने यहां मिल जानी चाहिएं। मैं, समय मिलेगा तो, इन सबका थोड़ा-थोड़ा इतिहास जो मुझे मालूम है, लिख रखना चाहता हूं। मेरी जन्म कुंडली इनके साथ भेज सकते हो, जिससे मेरे जन्म का

समय व तारीख मालूम हो जाय। अपनी मां से कह देना कि पान के साग के बारे में तो विनोद किया था। यहां पान के सिवा उस समय हरी चीज दूसरी कोई नहीं मिलती थी। अब तो साग की व्यवस्था है, प्रायः एक हरा साग मिल ही जाता है। साग न मिले तो यहां से चार मील पर पका पपीता मिल जाता है।

जमनालाल का आशीर्वाद

पुनश्च—आज यहां मोरध्वज राजा के पवित्र कुंड में खूब स्नान किया है। यह खत पूरा करने के बाद अखबार मिले। बापूजी की आज्ञा से सत्याग्रह बंद किया गया, यह समाचार मिला है। देखें अब ऊंट किस करवट बैठता है? ज० ब० २३-३-३९

: ८७ :

बंबई, ४-१०-४१

पूज्य काकाजी,

इस बार आपसे मिलकर काफी संतोष हुआ। गो-सेवा का काम आपके जिम्मे हुआ है इससे मेरे दिल में काफी खुशी है। यह जवाबदारी भी काफी बड़ी है। आपको मेहनत भी पूरी करनी पड़ेगी। लेकिन इसमें यश भी आप-जैसों को मिल सकता है। मुझे तो पूरा विश्वास है कि आगे चलकर आपको इस काम से काफी समाधान मिलेगा।

मैंने आपसे कहा था कि आप लोगों के नैतिक दबाव को सहन नहीं कर सकते और दब जाते हैं और अपने मन की अभिलाषा को स्पष्ट रूप से नहीं कह सकते इससे उनका नुकसान होता है। आपने अपने विषय में इसका उदाहरण मांगा था। मैं वह इसलिए नहीं कहना चाहता था कि शायद दूसरों के बारे में गलतफहमी हो जाय। मेरी समझ में श्री······का मामला कुछ इसी तरह का है। मेरी समझ ऐसी नहीं है कि वह सिर्फ शारीरिक परिश्रम से ही बीमार हुआ है। यदि वैसा है तो मुझे अवश्य खुशी है। पर इसको काफी असंतोष रहा है, ऐसी मेरी समझ थी। आप उसके बारे में ज्यादा जानते हैं, इससे ठीक बात तो आपको ही मालूम हो सकती है। चिंतित हृदय पर समय का क्या असर हो सकता है यह आप ही भलीभांति समझ सकते हैं।

आपके सामने मेरी बात होने के बाद पू० केशवदेवजी से भी आपकी टेलीफोन में बात हुई। उनका पत्र भी साथ है। वच्छराज कम्पनी के काम की जिम्मेदारी श्री······लेवें तब तो दूसरी बात होती है। बिना किसी जवाबदारी के इसका इंटरेस्ट रखना ठीक नहीं दीखता। लेकिन अच्छा तो यह हो कि इसके नाम की कोई एजेन्सी लें और फिर उसमें उसे काम दिया जाय। मैं यद्यपि इसके विरुद्ध हूं, फिर भी आप ठीक समझें तो इस तरह की स्कीम सोची जा सकती है कि जिससे उसका कर्ज चुकता जाय। तब-तक वह जवाबदारी ले और हमारा भी काम करे। बाद में जैसा आप और ये ठीक समझें।

यदि सम्भव हो और निभ सके तो मेरी समझ है कि श्री······को भी किसी काम में लगाना ठीक रहेगा। श्री······और श्री······दोनों मिल-कर काम कर लें तो अति उत्तम। हम लोगों का इंटरेस्ट किस तरह रहे वह भी सोचा जा सकता है।

मैं श्री······को निरुत्साहित नहीं करना चाहता। लेकिन मुझे इसका काम सीधा लग नहीं रहा है और आप पर जवाबदारी ज्यादा हो जायगी। फिर आपको जैसा ठीक लगे वैसा करें। इसके संबंध में निर्णय तो आपको ही करना है। वह तो निर्णय करना जानता नहीं। विशेष कुशल,

आपका बालक,
कमल के प्रणाम

: ८८ :

मद्रास, १६-१२-४१

पूज्य काकाजी,

आपके पत्र मिले। श्री सत्यनारायणजी के मार्फत भी एक पत्र मिला। सर सी० पी० से बाद में मिल लिया था। हमें पता नहीं था कि श्री राजाजी ने तार देकर इंतजाम करवा दिया था। मालूम होने से एक रोज ज्यादा ठहरकर सर सी० पी० से मैं मिल लिया था।

हमारा पिछला प्रोग्राम तो आपको मिला ही था। उसके बाद हम लोगों

ने तंजौर, चिदंबरम्, पांडिचेरी, तिरुवन्नामलाई और देखा। पहले प्रोग्राम में टेंकासी नहीं देख सके थे।

हम लोग यहां तक तो राजी खुशी पहुंच गए हैं। यात्रा काफी अच्छी हो रही है। हम लोग यहां से कल रात को रवाना होकर बैजवाड़ा ठहरेंगे। विजगापट्टम में श्री शांतिकुमार मोरारजी को तार देकर शिपयार्ड देखने के लिए प्रबंध किया है। हम लोग ता० २० को कलकत्ता पहुंचेंगे। आगे पत्र देना हो तो वहीं देवें।

रमण महर्षि के आश्रम में हम लोग एक दिन रहे। श्रीशंकरलाल भाई तथा अनुसूयाबहन वहीं हैं। शंकरलाल भाई पहले से अच्छे हैं। आश्रम में आपको कई लोग याद करते हैं।

पूज्य विनोबाजी यहां आ रहे हैं यह जानकर मुझे बड़ी खुशी हुई। इधर उनके लिए दो रोज काफी नहीं है। राजनैतिक वातावरण भी यहां का पूज्य बापू के विरुद्ध (पार्लियामेंटरी टाइप का) ज्यादा हो गया है। रचनात्मक काम में लगे हुए कार्यकर्ता भी बहुत असमंजस में हैं। पूज्य विनोबाजी को यहां कुछ ज्यादा समय देना चाहिए। उनका इधर पहली बार ही आना हो रहा है। लोग उत्सुकता से उनको सुनना चाहेंगे। सत्याग्रह तो फिर करना ही होगा। इस बीच जनता भी उनको और पहचाने-जाने, यह अच्छा है। पूज्य बापू का संदेश यहां पहुंचाने की बहुत आवश्यकता भी है। बिना आपके आग्रह किये यह काम नहीं होगा। पूज्य विनोबाजी स्वतः शायद ही कबूल करें। उनको १०–१५ रोज देकर इस तरफ काफी घूमना चाहिए। आपको ठीक लगे तो इस संबंध में पूज्य बापूजी से भी पुछवा लें। मुझे तो इसकी काफी आवश्यकता मालूम देती है।

पूज्य बापू ने गायों के लिए इन्कार किया सो जाना। पर मेरी समझ से तो इसमें भूल हो रही है। ऐसे मौके कम आते हैं। हम लोग वर्धा रहते होते तो मैं इन गायों को ले लेता।

पूज्य मां इस तरफ जितनी रहे अच्छा ही है। हमने भी उसको पत्र दिया था। उसका आया भी है। मैं और लिख रहा हूं।

पत्र देते रहें। आपका स्वास्थ्य ठीक होगा।

विशेष कुशल,

कमल का प्रणाम

सावित्री बजाज के साथ—

: ८९ :

वर्धा, २३-७-३६

चि० सावित्री,

हम सब लोग कुशलपूर्वक पहुंच गए। पू० बापूजी ने आज तुम्हारा कमल का संबंध निश्चित करके तार कलकत्ते व चि० कमल को भेजा है। चि० कमल का वेनिस पहुंचने का तार आ गया है। तुम्हारा पत्र मैं उसे भेज रहा हूं। तुम अंगूठी, जिस प्रकार तुम्हें पसंद हो, बिना संकोच तुम्हारे काकाजी को कहकर मेरी ओर से बनवा लेना। जो लागत बैठे लिखवा देना। कमल को मैंने लिख दिया है। वह तुम्हें सीधे पत्र लिखा करेगा। तुम मुझे प्रत्येक मास में दो सुंदर पत्र भेजती रहा करो। तुम सबों की याद हम लोगों को आती रहेगी।

अंगूठी हीरे की या जैसी तुम ठीक समझो बनवा लेना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ९० :

कलकत्ता, २७-९-३६

पूज्य पिताजी,

आपके पत्र मिले। मैं पत्र वर्धा ही दे रही हूं। वहां से आपके पास भेज ही दिया जायगा।

माताजी का स्वास्थ्य सुधर रहा है, पढ़कर सुख मिला। यदि आप बम्बई में ही हैं तो उन्हें कृपया मेरा सादर प्रणाम कहें, और उमा बहनजी को सप्रेम नमस्ते।

हिंदी और अंग्रेजी के "हरिजन" में मुख्य-मुख्य लेख प्रायः एक ही होते हैं, जिन्हें मैं पढ़ लेती हूं। अभी जवाहरलालजी की आत्मकथा पढ़ रही हूं। उसमें बहुत कुछ है, जो मेरी समझ के बाहर है। तब भी मोटेतौर से बहुत-सी बातों का ज्ञान हो गया है। पूरी समाप्त नहीं हो पाई है।

मेरा स्वास्थ्य ठीक है। वजन एक सेर और बढ़ा है, अर्थात् अब ८४ पाउंड है। थोड़ा बढ़ा है, वही अच्छा है।

यहां सब कुशल है।

आपकी आज्ञाकारिणी पुत्री,
सावित्री

: ९१ :

कलकत्ता, २९-३-३७

पूज्य पिताजी,

तीन या चार दिन हो गए हमें कलकत्ता पहुंचे, किंतु मैं पत्र नहीं दे सकी। छुट्टी का समय था, इसलिए होली आदि में और किसी बात की सुध ही न रही। वर्धा में दिन यद्यपि केवल दो ही मिले, पर बहुत ही आराम-सुख से बीते। पू० दादीजी आदि से मिलकर तथा उनका आशीर्वाद पाकर बहुत संतोष और सुख मिला। अन्य किसी से विशेष परिचय तो न हो पाया, किंतु प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सबकी शुभ-कामनाएं प्राप्त कर सुख ही हुआ।

पू० विनोबाजी पर कमलनयन बहुत श्रद्धा रखते हैं। उनके दर्शनों की भी इच्छा पूरी हो गई। वर्धा जाकर भी उमा बहन से न मिल सकी, इसका दुख रह गया। चि० रामकृष्ण से तो उस थोड़े समय में काफी हिल-मिल गई। उनके लिए मैं दो स्टांप भेज रही हूं। इन दो दिनों में आपके सहवास से मैं कुछ प्रत्यक्ष लाभ न उठा सकी, किंतु हो सकता है किसी-न-किसी रूप में लाभ अवश्य पहुंचा हो और पहुंचा होगा। मुझे विश्वास है कि आगे अधिक समय मिलने पर लाभ असर करेगा ही।

मद्रास का पता मालूम न होने के कारण मैं पत्र वर्धा ही दे रही हूं।

कुछ विलंब से आपको मिल जायगा। काकाजी ने यहां पहुंचते ही पत्र दे दिया था। वह आपको मिला होगा।

यहां सब प्रसन्न हैं।

आपकी आज्ञाकारिणी,
सावित्री

: ९२ :

वर्धा, ४-९-३७

चि० सावित्री,

मैं अभी बम्बई से यहां पहुंचा। यहां आने पर तुम्हारा २९-८ का पत्र मिला। तुमने अपने स्वास्थ्य का हाल व डाक्टरों की राय लिखी, वह मालूम हुई। एक्सरे करा लिया होगा। यदि न कराया हो तो अवश्य करा लेना। तुम्हारी नब्ज की हालत अवश्य विचारणीय है। तुम कमजोर हो। तुम्हें पूरा आराम मिलना चाहिए। तुममें सहनशक्ति कम होने से शरीर पर परिणाम जल्दी हो जाता है। यह तो ताकत बढ़ने से ही ठीक हो सकेगा। मेरी समझ से तो इसमें तुम्हें प्राकृतिक चिकित्सा से विशेष लाभ पहुंच सकेगा। अगर तुम्हें जंचे तो मेरी राय से अजीत बोस, जो सेवासदन में प्राकृतिक चिकित्सा करते हैं, से भी राय ले लेना। अपने एक्सरे आदि की रिपोर्ट मिल जाने पर मुझे लिख भेजना। डाक्टरों की राय अगर कुछ समय तक तुम्हें कलकत्ता रखने की हो तो तुम बिना संकोच वहीं रहने का निश्चय करना।

चि० कमल का ता० २४ या २५ के स्टीमर से जाने का निश्चय ही हो तो फिर उसे भिजवा देना ठीक रहेगा। कारण नई कंपनी की योजना उसके सामने निश्चित हो जाय तो अच्छा हो। जो जायदाद वगैरा उस कंपनी में देनी हो, उसकी कीमत भी लगाना है व क्या-क्या जायदाद इस कंपनी में देनी है, और क्या ट्रस्ट में देना है, उसका निश्चय भी करना है। इसीलिए मैंने कल बम्बई से तार करवाया था। तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा रहता तो सब बातें तुम्हारी उपस्थिति में ही हो सकती थीं। परंतु उसका क्या

उपाय ? तुम्हें स्टीमर पर उसे पहुंचाने के लिए जाने की आवश्यकता नहीं। जबतक तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं होती है, वहांतक हंसते-खेलते हुए पूरा आराम लेने का ही विचार रखना। जब उत्साह हो व थकावट न मालूम हो तो मुझे बीच-बीच में पत्र लिखा करना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ९३ :

वर्धा, ५-२-३८

चि० सावित्री,

तुम्हारा पत्र पढ़ा। आजकल यहां खूब चहल पहल है, वर्किंग कमेटी के कारण। तुम्हारा वजन इतना क्यों कम हो गया, आश्चर्य होता है। ९२ रतल हो तो पत्र पहुंचते ही तार कर देना जिससे शांति मिलेगी।

सुभाष बाबू यहां हैं। कमल इनसे विलायत में दो बार मिला था। कहते थे वह राजी है। मिसेज़ लंकेस्टर यहां आई थीं। इंगलैंड में खूब काम करती हैं। कमल को लिख देना कि मौका मिले तो इनसे मिल ले। मैं बहुत करके ता० ८ को यहां से बम्बई जाऊंगा। ता० १४ को हरिपुरा। तुम्हारी माताजी भी साथ जायंगी। चि० उमा, रामकृष्ण, यहां रहेंगे। मेरा मार्च के दूसरे सप्ताह में वहां आना हो सकेगा। अगर तुम वहां रहोगी तो विचार करूंगा।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ९४ :

मोरांसागर (जयपुर स्टेट जेल)
१-४-३९

चि० सावित्री,

तुम्हारा तारीख २६–३ का लिखा पत्र आज मिला। पढ़कर खुशी हुई। तुम तो इससे भी लंबा व ज्यादा वर्णन का पत्र लिख सकती थी।

तुम्हारे पत्र में सचमुच 'खतम' तो एक ही बार लिखा हुआ मिला।

मैंने तीन-चार वार की आशा की थी। खैर, एक वार का अनुभव तो तुम्हें मिला ही। तुम भी चालाक निकली। स्वयंसेवक, डाक्टर, डाक्टरनियों को जमा कर लिया। अगर विशेष चालाक होती तो शायद कई नेताओं को भी जमा कर लेती। उससे आखिर होती तकलीफ ही।

क्या तुम्हें हाथी पर वैठने को नहीं मिला ? तुम्हें जुलूस क्यों अच्छा लगता ? न तो तुम्हें हाथी पर बैठाया गया न तुम्हारी या तुम्हारे पिताजी की फोटो हाथी पर लादी गई। फिर कैसे रस आता ? जगदीश को कांग्रेस देखकर कुछ रस या नवीनता मालूम हुई ? उसे कहना कि वह अनुभव लिख भेजे। मेरा तो अभी जयपुर राज्य में ही (जेल के बाहर या भीतर) रहना संभव दिखाई देता है।

चि० विच्चू[1] ने कम-से-कम मेरा एक वड़ा भारी गुण या अवगुण तो जन्म से ही ग्रहण कर लिया। उसमें तरक्की हो रही है, यह जानकर खुशी होती है। अगर मुझ में कुछ और अच्छी वातें हैं तो संभव है, वड़ा होने पर उन्हें भी ग्रहण करेगा। एक वड़ी भारी वात तो उसमें अभी से दिखाई देती है, वह यह कि वह रोता वहुत ही कम है। हमेशा हंसता रहता है। मैं भी जव विच्चू की अवस्था में था तव, वाद में भी, रोता वहुत कम था। हमेशा हंसता व आनंद से रहता था, ऐसा जो मुझे खिलाते थे उनसे सुना है; तुम दादीजी से तपास कर लेना।

क्या तुम्हारी यह प्रदेश देखने की इच्छा है ? पर अव तो गरमी पड़ने लगी है। फिर कभी देखना ठीक रहेगा। वैसे यह प्रदेश देखने लायक जरूर है।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ९५ :

कर्णावतों का वाग,
(जयपुर स्टेट जेल) २७-५-३९

चि० सावित्री,

तुम्हारा २०-५ का पत्र मिला। तुम्हारी माताजी तारीख २४-५

---

[1] राहुल, श्री कमलनयन का पुत्र

को जयपुर पहुंच गईं। दो बार मुझ से मिल ली हैं।

चि० बेबी को ठीक लाभ पहुंच रहा है, यह जानकर खुशी हुई। कभी-कभी उसको देखने की इच्छा होती है। फोटो तो मेरे पास तुमने भेज ही दिया है। तुम्हारी तबीयत भी वहां ठीक रहती है व फुर्ती मालूम देती है, जानकर प्रसन्नता हुई। घूमने-फिरने का नियमित अभ्यास रखना। कमल की तरह आलस्य में दिन नहीं विताना। तुम सब मिलकर कमल का आलस्य बिलकुल निकाल दो तो तुम सबों को बहादुरों की पदवी मिल सकती है। तुम्हारे पिताजी व मैयाजी चाहें तो जरूर निकाल सकते हैं। वे घर भर के लिए यह नियम बना दें कि सुबह पांच बजे उठना चाहिए। कम-से-कम दोनों समय मिलाकर दस मील घूमना चाहिए तथा मोटे लोगों जैसे कमल, उमा, महावीर वगैरा को खुराक में चावल, आलू वगैरा नहीं दिये जायं। जो नियम का पालन न करे उसे खाना (भोजन) कितना ही चीखें-चिल्लावें, न दिया जाय। तब ही ऐसे लोग रास्ते पर आयं तो भले ही आवें, नहीं तो बेचारे बंगलेवाले के पलंग व कुर्सियां तोड़कर वापस ज्यों-के-त्यों आ जायंगे। पहाड़ का फायदा तो तब ही समझा जाना चाहिए जब तुम्हारा, ललिता, विमला व जगदीश का वजन दस रतल से ज्यादा बढ़े और कमल, महावीर, उमा का वजन क्रमशः २०, १५, १० रतल कम हो। नहीं तो तुम सबको मेरी समझ से समय व रुपये फिजूल खर्च करने का अपराधी समझा जाना चाहिए। तुम्हारी मैयाजी व काकाजी नरम व कमजोर तबीयत के व्यक्ति हैं। उनसे यह नहीं हो सकेगा। हां तुम, ललिता, विमला व जगदीश निश्चय कर लो तो हो सकेगा।

चि० उमा को फेल (नापास) होने पर मेरी ओर से बधाई देना। कालेज वगैरा का झगड़ा अपने-आप ही कम हो गया। खाली बातों के जोर पर हमेशा थोड़े ही परीक्षा पास होती है! यों कभी-कदास निशाना लग जाय, वह बात अलग है।

जमनालाल का आशीर्वाद

पूज्य मां को प्रणाम कहना और मेरी चिंता बिलकुल न करने को कहना। मुझे तो कभी-कभी लगता है कि शायद जल्दी बाहर आने के लिए मजबूर होना पड़े। बाकी दिनचर्या तो यहां उत्तम जम गई है।

पूज्य विनोबा को प्रणाम कहलाना। मेरी दिनचर्या की खबर पवनार भिजवा देना। इन दिनों काफी शांति व संतोष मिल रहा है।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १७७ :

बंबई,
१२-८-३४

चि० राधाकृष्ण,

कुमारी डा० सावित्रीबाई महाजन को मैं वहां भेज रहा हूं। मेरा उनसे परिचय बिहार में भूकंप के काम के निमित्त हुआ। उनका स्वभाव और सेवाभाव देखकर उनको वर्धा ही हमेशा का निवास-स्थान बनाने के लिए मैं कह रहा हूं। अगर वह पैसा कमाना चाहेंगी तो आज ही मासिक दो-ढाई सौ रुपये वह कहीं भी कमा सकती हैं। लेकिन पैसा कमाने की उनकी इच्छा नहीं है। समाज-सेवा के कार्य में अपना तथा अपनी संपादित विद्या का कुछ उपयोग हो, ऐसी उनकी इच्छा है। फिलहाल ५-७ दिन वहां रहकर वहां की परिस्थिति से परिचय कर लेने के लिए ही वह वर्धा आ रही हैं। उनका वहां रहने का संतोषजनक प्रबंध कर देना।

शुरू में एक छोटा-सा सूतिकागृह वह वर्धा में खोल दें, जिसमें एक 'पेड बेड' हो और तीन चार 'बेड' अपने कार्यकर्ता तथा तहसील के अन्य परिचित लोगों के उपयोग के लिए हों। अपनी वहां की संस्थाओं के लिए भी उनका काफी और अच्छा उपयोग हो सकेगा और बचे हुए समय में वे चाहेंगी तो कुछ 'प्राइवेट प्रेक्टिस' भी कर सकेंगी।

इस दृष्टि से उनको वहां की सारी परिस्थिति समझा देना और आश्रम तथा गांव के मित्रों से उनका परिचय करा देना। जानकीदेवी तो उनसे अच्छी तरह परिचय कर ही लेंगी। मैंने थत्तेजी, मोघेजी तथा वालुंजकरजी को आज परिचय-पत्र उनके लिए दिये ही हैं। मेरा तो विश्वास है कि अगर यह बाई वहां रहेंगी तो अपने सार्वजनिक कामों में

इनका ठीक उपयोग होगा। मेहनती और सेवावृत्ति वाली वाई हैं। विहार में इनका काम ठीक संतोषजनक रहा था। मेरे काम का हाल यह वतलावेंगी ही। वह यहां मेरे पास ही रहा करती थीं। खूव सेवा और मदद करने की इच्छा रखती हैं। पूज्य विनोवा से इनका परिचय करा देना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १७८ :

वंवई,
१७-१-३५

चि० राधाकृष्ण,

इस पत्र के साथ श्री रामनारायणजी चौधरी की ओर से आये हुए चार पत्र भिजवाये हैं, जिसमें ठक्कर वापा के नाम तुम्हारा पत्र, उसके वारे में श्रीरामनारायणजी के पत्र ठक्कर वापा के नाम, तुम्हारे नाम तथा श्रीचंद्रभानु शर्मा के नाम हैं।

श्रीरामनारायणजी का अपना जिस प्रकार का संवंध है उसका खयाल रखते हुए तथा साधारणतः भी विचार करने पर मुझे यह लगता है कि तुम पहले रामनारायणजी को ही सूचना करते और फिर आवश्यकता होने पर श्रीठक्कर वापा को लिखते तो ठीक होता। शिकायतें वढ़ाकर कहने की आदत तो लोगों में होती हीं है। दुरुस्ती करने की इच्छा से शिकायतें करने का अधिकार सार्वजनिक कार्यकर्त्ता को होता ही है। परंतु शिकायत करने के पहले जिसके वारे में शिकायत हो उसीको कुछ कहने का पहला मौका होना चाहिए। वापू की हमेशा यही नीति रहती है। इसीमें न्याय है और ऐसा करने से सच्ची वात का पता भी लग जाता है।

चन्द्रभानुजी तुमसे मिले होंगे। जहां तक तुम्हारा संतोष न हो वहां तक तुम अपनी राय उनसे कह सकते हो। इसमें कोई हरकत नहीं।

मेरे कान का इलाज चालू है। अव ड्रेसिंग में एक नया तरीका प्रारंभ किया है। प्रगति है, परंतु वहुत धीमी। मुझे वर्धा आने में देरी होगी ऐसा मालूम होता है। 'ग्राम उद्योग संघ' की सभा आगे वढ़ जाय तो ठीक, परंतु उसके वारे में तो अभी से निश्चित नहीं कहा जा सकता।

वहां मेहमान लोग आवेंगे। वागीचे में सबका इंतजाम संतोषकारक होगा तो सही, परंतु जहांतक पूर्ण संतोषजनक व्यवस्था न हो जाय वहांतक चिंता तो रहेगी ही। वर्धा में ऐसे कार्य स्वतंत्र-रूप से चलते रहने पर भी अपना संवंध तो उनसे रहेगा ही और उस वारे में थोड़ी चिंता रहना भी स्वाभाविक है। तुम्हारा वहां का काम ठीक-ठाक हो जाने पर मां वगैरा का इंतजाम ठीक से करवाकर यदि पूज्य वापू के वर्धा जाने के पहले तुम वर्धा जा सको तो अच्छा होगा।

अपना प्रोग्राम लिखते रहना। स्वास्थ्य अच्छा रखना। वहां का सब काम वरावर देख लिया होगा।

श्री रामनारायणजी को तुमने पत्र लिखा होगा।

पूज्य मां को प्रणाम !

जमनालाल का आशीर्वाद

: १७९ :

वंवई,
२६-१-३५

चि० राधाकृष्ण,

तुम्हारा सीकर से लिखा हुआ ता० २९ का पत्र मिला।

तुम्हारे वाले मकान में मेहमानों की व्यवस्था करनी होगी। मैं आऊं तो, और न आऊं तो भी, कुछ लोग तो वहां ठहरेंगे ही।

तुमने चंद्रभानुजी से ठीक वातें कर लीं तथा रामनारायणजी को पत्र भेज दिया सो ठीक किया। तुमने भी इस वात को महसूस किया कि रामनारायणजी को पत्र पहले देना ज्यादा अच्छा था। इसलिए इस वात से मुझे भी संतोष हुआ है। देशपांडे व रामनारायणजी के बीच समझौता करने के लिए पिछली बार काफी समय दिया था व आशा भी थी कि समझौता हो जायगा। परंतु अव वर्तमान में मुझसे हो सका तो मैं राजस्थान के बारे में उदासीन रहना चाहता हूं। वहां के मित्रों तथा कार्यकर्त्ताओं का मुझपर काफी बोझ रहा।

तुम यदि वहां के कार्य में दिलचस्पी ले सको व सब परिस्थिति से वाकिफ रह सको तो मुझे संतोष होगा।

बागीचे की व्यवस्था में श्री कुमारप्पा की ठीक सहायता करके इंतजाम करवा दिया होगा, नहीं तो सब इंतजाम ठीक-ठीक करा देना। डेडराजजी की मेहनत से स्मारक भवन थोड़े खर्च में अच्छा बना, यह पढ़कर खुशी हुई।

'चर्खा संघ' व 'गांधी सेवा संघ' की सभाओं के लिए आने का विचार है। डाक्टर लोग इजाजत दें तो आ सकूंगा।

कान का ड्रेसिंग चल रहा है। आराम होने में काफी देरी लगेगी ऐसा मालूम होता है। अब तो डाक्टर लोग भी यह कहने में असमर्थ हैं कि कान को पूरा आराम कब हो जायगा। जमनालाल का आशीर्वाद

पुनश्च

तुम्हारा बंगला तो तैयार रखना ही होगा। वहीं रहेंगे। श्री गोपीबेन, मुरारजीभाई, राजनारायण वगैरे कई जने तो वहां ठहरेंगे ही। क्या यहां से रसोइया लाना पड़ेगा? चि० सोफिया की सगाई श्रीसादुल्लाखां के साथ हुई, मालूम हुआ होगा।

: १८० :

भुवाली,
१३-४-३५

चि० राधाकृष्ण,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं यहां परसों दोपहर को आ गया। ५ या ६ दिन यहां रहकर रामगढ़ जाने का विचार है। रामगढ़ यहां से ६।। मील है। पैदल व घोड़े का रास्ता है। वहां पोस्ट आफिस व तारघर भी है। यहां से १००० फुट ऊंचा है। जलवायु यहां से अच्छी है तथा एकांत स्थान है। मैं कल घोड़े पर वहां गया था। बंगला पसंद कर आया हूं। पानी की भी सुविधा है। समीप में मेवे के बाग भी हैं। रामगढ़ जाने पर दूकान पर सूचना दे दूंगा।

चि० कमलनयन से मालूम हुआ कि तुम्हारी देवली-यात्रा सफल हुई। दामोदर ने लिखा है कि तुम अपना कार्यालय नालवाड़ी ले गये हो। आशा है कि काम की दृष्टि से ही ले गए होंगे।

श्रीदादा धर्माधिकारी के बारे में मेरी समझ में मैंने वहां कह दिया

था। उनके कार्य के बारे में मैंने उन्हींके ऊपर छोड़ दिया है। बाकी तुम और पूज्य विनोबाजी जो करोगे उसमें मुझे कोई आपत्ति न होगी। श्रीदादा का जिस काम को करने का उत्साह हो वह करें।

मैंने धोत्रे को लिख दिया है कि दादा को पहली अप्रैल से १०० रु० मासिक दिया जाय। वह यदि दूकान पर रहेंगे तो खाने का खर्च इसमें से कट जायगा।

तुम्हारा उनसे क्या ठीक परिचय हो रहा है? चि० कमलनयन को उनका देवली का भाषण बहुत पसंद आया।

सीकर के जाटों के आंदोलन की भी बीच-बीच में खबर मंगाकर वाकिफ रहने का खयाल रखना और मुझे भी वाकिफ रखना। अब हम लोगों के इस बीच में पड़ने से राज्य व सरकार राजनैतिक मामला समझ कर जाटों पर और अधिक अत्याचार करेगी, जिससे उनके कष्ट बढ़ने की संभावना है। इस समय चुप रहने के सिवा और कोई उपाय नहीं है। पर उनके आंदोलन से पूरी जानकारी रखने से भविष्य में कोई रास्ता निकाला जा सकेगा।

ऊपर का मकान कब तक तैयार हो जायगा? कि रलालभाई की व्यवस्था बराबर हो गई होगी?

जमनालाल का आशीर्वाद

: १८१ :

नालवाड़ी, वर्धा,
७-५-३५

पू० काकाजी,

सविनय पावांधोक। आपका ता० १ का पत्र मेरे यहां पहुंचने पर आज मिला।

जाटों की हालत की बाबत एक पत्र नारेली से डाला था। वह मिला होगा। मेरे सीकर से आने के बाद जाटों पर बहुत जुल्म हो रहे हैं। लूटमार खुले-आम होती है। एक भी बाहरी या खादीधारी आदमी को राज्यवाले बाहर नहीं रहने देना चाहते। पं० लादूरामजी, पू० डेडराजजी, शिवभगवान-

जी, व मेरे लिए पूछताछ व पकड़ने का विचार हो रहा था, ऐसा नर्मदा के पत्र से आज मालूम हुआ। राजपूत, मुसलमान व राज्य के अधिकारी, इन सबमें बदला लेने की तीव्र भावना है। इस वजह से जाट लगान देने को राजी हों तो भी 'एक घंटे में लाओ, दो घंटे में लाओ,' ऐसी शर्तें डाल कर तंग किया जाता है। चुने हुए लोगों के घरों को बरबाद किया जा रहा है। जिस जाट के घर में पैसा हो उसीसे सारे गांव का लगान जबर-दस्ती ले लिया जाता है। घर का व खेती का सामान बरबाद किया जाता है और पीटा भी जाता है। सैकड़ों गिरफ्तार कर लिये गए हैं। खूब आतंक जमाया जा रहा है।

जाटों के पंच जयपुर गये थे। उनको तो अधिकारियों ने साफ जवाब दे दिया कि बेब साहब के पास जाओ, हम कुछ नहीं जानते। अब पंजाब कौंसिल के मेंबर व जाटों के प्रतिनिधि श्री छोटूरामजी ता० ११ मई को प्रतिनिधि मंडल के साथ जयपुर राज्याधिकारियों से मिलेंगे। कुछ समझौता होगा, ऐसी आशा तो कम ही है, पर सबकी नजर उधर ही लगी है।

ता० ३ को दिल्ली में जो जाटों की कार्यकारिणी की सभा हुई, उसमें कुछ निश्चयात्मक प्रस्तावों के अलावा खास कोई बात नहीं हुई। श्री-रतनसिंहजी और सीकर जाट-पंचायत के सब पंच ता० ५ को अजमेर में एकत्रित हुए थे। इधर से पू० हरिभाऊजी, भाई रामनारायणजी, श्री व्यासजी, श्री शंकरलालजी वर्मा, श्री देशपांडेजी और मैं—इतने आदमी उपस्थित थे। दिनभर काफी चर्चा हुई। श्री रतनसिंहजी इस हलचल की पूरी जिम्मेदारी राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं पर छोड़ने को तैयार हो रहे थे, तथा 'जाट आंदोलन'—यह जातीय नाम मिटाकर—'किसान-आंदोलन' करने को भी तैयार हैं। लेकिन इस बाबत उन्होंने जाट-सभा से सलाह नहीं ली थी, इसलिए, तथा ता० ११ को क्या होना है, यह देखने व पू० बापूजी का और आपका क्या रुख है, यह जानने के लिए पूरी जिम्मे-दारी नहीं ली है। सिर्फ अभी तो उनको इतना ही कहा गया है, कि उन लोगों को समय-समय पर जब वे चाहेंगे, हम सलाह देते रहेंगे। पू० हरि-भाऊजी, भाई रामनारायणजी, श्री व्यासजी, व श्री शंकरलालजी—इन चार आदमियों की सलाह से वे लोग काम करें, ऐसा विचार हुआ है। भाई

रामनारायणजी का इसमें विशेष उत्साह है। पू० हरिभाऊजी को खास उत्साह तो नहीं है, पर आप चाहेंगे तो वे उत्साहपूर्वक भाग ले सकेंगे। पू० बापूजी से आज करीब आधा घंटा इस बाबत बातचीत हुई। कल शाम को फिर बात होगी। पूरी बातें होने पर अपनी राय बतावेंगे।

पू० हरिभाऊजी आज दिल्ली पहुंचे होंगे। दो-तीन रोज ठहर कर वापिस हटुंडी चले जायंगे। हटुंडी के लिए ग्राम उद्योग विद्यालय की योजना तैयार कर रहे हैं। पू० भागीरथी बहन, सौ० लक्ष्मी, शकुन्तला, भाई मार्तण्ड व बाबू, सभी इस समय तो दिल्ली में हैं। पू० दादीजी की तबीयत के समाचार आपके पास भी सीधे आते ही होंगे। यहां सब प्रसन्न हैं।

आपका बालक,
राधाकृष्ण बजाज

: १८२ :

भुवाली,
८-५-३५

चि० राधाकृष्ण,

तुम्हारा ३ तारीख का पत्र मिला। तुमने जाटों की हालत का वर्णन लिखा सो ठीक। कैप्टन वेब से तुम मिले सो बहुत अच्छा किया। जैसा तुमने लिखा है, अखबारों की खबरों से भी पता लगता है कि जाटों की ओर से बहुत-सी बातों में काफी भूलें हुई हैं। परन्तु उनको भूल के कारण सजा बहुत बेशी भुगतनी पड़ी है। जाटों में सामाजिक जागरण होना आवश्यक है ही।

जाटों के सच्चे नेता, जिनका जाटोंपर पूरा प्रभाव हो, जो काफी समझदार हों और स्वार्थ का भाव न रखकर जाटों की भलाई व उनके लिए न्याय चाहते हों, यदि ऐसे लोगों का परिचय हो जाय तो उनकी सलाह से जाटों का मामला आगे बढ़ सकता है। नारेली में श्री हरिभाऊजी और अन्य लोगों से इस बारे में जो कुछ बातें हुई हों और उनका कुछ निश्चय हुआ हो तो मुझे खबर देना।

सीकर के आस-पास के दूसरी जातिवाले लोग जाटों के विरुद्ध हैं, यह तो थोड़ा स्वाभाविक है। जो जाति आगे बढ़ना चाहती है, दूसरी

जातिवाले उसके विरुद्ध हो ही जाते हैं। परंतु यह कोई न्यायपूर्ण बात नहीं है। उनको ऐसा नहीं करना चाहिए। यह तो वहां ज़ाटों की ओर से ऐसा आंदोलन आरंभ हुआ है जैसा कि अपने यहां के अब्राह्मणों की तरफ से सत्य समाज से वहुत वुरे खेल खेले जाते थे। यदि जाटों की तरफ से उनका कोई अच्छा नेता आगे बढ़े तो जाटों के लिए अच्छा परिणाम हो सकता है।

पूज्य माताजी का स्वास्थ्य ठीक हो रहा है, उसकी खवर आती रहती है। यहां सव अच्छे हैं।

'नवजीवन' कार्यालय का पत्र इस पत्र के साथ भेज रहा हूं। तुम और पूनमचन्द अंकों का तपास कर लेना। चौकसी करने के वाद चि०कृष्णदास गांधी को पूछ कर ५६।।)।। 'नवजीवन' कार्यालय को भेज देना। भूलना नहीं।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १८३ :

भुवाली,
१६-५-३५

चिरंजीव राधाकृष्ण,

तुम्हारे ९ व १२ तारीख के पत्र मिले। खूंडी-कांड व कूदण-कांड की हकीकत पढ़ी। वापूजी कीं जो राय तुमने लिखी वह ठीक है। श्री छोटूरामजी यदि हम लोगों की मदद मांगें तो उस पर विचार किया जा सकता है, वैसे जो काम वह कर रहे हैं उसमें वाधा पड़ने का डर है।

वापूजी ने जो सूचना दी है वह तुम कुंवर रतनसिंहजी को सीधे या हरिभाऊजी की मारफत भेज सकते हो।

सीकर-राज के वारे में तुमने जो स्टेटमेंट भेजा वह मैंने पढ़ा है। उसके सिवा और कोई स्टेटमेंट मैंने नहीं पढ़ा है। तुम्हारे पास यदि और कोई नकल आई हो तो मुझे भेज देना। तुमने कुंवर रतनसिंह की जो प्रशंसा लिखी है वह पढ़कर वहुत खुशी हुई। मुझे भी आशा है कि समझौता शीघ्र हो जायगा।

मलकानीजी को सांप काटने का समाचार जानकर चिंता हो गई

थी। परसों दुकान से तार आ गया, उससे चिंता कम हुई। आशा है कि सांप के काटने पर जो इलाज किया जाता है वह तुमने समझ ही लिया होगा। तुम अपने कार्यकर्त्ताओं को भी समझा देना कि सांप काटने पर वैज्ञानिक तरीके से कैसे इलाज किया जाता है।

आशा है कि तुमने 'नवजीवन' कार्यालय को रुपये भेज दिये होंगे। मेरी समझ में तो वह अंक 'बाईकाट कमेटी' के समय आये होंगे। उसका तो खाता अब नहीं रह गया है। अब तुम और पूनमचन्द जैसा मुनासिब समझो उस खाते में मंडा दो।

दादा धर्माधिकारी के बारे में मेरी समझ तो थी कि उनको मेरी गैरहाजिरी में विनोवाजी से ठीक परिचय करने का मौका मिलेगा। परंतु विनोवाजी तो अब तुमसर, कोल्हापुर इत्यादि स्थानों को गये होंगे।

दादा का किशोरलालभाई उपयोग करें इसमें तो मुझे कोई हर्ज नहीं मालूम होता। उनका परिचय किशोरलालभाई से करवा देना और तुमको और धोत्रे को उनके बारे में जो ठीक मालूम होसके वह भी किशोरलाल-भाई से कह देना। वर्धा में वह कहां ठहरे हैं ?

स्थायी समिति के कितने मेहमान आये थे और वह कबतक ठहरे थे ? यदि हो सके तो उनके नाम लिखकर भेज देना।

कल श्री कमला नेहरू यूरोप जाने के लिए यहां से रवाना हो गईं। उनकी विदाई के समय का दृश्य बड़ा ही हृदयद्रावक था। एक तरफ तो श्री कमलाजी को ले जानेवाली मोटर खड़ी थी और दूसरी ओर जवाहरलालजी को जेल में ले जानेवाली मोटर—बीच में उनकी माता व बहन खड़ी थीं। यदि कोई अच्छा कलाकार और लेखक होता तो इस दृश्य का एक सुंदर वर्णन लिखा जा सकता था। प्रायः सबकी आंखों में पानी आ गया। मैंने आंखों में पानी नहीं आने दिया।

श्रीगंगादेवी के जाने की व्यवस्था बराबर हो गई होगी। जापा होने पर मुझे जरूर सूचना देना। मुझे इनकी चिंता रहती है। उन्हें भी कह देना कि खूब हिम्मत रखें और सच्चाई के जीवन के लिए ईश्वर से प्रार्थना करें।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १८४ :

वर्धा,
२१-५-३५

पूज्य काकाजी,

सविनय पावांधोक। आपका ता० १६ का पत्र परसों मिला था। सीकर की बाबत पू० बापूजी ने जो सूचनाएं की थीं वे पू० हरिभाऊजी को लिख भेजी थीं। आजकल तो सीकर से बहुत ही जुल्म के समाचार आ रहे हैं। पहले जिस वक्तव्य के बारे में लिखा था वह अखबार मिलने पर भेजूंगा। अभी मिल नहीं सका। उसमें खास बात सरकारीतौर से कैप्टन वेब की यह घोषणा थी कि चूंकि जाटों ने अपनी गलती कबूल करली है इसलिए रावराजा साहब संवत् १९८९ तक का बकाया लगान (जो चार लाख कुछ हजार है) माफ करते हैं और आगे जाटों के साथ अच्छा सुलूक दोनों ओर से होगा, ऐसी उम्मीद है। उसके जवाब में 'अर्जुन' का एक कटिंग भेजता हूं। साथ ही श्रीराम का सीकर की खबरों के बारे में जो पत्र है, वह भी भेजता हूं।

सांप के काटने पर एकदम क्या इलाज किया जाय, यह तो नहीं सीख पाये। डाक्टर के सुपुर्द कर दिया जाय इतना ही ज्ञान हुआ है। साहित्य सम्मेलन की स्थायी समिति की बैठक में करीब ९ आदमी आये थे। वे लोग १० को सुबह आये और १९ की रात को चले गए। पूज्य बापूजी आज आ रहे हैं। बहन गंगादेवी की तबीयत ठीक है। परसों अस्पताल से बागीचे ले आवेंगे। पू० कमलाजी की विदाई के जैसे करुण दृश्य मनुष्य-जीवन में बहुत कम देखने को मिलते हैं!

आपका बालक,
राधाकृष्ण बजाज

: १८५ :

भुवाली,
२९-५-३५

चि० राधाकृष्ण,

तुम्हारा २४ तारीख का पत्र २८ तारीख की शाम को मिला। इतनी देर से क्यों मिला? क्या बात हुई?

मेरे पास किशोरलालभाई का पत्र आया है। मैंने उस पर भली प्रकार विचार किया है। कई कारणों से जयनारायणजी की व्यवस्था संघ की ओर से करना उचित नहीं होगा। जाट-आंदोलन की ओर से ही उनकी व्यवस्था होनी चाहिए। अभी तक हम लोग व 'गांधी-सेवा-संघ' इस आंदोलन से अलग हैं। सहायता करने पर अलग नहीं रह सकते हैं। जयनारायणजी का पत्र वापस भेज रहा हूं। यदि मगनभाई देसाई और विनोवाजी इन्हें सदस्य बनाने को तैयार हों तो इसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

मेरी समझ में यदि सुजानचन्दजी की स्त्री को 'महिला आश्रम' में भरती कर लिया जाय तो अच्छा होगा। अव तो एक वर्ष की मर्यादा पूरी हो गई है, इसलिए कन्या आश्रम में भी कुछ लड़कियां ऐसी ली जा सकती हैं, जिनका आर्थिक वोझ ज्यादा न उठाना पड़े। तुम विनोवाजी और वापूजी से वात कर सकते हो। यदि जयनारायणजी लड़कियों के लिए कोई खास योजना प्रढ़ाई के वारे में अपने पास भेजें और वह योजना ठीक मालूम पड़े तो उस पर महिला-मंडल की ओर से विचार किया जा सकता है।

श्री जुगलकिशोरजी की जो रकम आई है वह खासकर मंदिर, कुवां और हरिजनों के लिए है, इस वारे में तुम सूचना जरूर कर सकते हो। मैंने तो शायद तुमसे कहा भी था।

'गांधी सेवा संघ' के तुम्हारे सेवक वनने के वारे में थोड़ी शंका तो मुझे भी है। तुम इस वारे में किशोरलालभाई और वापूजी से मौका पड़े तो वात करना। वाकी मेरे वर्धा आने पर इसका निश्चय होगा।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १८६ :

वर्धा,
२६-६-३६

चि० राधाकृष्ण,

तुम्हारे, पू० विनोवाजी, चि० अनुसूया व मेरे नाम के पत्र मिले। वैठने आनेवाले हिम्मत नहीं टिकने देते यह वहुत ही दुख की वात है। वैठने आनेवालों की प्रथा तो इसलिए पड़ी कि दुख के समय अपने जितने

संबंधी हैं, सब आकर हिम्मत बंधावें। परंतु आजकल इसका दुरुपयोग होता है। जितना खर्चा इतने बैठने आनेवालों के कारण होता है उतना चि० गिरधारी की बीमारी पर नहीं हुआ होगा। गिरधारी का इलाज बराबर नहीं हो सका इसका मुझे काफी दुख है। परंतु अब उसके लिए कोई इलाज नहीं।

चि० गीता की अजमेर व नीम-के-थाने रहने की व्यवस्था की सो ठीक है। श्री बींजराजजी की यहां आने की इच्छा हो तो जरूर ले आना। चि० मदन को यहां आने के लिए लिखा सो ठीक। परंतु बींजराजजी को संतोष हो वैसा कर लेना।

गीता के पत्र के बारे में लिखा सो ठीक किया। परंतु इस प्रथा में भी सुधार की बहुत गुंजाइश रह जाती है। वर्तमान प्रथा में ऐसी परिस्थिति में घरवाले दया या उपकार वृत्ति को सामने रखकर कुछ रुपये लड़की के नाम से निकाल देते हैं। वास्तव में यह स्थिति स्वाभिमान के विरुद्ध है। क्या लड़कियों का कोई हक नहीं होना चाहिए ? यह प्रश्न खब विचारणीय है। इस बारे में मेरे विचार तुमसे व चि० गीता से मिलने पर ही निश्चित हो सकेंगे। तुम तो गीता को यह कह सकते हो कि उसे इस बात की चिंता अधिक नहीं रखनी चाहिए। तुमने लिखा गीता का, बींजराजजी का तथा गीता के माता-पिता का दुख देखा नहीं जाता। लादूराम ने भी इसी प्रकार की स्थिति लिखी। पढ़कर मुझे दुख हुआ। परंतु इतने दुख का खास क्या कारण है ? एक तो स्वार्थ कि कमानेवाला चला गया; दूसरा स्त्रियों में आत्म-विश्वास, याने अपने पैर पर खड़े रहने की ताकत का अभाव। अन्यथा लड़का मरने पर जितना दुख हो, उतना ही लड़की या बहू के मरने में भी होना चाहिए। परंतु वैसा होता नहीं है। आज गीता को कुछ हो जाता तो ऊपर से दुख दिखाते हुए भी श्मशान में ही धीरे-धीरे सगाई की चर्चा चलती, लड़का विवाह करेगा इस तैयारी से पगड़ी वगैरा पहनाई जाती, आदि। यह कितने अनर्थ व दुख की स्थिति है। खूब परिवर्तन होगा तभी इस प्रकार का मिथ्या शोक व दुख कम हो सकेगा।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १८७ :

मोरां सागर,
८-५-३९

चि० राधाकृष्ण,

तुम्हारा २९-४ का पत्र मुझे ४-५ को मिला। कमल ता० २४ को टाड साहव से मिला। उसकी हकीकत तुमने लिखी थी। उनसे भी मालूम हुई। ता० ४ को मैं उनसे मिला था। दिल खोल कर वातें हुईं। एक दूसरे का परिचय हो सका। मुझ पर यह असर तो जरूर हुआ कि यह सज्जन मेहनती तथा गरीब व पीड़ित जनता के लिए कुछ करने की इच्छा रखनेवाला है। परंतु यहां की वर्तमान स्थिति में जवतक नीचे से ऊपर तक दृष्टिविंदु व कार्य का ध्येय साफ होकर ठीक-ठीक परिवर्तन न हो, तवतक संतोषजनक परिणाम निकलना कठिन है। कमल से जो सूचना उन्होंने की, वही मुझे भी की। वह मैं कैसे स्वीकार कर सकता था? मुझे इसमें प्रजा व राजा दोनों का हित नहीं मालूम देता। इन्हें प्रजा व राजा के सच्चे हितैषियों का परिचय होने में या पता लगाने में अभी वहुत देर लगती दिखाई देती है। क्योंकि जिनके स्वार्थ में हानि पहुंचने का डर है, वे क्यों ऐसा करने देंगे। उनका ध्येय न तो सचाई का है, न उन्हें राजा व प्रजा के हित की परवाह है। उन्हें तो अपने से मतलव है। जव इन्हें सच्चे व स्पष्ट वात करनेवालों की व जिनके हृदयों में निस्वार्थ सेवा करने की लगन है, उनके सहयोग की आवश्यकता अनुभव होगी, तव जाकर कहीं हालत का सुधार होना शुरू होगा। मुझे तो भविष्य अच्छा ही दिखाई देता है। परमात्मा इन लोगों को भी सद्‌बुद्धि प्रदान करेगा, जिससे खरे-खोटे को भली प्रकार पहचान सकें। मैं तो तुम्हें इतनी वातें लिखना भी नहीं चाहता था, परंतु तुमने अपने पत्र में कमल की मुलाकात की वात के साथ अन्य प्रश्न छेड़ दिये थे और वह पत्र मुझे अधिकारियों की मार्फत मिला, तव उनके जरिये ही यह खुलासा भेज रहा हूं।

हां, यह वात तो ठीक है कि वर्तमान स्थिति में मेरे स्वास्थ्य के वारे में अखवारों में ज्यादा चर्चा मैं पसंद नहीं करता। मेरा स्वास्थ्य वैसे

तो ठीक ही है। कोई सात-आठ रोज से मेरे दाहिने घुटने में दर्द रहने लगा है। उससे घूमना-फिरना वंद हो गया है। दर्द के कारण चलने में थोड़ा कष्ट तो होता ही है। किंतु तुम्हें चिंता का कारण नहीं, मैं ठीक कर लूंगा। इस प्रकार के अनुभव से एक प्रकार का लाभ ही होता है। मुझे कई बातें समझने व विचारने का मौका मिल जाता है।

आजकल यहां गरम लू चलने लग गई है। चारों ओर पहाड़ होने के कारण कल तो रातभर गरम हवा चलती रही। यह भी यहां की वहार है। दिन-दिन ज्यादा अनुभव मिलता जाता है। परंतु तुम लोग अव इस स्थान में ज्यादा थोड़े ही रहने देनेवाले हो? पर मुझे तो इस स्थान से अब मोह वढ़ रहा है। अखवारों में मैंने पढ़ा कि सत्याग्रही छोड़े जा रहे हैं। अच्छा तो यही हो कि जहांतक अधिकारियों को पूरा संतोष न हो जाय वहांतक मुझे यहीं रख छोड़ें। मैंने तो उन्हें कह दिया था कि मुझे इससे लाभ व शांति ही पहुंच सकती है।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १८८ :

न्यू होटल, जयपुर,
२४-४-४०

चि० राधाकृष्ण,

तुम्हारा ता० १६-४ का पत्र मिला। मैं कल ही मोरांसागर, गंगापुर, हिण्डौन आदि के दौरे पर से लौटकर आया हूं। १६ को बांसा जाना है। वहां से २७ को सीकर जाऊंगा और २८-२९ को वहां रहूंगा। इसके वाद संभव है, एक दफा उदयपुर जाना पड़े। आगे का कार्यक्रम अभी तय नहीं है।

जयपुर का समझौता हो गया। मेरा स्टेटमेंट अखवार में तुमने पढ़ा ही होगा। हमारी तीन शर्तें मान ली गईं—(१) प्रजा-मंडल का नाम वही रहेगा, (२) प्रजा-मंडल का मेम्बर बाहरी राजनैतिक संस्था का

मेम्वर या पदाधिकारी रह सकता है, (३) प्रवृत्तियों के बारे में हमें लोगों के पास जाने का, भाषण देने का व लोगों को समझाने का हक है। ध्येय हमारा लोकप्रिय सरकार था, परंतु इसके आखीर में 'अल्टीमेट' (अंतिम) शब्द लगा देना पड़ा। अभी यहां पर वातावरण ठीक करने में लगा हुआ हूं। आज श्री महाराजा साहव से मिलने के लिए जानेवाला हूं।

पू० मां को प्रणाम कहना। उनका स्वास्थ्य अव ठीक होगा। तुम्हारा स्वास्थ्यं भी ठीक होगा।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १८९ :

देहरादून,
२४-८-४१

चि० राधाकृष्ण,

तुम्हारा आज का दिया हुआ तार यहां आज ही मिल गया। चि० अनू के लड़का हुआ, पढ़कर विशेष खुशी नहीं हुई। मैं तो इस समय कन्या चाहता था। खैर, ब्रह्मा, विष्णु, महेष—त्रिमूर्ति घर में हो गई। चि० अनुसूया व वालक राजी होंगे। कोई तकलीफ नहीं हुई होगी। बालक का वजन कितना है?

मुझे यहां श्री आनन्दमयी मां के पास ठीक शांति मिल रही है। यहां का दृश्य व वातावरण भी सुंदर है। एक सुंदर व स्वच्छ पानी का छोटा-सा झरना वहता है। वहीं स्नान करता हूं। वहुत वर्षों बाद यहां स्वभाविक जीवन व देहाती वातावरण मिल रहा है। तेल मालिश तथा मोटर-तांगा आदि से छुट्टी मिल रही है। मैंने दामोदर की मार्फत 'माता आनन्दमयी की वात' नाम की पुस्तिका भिजवाई है, सो तुम व अनुसूया पढ़ लेना, जिससे इनका थोड़ा परिचय हो जायगा। यहां ८-१० दिन तो हूं ही।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १९० :

गोपुरी, वर्धा
२७-११-४२

प्रिय राधाकृष्ण,

तुम्हारे पत्र मिले।

पूज्य बापूजी से तुम्हारे पत्र को लेकर चर्चा हुई थी। वालुंजकर भी थे। बापूजी बकरी व भेड़ के दूध की छूट रखना उचित नहीं समझते[1]। उनकी दृष्टि इस बारे में साफ है। मुझे भी यह छूट रखना पसंद नहीं है, तो भी मैंने उनसे कहा कि बकरी की छूट रख देंगे तो हमें एक बड़ा लाभ तो यह होगा कि आप हमारे सदस्य बन सकेंगे। उन्होंने कहा यह ठीक है, परंतु यह छूट रखना ठीक नहीं। ज्यादा तो तुम जब यहां आओगे तब समझ लेना, क्योंकि मैंने विशेष चर्चा नहीं की।

बापू का विजयादशमी वाला कागज उन्हें किसी फाइल में मिल गया है। वह दुरुस्त करके एक-दो रोज में देनेवाले हैं। कल तक मिल गया तो इस बार के 'सर्वोदय' में छप जाना संभव है।

तुमने श्री·········की योजना के बारे में खुलासा किया सो ठीक। मेरा इनसे स्वभाविकतौर से ठीक परिचय बढ़ता जा रहा है। रिषभदास से भी कहना कि इनमें शक्ति तो काफी है ही। बीच में इधर से कुछ मन हटता हुआ मालूम दे रहा था। अब तो साफ हो गया है। मुझे आशा तो है कि इनकी शक्ति का ठीक उपयोग मिल सकेगा। हमें भी इनकी भावनाओं का खयाल तो करना ही होगा। तुम्हारे स्वभाव व कार्य-पद्धति में भी थोड़ा फरक करना जरूरी दीखता है। वह हो जायगा।

राजस्थान चर्खा संघ की शाखा गोविंदगढ़ से रींगस ले जाने में मुझे दो बातों का विचार आता है। एक तो शायद वहां पर फिर काफी खर्च करना होगा—इमारतों आदि में। धुलाई-रंगाई की व्यवस्था वहां ठीक हो गई है। दूसरे, मैं तो सीकर राज्य की अपेक्षा जयपुर राज्य में सीध काम होना ज्यादा ठीक समझता हूं। बाकी श्री देशपांडे तथा वहां के कार्यकर्त्ताओं

---

१. गोसेवा संघ का सदस्य बनने के लिए।

जाती थी। रोज के नये शब्द सुनने तथा उनका उच्चारण करने से जो थोड़ा-बहुत अभ्यास जीभ तथा कान को हुआ है वह तो ठीक ही है, पर हां, उस निमित्त से देश-विदेश की कई नई बातें व इतिहास तथा आधुनिक गतिविधियों का हाल जानने को जरूर मिला। श्रीपंडितजी पाश्चात्य सभ्यता के तथा प्रगतिशील आधुनिक विज्ञान—मोटर, रेलवे, हवाई जहाज, बम, मशीनगनें, पानी के जहाज तथा लड़ाकू विमान इत्यादि साहसिक तथा बौद्धिक विकास के आविष्कारों के अत्यंत प्रेमी तथा उनके प्रचार के लिए अतिशय उत्कंठित व्यक्ति मालूम दिए। वे हजार-पांच सौ साल पिछड़े हुए, पुराने खयालों को माननेवाले, जड़ और आलसी, लकीर के फकीर बने हुए, धर्म के नाम से ढोंग करनेवाले भारतीयों से बहुत अधिक नफरत करते हैं। उपरोक्त दुर्गुणों से नफरत रखने में तो कोई बुराई नहीं, किंतु वे सोचने में कुछ शीघ्रता करते हैं तथा अधीर हो जाते हैं। दिमाग कुछ अधिक तेज होने से तटस्थ न्यायवृत्ति से खिसक जाते हैं। चर्चा में जब हिन्दुस्तान की आज की पिछड़ी हुई हालत से पाश्चात्य देशों की प्रगतिशील तथा उन्नत सभ्यता का जिक्र छिड़ने पर वे कई बार अत्यधिक बेचैन हो जाते हैं और खूब जोश में आकर सारे हिन्दुओं को तथा (एक महात्मा गांधी को छोड़) धर्म के नाम पर ढोंग मचानेवाले आश्रम-वासियों को खूब खरी-खोटी सुनाने लगते हैं—४–५ दिन पहले पढ़ने के लिए मैं उनके पास गई तो उस दिन "यूरोप की सफर" विषय के जरिये कुछ नये शब्द बताते हुए वे स्वभाववश ही अपने प्रिय विषय की सघन घाटी में प्रविष्ट हो गए। श्रोता तो अकेली एक मैं ही थी। सतर्क होकर शांतिपूर्वक सब बातें सुनने की कोशिश कर रही थी। मुझे शांत देख कर तो उनका वेग अधिक-से-अधिक तेज होता जा रहा था। कभी-कभी उनकी दलीलों का तथा प्रश्नों का मैं ठीक से और जल्दी-जल्दी जवाब नहीं दे पाती थी, इससे उन्हें और भी जोश चढ़ने लग जाता। कहने लगे, "देखो यह है तुम लोगों की हालत। १८–१९ साल की उम्र है, पर स्वतंत्र व्यक्तित्व का तेज या शक्ति कुछ है ही नहीं। बड़े बुजुर्ग जो सिखलाते हैं बस वही तुम रटते जाते हो। १९३५ की प्रगतिशील दुनिया का तुम्हें कुछ खयाल ही नहीं

है । पता नहीं कूप मंडूक की तरह किस पुराने अंधेरे गड़े में गिर पड़े हो और अपनी चंद-रोजा छोटी-सी अमूल्य जिंदगी को नष्ट कर रहे हो। मुझे तो इन आश्रमों का नाम ही नहीं सुहाता। मैं ऐसी जगह कदम भी नहीं रखना चाहता। मेरा वस चले या इस जिंदगी में कभी मौका मिला तो मैं ऐसे लोगों को (पाश्चात्य देशों के कई डिक्टेटरों के उन्होंने नाम वताये थे जो मैं भूल गई हूं) ......की तरह सबों को एक कतार में खड़ा करके एक मिनिट में खत्म कर दूं," वगैरे-वगैरे। मैं चुपचाप सव सुन रही थी, मेरे दिल में भी कुछ हलचल तो मची। मैंने कुछ सोच कर कहा कि आपका कहना ठीक हो सकता है, पर वह हमें सुना कर कोई लाभ नहीं। छुटपन में जिस वातावरण में हम और हमारी बुद्धि पली है उस वातावरण को फैलानेवालों के गले उतार कर ही इन बातों का प्रचार आप कर सकते हैं। अन्यथा हम तो जहां इतने वड़े हुए, तथा जहां हमारी पहले से श्रद्धा जमी है, वहीं हमें आगे भी रहना है और सीखना है। वहीं से हमें जो कुछ प्रेरणा मिलेगी उसी पर हमें चलना होगा। यह सुनकर वह बोले—"पकी बुद्धि को वदलना कहीं मुमकिन हो सकता है भला! हां तुम जैसे लोग जिनकी बुद्धि अभी पकी हुई नहीं है उन लोगों को समझा कर ही आगे की पीढ़ी सुधारी जा सकती है।" इस प्रकार चर्चा प्रवाह १॥ घंटे तक चला। इतने में श्रीविजय[illegible]जी सोते से उठ कर आईं और उन्होंने मेरा पक्ष लेकर पंडितजी के आवेश को शांत कर दिया।

इस एक महीने में पंडितजी की ऐसी चर्चाओं तथा व्याख्यानों से मेरे विचारों को कुछ गति जरूर मिली है। यही मुझे वड़ा लाभ मालूम देता है। पंडितजी वहुत ही रसिक, विनोदी, तत्वज्ञानी तथा अनुभवी विचारों के पुरुष हैं, ऐसा प्रतीत हुआ। उनके इस स्वभाव से हमारा काफी मनोरंजन तथा ज्ञानवर्धन हुआ। हम लोग यहां खूब आनंद में हैं। दोनों का स्वास्थ्य अच्छा है। मन शांत है। आप जरा भी चिंता न करें। हम लोगों ने अपने हाथ से रसोई वनाकर एक दिन श्री वद्रीदत्तजी पांडे और मथुरादत्तजी जोशी को तथा एक दिन पंडितजी को व तीनों वच्चों को खाना खिलाया था। सबों को खूब आनंद आया। पत्र वहुत लंबा

हो गया है, क्षमा करें। सब अतिथिजनों को सादर अभिवादन !

आपकी नटखट नम्रबाला
मदालसा

२५-७-३५

पुनश्च—श्री पंडितजी परसों सुबह गये। कल दोपहर के बाद से यहां की निसर्ग माता ने रंग में आकर नाना प्रकार से हमको अपने खेल-तमाशे दिखाये और दिल खोल कर हमसे बातें कीं। निसर्गदेवता के कल के रूप का तथा उसके परिवार का परिचय कुछ इस प्रकार है।

शाम के ५-५१ का समय था। उत्तर में बिनसर की ओर हिमालय के उच्च धवल शिखरों की झांकी हो रही थी। हमलोग बिनसर के रास्ते घूमने निकले। हिमालय हमारे साथ चल रहा था। कभी ऊंचा, कभी ठिगना, कभी चौड़ा, कभी गहरा। इसी प्रकार वह अपने रंग भी बदलता जाता था, कभी धवल, कभी नीला, कभी भगवा और कभी लाल। इस प्रकार के दिव्य रंगों से नगाधिराज हिमालय मानो हमारे साथ लुका-छिपी का खेल ही खेल रहे हों! फिर थोड़ी देर बाद ही सूर्यास्त की अंतिम किरणों को साथ लेकर अपने उच्च धवल शिखरों पर किरणों का सुनहरी मुकुट धारण करके विदायगी का भव्य नृत्य दिखाने लगे। और फिर धीरे-धीरे उस देवता ने अपने अनुपम महल के पट शुभ्र बादलों के दिव्य पटों द्वारा बंद कर लिये और हम घर लौट आये। लौटते में ऐसा लग रहा था मानो बादलों के झुंड आपस में कबड्डी का खेल खेल रहे हों। आकाश में चारों ओर लाली छा गई और पश्चिम दिशा में दीपावली का अद्‌भुत साज सज रहा था। सूर्य धीरे-धीरे पहाड़ों की ओट में छिप गया। कल ही शाम को हमने लकड़बग्घे का गुर्राना और बिनसर में भालू के आगमन की खबर भी सुनी। इस प्रकार हमने निसर्ग माता के घर का परिचय पाया। हम यहां अच्छी तरह मौज से रहते हैं। आप कुछ सोच-फिकर मत कीजिए।

मदालसा

: ११५ :

वर्धा, २८-७-३५

चि० मदालसा,

मेरे पहले पत्र तो मिले ही होंगे। चि०.........व उसके पिताजी के पत्रों की नकल इसके साथ भेजता हूं। तुम अपनी मां को पढ़कर सुना देना। चि० कमल ने यह घटना बहुत ही बहादुरी व हिम्मत के साथ बर्दाश्त की है। इस संबंध के छूटने से तुम्हें व तुम्हारी माता को तो चिंता का कारण होना नहीं चाहिए। लड़के व लड़की को शुरू में ही असंतोष रहता हो तो फिर हम लोगों के ध्येय के मुताबिक संबंध कैसे किया जा सकता है ?

आजकल यहां मेहमानों की चहल-पहल है। पांच-सात दिन रहेगी। तुम्हारी मां को तो प्रायः बहुत से लोग याद किया करते हैं। इस बार वर्किंग कमेटी की बैठक महत्व की हो रही है।

आशा है तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक सुधरता होगा। तुम्हारी मां शांत रहकर अंतर-विकास का विचार करती होगी।

मेरा स्वास्थ्य ठीक है।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ११६ :

जयपुर, २२-८-३५

चि० मदालसा,

तुम्हारा पत्र मिला, तुम्हारी माता का भी। तुम्हारी दावत के लोभ से वहां जाने को जी तो चाहता है, परंतु इस समय कार्यवश आना असंभव है।

सीकर के जाटों की कठिनाइयां दूर करने में कुछ सहायता करने के हेतु मैं सीकर आया था। कैप्टेन वेब से दो-तीन वार मिला। श्रीमणिलाल-जी कोठारी भी यहां आ गये थे। उनके साथ भी एक रोज वेब से मिला। वेब आदमी अच्छा मालम होता है। इसके द्वारा किसानों का कुछ हित

होने की आशा तो है। पुलिस आफिसर मि० यंग से भी हम लोग मिले। यह आदमी भी कुछ समझदार है, परंतु जयपुर कौंसिल के वाइस प्रेसिडेंट सर वीचम सेन्ट जॉन बहुत सख्त आदमी हैं। उसके साथ बात-चीत की है। उससे कुछ विशेष आशा नहीं प्रतीत होती।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ११७ :

वर्धा, १४-११-३६

चि० मदालसा,

तुम सब अच्छे होगे। आजकल यहां काफी मेहमान हैं और आ रहे हैं। श्री एन्ड्रूज तो थे ही और उनके कारण डा० मौट, अमेरिका के बहुत प्रसिद्ध पुरुष, जिनका क्रिश्चियन धर्मवालों पर बहुत प्रभाव है, दो रोज रहकर गये हैं। उन्हें यहां का भारतीय रहन-सहन पसंद आया। कल दिवाली देखने शहर में व मंदिर गये थे। मेरा आगे का कार्यक्रम परसों निश्चित होगा। तुम्हारा व रामकृष्ण का क्या विचार ठहरा? यहां सब अच्छे हैं। तुम सबों के बिना थोड़ा सूना-सा लग रहा है। तुम्हारी मां अच्छी होगी; खूब हंसती रहती है न? चि० उमा से तुमने पेट-भर बातें की होंगी। चि० कमल के इन दिनों दो पत्र आ गए हैं। वह डब्लिन में है और राज़ी है।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ११८ :

वर्धा, १७-११-३६

चि० मदालसा,

तुमने जो लंबा पत्र भेजा है वह प्रायः सबने पढ़ा है। तुम अपनी वर्णन-शैली का विकास कर सको तो अच्छा है।

चि० राधाकृष्ण का विवाह जनवरी में होगा। यानी जनवरी में यहां चार विवाह होंगे। प्रलाद, भैरू, राधाकृष्ण व बम्बई में सोफिया का। इसलिए तुम लोग यहां २२ दिसम्बर तक पहुंच जाओगे तो ठीक रहेगा।

दिसंबर के आखिरी सप्ताह में यहां 'फेलोशिप' (ब्रदरहुड) के लोग आवेंगे। करीब पचास से ज्यादा अंग्रेज (सभीपुरुष) रहेंगे। यहां पांच दिन रहेंगे। प्रायः सबकी व्यवस्था अपने को ही करनी होगी। तुम्हें या तुम्हारी मां को याद होगा कि जब हम लोग साबरमती रहते थे, तब भी ये लोग वहां आये थे। वहां तो बापूजी ने काम का बंटवारा कर दिया था। भोजन के लिए अपने घर भी आया करते थे। इनका सम्मेलन देखने योग्य होगा।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ११९ :

वर्धा, १७-७-३७

चि० मदालसा,

तुम्हारा पत्र मिला। पढ़ कर खुशी हुई। तुम्हारी इच्छानुसार वह पत्र तुम्हारी माताजी के पास भेज दिया है।

मेहमान करीब-करीब सब चले गए। रमा के लिए तार आया था, इससे वह तीन दिन हुए चली गई। सावित्री, नंदू तथा सोफिया आज गये, गजानन कल चला जायगा। मेहमानों की भीड़ तो कम है मगर मैं केस के काम में पड़ा हुआ हूं और उसी में मेरा काफी समय लग जाता है।

गहनों के संबंध में तुमने लिखा, सो जाना। मैं समझता हूं कि यह गहने थोड़े समय के लिए तुम्हें पहनाये गए होंगे और एक-दो दिन के बाद तुमने उतार दिए होंगे। मेरी राय में तो गहने न पहनने का आग्रह करने का तुम्हें पूरा अधिकार है और वह आग्रह तुम्हें रखना चाहिए। तुम घरवालों को प्रेमपूर्वक समझा सकोगी। तुम्हारे लिए किस तारीख को पहुंचना संभव है? श्रीमन् को तो अब जल्दी आना ही चाहिए। कब तक आयंगे? लिखना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १२० :

वर्धा, ८–३–३८

चि० मदालसा,

तुम्हारे पत्र मिले। मैं आज ही रांची जा रहा था, परंतु श्रीसुभाष बाबू आज नागपुर से फिर वापस यहां बापूजी से मिलने आये और मुझे टेलीफोन से रहने को कहा, इसलिए मैं अब कल रवाना होकर ता० १० को रांची पहुंचूंगा। श्रीमहादेवी का पत्र तो मुझे अभी तक नहीं मिला। तुम्हारी माता के स्वास्थ्य की चिंता बराबर बनी रहती है। आशा है ईश्वर की कृपा से स्वास्थ्य जल्दी ही ठीक हो जायगा, जिससे एक भारी चिंता से मुक्ति मिलेगी।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १२१ :

कलकत्ता, २-४-३८

चि० मदालसा,

तुम्हारा तारीख २९-३-३८ का पत्र मिला। पढ़ कर तुम्हारी मां के स्वास्थ्य व मन की स्थिति का पता चला। वैसे तो मुझे मालूम था ही, परंतु दूर रहने पर भी इतना विचार रखती है, यह थोड़ा विचारणीय है। अबकी बार जब मैं वहां आऊंगा तब इसका संतोषजनक मार्ग निकालने का पूरा प्रयत्न करूंगा। परमात्मा ने चाहा तो मार्ग निकल सकेगा।

तुम्हारी मां के स्वास्थ्य की चिंता के कारण व अन्य कई कारणों से मेरा मन भी शांत नहीं रह पाता। परमात्मा की दया से सब सुख होते हुए भी यह हालत है। ईश्वर से ही प्रार्थना करते रहने पर कोई मार्ग निकलना संभव है। विचारों में काफी अंतर पड़ता जा रहा है। तुम चिंता मत करना।

पू० बापूजी की इच्छा बालकोबा को जुहू भेजने की हो रही है। उनके लिए अलग दो आदमी रहें ऐसी झोंपड़ी बनाना ठीक रहेगा या पक्की इमारत। श्रीआबिद अली व अपनी मां से सलाह करके मुझे लिखना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १२२ :

जुहू, १७-५-३८

चि० मदालसा,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम लोग जब वहां पहुंच गए हो तो आठ-दस रोज वहीं रहना जिससे स्वास्थ्य को कुछ लाभ पहुंच सके। तुम्हारी मां की भी यही इच्छा है।

गौरीशंकर भाई के बारे में तुमने लिखा सो समझा। मुझे भी इस बात का दुख है कि अपने कारण उन्हें ऐसा निश्चय करना पड़ा। परंतु मैं यह नहीं समझ पाया कि इस काम में तुम्हें बीच में डालने की क्या आवश्यकता थी?

मैं गया उसी रोज अगर वे मुझसे बात कर लेते तो कोई गलतफहमी नहीं हो पाती। क्योंकि जब मेरा तार यहां पहुंच गया था तो तुम उन्हें उस तार की तारीख बता कर गलतफहमी दूर कर सकती थी। तार की तारीख देख कर उनको भी संतोष मानना चाहिए था। दूकान पर कुछ गलती हो गई हो तो उसके लिए इतनी गलतफहमी कर लेने का कारण तो नहीं होना चाहिये। यह तो ठीक हुआ कि मेरे पास तुम्हारा खत भी समय पर पहुंच गया व मैंने तार भी समय पर कर दिया। पर प्रवास में तो ऐसा भी हो सकता है कि महत्व की चिट्ठी भी कभी-कभी २-४ रोज बाद ही मिल पाती है। उस हालत में जवाब भी यथासमय कैसे मिले? अब हम लोगों को इस बात का पूरा खयाल रखना होगा कि उनके निश्चय को अपने लिए तोड़ने का मौका न आये। आगे से किसी के साथ भी व्यवहार करते व संबंध बढ़ाते वक्त खूब सोच कर ही व्यवहार करना चाहिए। तुम्हें सब हाल मालूम रहे, इसी खयाल से यह सब लिखा है। पर इस मामले में तुम अपने दिल पर कोई बोझ नहीं रखना।

मेरा प्रोग्राम अभी अनिश्चित है। ८-७ रोज यहां रहना पड़ेगा। फिर शायद एक बार वर्धा जाना पड़े। पू० बापू कल वर्धा जा रहे हैं।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १२३ :

मोरांसागर, (होली) ५-३-३९

चि० मदालसा,

तुम्हारा २६-२ का पत्र मिला। तुम्हारी मां के नाम जो पत्र लिखा है, उसमें विस्तारपूर्वक समाचार लिखे हैं। तुम जरूर पढ़ लेना। आश्रम की प्रवृत्तियों में तुम्हें जिन बातों से असंतोष हो, वे बातें तुम्हें पूरी तरह समझकर श्रीकाशीनाथजी, भागीरथी बहन व शान्ता से कहना चाहिए। जब इनसे तुम्हारा समाधान न हो पाए तो पू० क़ाका साहब या दादा से। मेरे लिखने का मतलब तो आश्रम कमेटी के मेंबरों से है। उनके बाहर चर्चा नहीं होनी चाहिए। श्रीमन् से भी सलाह कर लेना। तुम्हें ज्यादा चिंता करने का कारण नहीं। अपने बड़ों से, जिनके हाथ में काम की बागडोर है, उनसे कह देना चाहिए। या ताकत हो तो काम को अपने हाथ में लेकर संभालने की तैयारी होनी चाहिए। केवल टीका करने से लाभ नहीं। तुम विद्यार्थिनी हो, इस नाते वहां से जितना लाभ उठा सको, उठाने का खयाल रखो। तुम्हारे इधर आने के बारे में मैंने तुम्हारी मां के पत्र में लिखा ही है। वह बराबर समझ लेना। श्रीमन् व विनोबाजी की राय मिलने पर व तुम्हारी आंतरिक भावना को जिससे शांति मिले, वही निश्चय करना ठीक रहेगा।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १२४ :

मोरांसागर, १३-४-३९

चि० मदालसा,

तुम्हारे व श्रीमन् के तारीख ३०—३ के लिखे हुए पत्र मुझे कल यहां मिले। मेरा स्वास्थ्य अब उत्तम है। खांसी बिलकुल चली गई है। पांव में दर्द भी नहीं है। वजन भी कम हुआ है, जो होना जरूरी था। यह सब प्रकार से समाधानकारक है।

तुमने भी 'सुख आणि शान्ति' पुस्तक पढ़ना शुरू किया, सो ठीक किया। आशा है, तुमने वह पूरी कर दी होगी। तुम्हें जो प्रसंग ठीक मालूम

हुए हों, वे नोट किए हैं क्या ? मैंने यह पुस्तक अबसे कोई बीस वर्ष पहले पढ़ी थी। फिर दोबारा पढ़कर सुख मिला।

तुम किशोरलाल भाई की 'विदाय वेलाए' तथा 'तिमिरमां प्रभा'[१], ये दोनों गुजराती पुस्तकें समय मिले तब पढ़ना। ये दोनों मुझे बहुत पसंद आई हैं।

अगर तुम सबकी इच्छा हो तो इधर आओ। मुझसे मिलना हो जायगा। वैसे यह प्रदेश भी घूम कर अभ्यास करने योग्य तो है। मेरे पास आओ तो जयपुर से खानगी मोटर लेकर व श्रीयंग साहब से परवानगी का पत्र लेकर आओगे तो इधर एक-दो रोज मोराकुण्ड वगैरा भी देख सकते हो। तुम यह पत्र कमल, उमा वगैरा सभी को पढ़ा देना।

यहां कोई आये और उसकी सूचना मुझे पहले मिल जाय तो आटा, दाल वगैरा सामान मंगाकर रखने में सुभीता रहेगा। यहां तो दो-दो आने, चार-चार आने का सामान आया करता है। उसमें फिर गाय का घी व दूध तुम लोग जो कोई भी आयगा एक ही बार में सब खतम कर देगा! अतः आने की पूर्व सूचना मिलने से थोड़ी गृहस्थी के ढंग का संग्रह कर लिया जायगा। तुम लोगों के पत्रों पर दादा (धर्माधिकारी) से 'मार्क' दिलाने की इच्छा है।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १२५ :

कर्णावतों का बाग, १६-७-३९

चि० मदालसा,

तुम्हारे दोनों खत मिले। पहले खत का उत्तर उमा को देने के लिए कहा था।

मेरे पैर का बिजली का इलाज चल रहा था। पर बिजली ज्यादा

---

[१] खलील जिब्रान के 'दी प्रोफेट' और टाल्स्टाय के 'लाइट-शाइन्स इन द डार्कनेस' के गुजराती अनुवाद; इनके हिन्दी अनुवाद सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली से उपलब्ध हैं।

हो जाने से घुटने के नीचे की जगह जल गई है। इस कारण अभी तो उसी जगह का इलाज चल रहा है। १०–१५ दिन में ठीक हो जायगा।

५–७ दिन में काफी वर्षा हो गई है। चारों ओर हरियाली नजर आती है। मोर सुबह-शाम खूब नाचते हैं। रात को शेरों की आवाज कई बार सुनाई देती है।

तुम्हारी भेजी हुई पूनियां मिल गई हैं। श्रीकुन्दन बहन का क्या कार्यक्रम है ? उन्हें वर्धा की सब संस्थाओं से पूरी तरह परिचित करा दिया होगा ।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १२६ :

नई दिल्ली, १-१०-४०

चि० मदालसा,

तुम्हारा पत्र मिला था। दौरे की वजह से जवाब जल्दी नहीं दे सका। तुम्हारी चिट्ठी इस वक्त नहीं मिल रही है। तुम्हारी बातों का जवाब पत्र सामने होने से दिया जा सकता था। अगर तुम्हारी उदयपुर देखने की इच्छा हो तो ५ को सवेरे जयपुर, न्यू होटल (स्टेशन के पास ही है) पहुंच जाना। अपने आने की सूचना श्रीहंस डी० राय, मार्फत न्यू होटल, जयपुर को दे देना। वह स्टेशन पर गाड़ी भेज देंगे।

उदयपुर से ८ को लौट कर फिर जयपुर आना है और १० को सवेरे वनस्थली पहुंचना है। वहां १०–११ को बालिका विद्यालय का वार्षिकोत्सव है। यदि तुम उदयपुर न आकर सिर्फ विद्यालय का उत्सव देखना चाहो तो जयपुर पहुंच सकती हो। वह संस्था देखने योग्य है। साथ तुम जिसको लाना चाहो, ला सकती हो। तुम्हारी माताजी या पिताजी (सास-ससुर) साथ आयें तो मुझे बहुत खुशी होगी । छोटे बच्चे साथ रहने से कष्ट रहेगा ।

और सब कुशल है। मेरा स्वास्थ्य ठीक है। पू० राजेन्द्रप्रसादजी का भी स्वास्थ्य अच्छा है। वह सीकर में हैं। मैं कल शाम को सीकर पहुंच जाऊंगा।

पू० बापूजी शिमला से आ गए हैं। अब जल्दी ही तैयारी कर रखनी है।[1] तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक है यह जानकर खुशी हुई।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १२७ :

नासिक रोड, १-७-४१

चि० मदू,

मेरा पत्र मिल गया होगा। परसों रात से यहां बारिश की झड़ी लग रही है। रात को तो रजाई ओढ़नी पड़ी थी। सर्दी के कारण दाहिने पांव के गोड़े में थोड़ा दर्द-सा व भारीपन मालूम होता है। तकलीफ कोई खास नहीं है। भूख लगती है। पेट ठीक साफ हो जाता है।

मुझे अनुभवी लोग कह रहे हैं कि नासिक में थोड़ी ठंड में भी गोड़े में दर्द का डर है, सो शिमला में तो बरसात भी ज्यादा होती है और साथ में ठंड भी। अतः तुम पू० बापूजी से बात कर लेना। वैसे शांति तो यहां भी है। पर बापू का शिमला ही भेजने का विचार होगा तब तो मैं यहां से अगले मंगलवार को निकल कर बुधवार को वर्धा पहुंच जाऊंगा। जल्दी हो तो सोमवार को भी पहुंच सकता हूं। अगर उनकी इच्छा हो कि मैं नासिक ज्यादा दिन रह सकता हूं, तो इसकी सूचना मुझे जल्दी मिल जाने से मैं यहां एक-दो महीने के लिए कोई छोटा-सा बंगला किराये पर ले लूंगा। साथ ही रसोइये की भी व्यवस्था कर लूंगा। अभी तो मैं श्रीगोपाल नेवटिया का मेहमान हो रहा हूं। पर ज्यादा दिन तो मेहमानदारी नहीं चल सकती। वैसे वह तथा उनकी स्त्री सुभद्रादेवी दोनों बड़े प्रेम से मेरा खयाल रखते हैं।

मेरा वजन आज लिया था। १५० हुआ। करीब चार-साढ़चार इन दिनों में बढ़ा। यहां आम खूब चूस रहा हूं क्योंकि रुपए के सौ आम आते हैं। बहुत स्वादिष्ट हैं। बरसात बंद होती तो तुम्हें भिजवाता।

---

[1] जेल जाने की। गांधीजी और वायसराय की राजनैतिक वार्त्ता का कोई परिणाम नहीं निकला था।

तुम्हारी मां राजी होगी। श्री महेश का हाल लिखती रहना। उसकी सेवा-सुश्रुषा की व्यवस्था ठीक रहे, इसका खयाल रखना।

श्रीपार्वतीदेवी डीडवानिया व चि० गिरधारी तो सुबह की मेल से वहां पहुंच जायंगे। तुम्हारी मां के पास ८-१० दिन ये रहना चाहते हैं। समय मिले तो वापू से भी घूमते हुए एक-दो बार बात करवा देना, जिससे इन्हें शांति मिलेगी।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १२८ :

नासिक रोड, ४-७-४१

चि० मदू,

तुम्हारा तारीख ३-७ का पत्र मिला। चि० कमला का भी। चि० रामेश्वर से ठीक-ठीक बातचीत हो गई है। वह फिर कल श्री केशवदेवजी के साथ आने वाला है। बहुत करके इनका बंबई रहना संभव है। श्री-पार्वती बाई डीडवानिया व गिरधारी तो आज पहुंच ही गए होंगे। उनके साथ पत्र दिया है। तुम थोड़ा ख्याल रखना। महेश के पेट में फिर दर्द शुरू हुआ, सो अभी तक निदान नहीं हो पाया दिखता। आशा है, जल्दी ही निदान हो जायगा। अभी तक मैं काफी भूख रखकर खानपान का ख्याल रखता हूं तो भी वजन बढ़ता है। अगर अभी खाता हूं, इससे कम खाऊं तो वजन नहीं बढ़ेगा, परंतु मन में असंतोष भी रहेगा, व कमजोरी भी। बाकी इस बारे में वर्धा आने पर पू० वापू व डाक्टर के समक्ष खुलासा हो जायगा। चिंता का कारण नहीं है।

अभी तो मंगल को निकल कर बुध को पहुंचने का ही विचार है।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १२९ :

दिल्ली, १६-७-४१

चि० मदू,

मैं यहां सकुशल पहुंच गया। जेल से घर तक जो थोड़ा-बहुत समय

मिला, उसमें तुमसे बात हो सकी उससे मुझे सुख व संतोष मिला। मन में यही रह गया कि ज्यादा समय मिलता तो ठीक रहता। खैर, फिर मिलेगा। तुम्हारी मां के तुम नजदीक आ रही हो और वह भी अपने स्वभाव में परिवर्तन कर रही हैं, यह अच्छे चिह्न हैं। मैं भी देखता हूं कि मैं अपने स्वभाव व वर्तन में कुछ परिवर्तन कर सकता हूं क्या?

यहां तो गर्मी बहुत ही ज्यादा पड़ती है। मैं गाड़ोदियाजी के यहां ठहरा हूं।

पू० बा से कहना कि देवीदास भाई मिले थे, राज़ी हैं।

हरिजन कालोनी में दो-तीन घंटे के लिए गया। श्रीठक्कर बापा से मिलना हुआ। वियोगी हरिजी तो साथ में थे ही। वहां मोरांसागर का हरिजन-मेहतर लड़का बुद्धि भी मिला। उसे देखकर सुख मिला। उसके भजन सुने।

वर्धा से मथुरा तक रास्ते में श्रीरामकृष्ण डालमिया से बातें व विचार विनिमय हुआ।

जमनालाल का आशीर्वाद

शिमला, १७-७-४१

पुनश्च—कल पत्र भेज नहीं सका। आज यहां देर हो गई थी। कुशलपूर्वक पहुंच गया।

कालका से शिमला वेस्ट ५६ मील है। कायदे से तीन घंटे से पहले नहीं पहुंचना चाहिए। याने ड्राइवर को १८ मील प्रति घंटे से ज्यादा तेज गाड़ी नहीं चलानी चाहिए। इस कारण दस बजे करीब जहां तक मोटर आती है, वहां पहुंचा। वहां पू० राजकुमारी बहन का नौकर नबीबक्श रिक्शा व मजदूर लेकर तैयार खड़ा था। एक तो वर्षा हो रही थी, दूसरे नबीबक्श का आग्रह था, तीसरे राजकुमारी बहन भोजन की राह देख रही थीं, इसलिए आज जीवन में पहली बार रिक्शा में बैठना पड़ा। मन में विचार तो खूब रहा, परंतु उस समय लाचार हो गया था। नबीबक्श माननेवाला नहीं था।

राजकुमारी बहन ने मेरे वास्ते खाने-पीने, रहने व आराम आदि का बहुत ही सुंदर इंतजाम कर रखा था। इतनी अच्छी व्यवस्था राजा-महाराजाओं के यहां भी होना कठिन है, ऐसा मालूम दे रहा है।

यहां खूब सीखने को व विचार करने को मिलेगा ऐसी आशा है। यह मकान भी बड़ी सुंदर जगह बना हुआ है। रास्ते में विट्ठल को तो मोटर में चक्कर व उल्टी हुई। मैं तो दृश्य देखता रहा। थोड़ा पैदल भी चल लिया था।

श्रीमन् से कहना कि आगरा गाड़ी एक घंटा लेट पहुंची थी। विट्ठल ने और मैंने भी गाड़ी से उतर कर देखभाल की। श्रीहृदयनारायणजी नहीं मिले। मैंने श्रीरामकृष्ण (डालमिया) से बात तो इनके बारे में की थी। परंतु वह मिल जाते तो शायद निश्चय ही हो जाता।

पू० बापू को तो तार व पत्र राजकुमारी बहन ने दिया ही है। मैं तुम्हें लिखता रहूंगा। उसमें जो हिस्सा जिसके योग्य मालूम दे, उन्हें कह दिया करना। विनोबा को तो एक वर्ष का आराम मिल ही गया है। ज० ब०

: १३० :

शिमला, १९-७-४१

चि० मदू,

तुम्हारा १७-७ का पत्र अभी मिला। वर्णन पढ़कर खुशी हुई। वजन सचमुच तीन पाउंड बढ़ा होगा और पू० बापू को विश्वास हो गया होगा।

मीरा बहन के पास रह आई यह बहुत ठीक किया। मुझे भी मीरा बहन की तपश्चर्या, सेवा भाव आदि की याद आया करती है। मेरा यहां ठीक चल रहा है। पांच-छः मील रोज़ घूम लेता हूं। प्रेम व शांति का वातावरण है। श्रीराजकुमारी बहन और घर के सब लोग खूब प्रेम से रख रहे हैं। मुझे अच्छी शांति मिल रही है।

यहां एक तोफा बाई है। इसकी सेवा व प्रेम सब घर के लोग इतनी ज्यादा करते हैं कि सचमुच आश्चर्य होता है। तुम्हारी मां व बाप इतना प्रेम या सेवा पू० बापू या विनोबा या अन्य गुरुजनों की या बालकों की

कर सकें तो कितना अच्छा हो। यह तोफा बाई कौन हैं ? पू० बापू से पूछ लेना, वह जानते हैं। उनकी गोद में भी बैठने का इसे सौभाग्य मिला है। इस पर खूब खर्च होता है। यहां के मुंशीजी का हाल फिर लिखूंगा।

सेवाग्राम पहुंचने तक टिक सकें ऐसे फल व सेव भेजने का ख्याल रखूंगा।

बापू को पत्र इसलिए नहीं लिखता कि उन्हें जवाव लिखना पड़ेगा। बहन तो रोज़ लिखती ही हैं। बापूजी भी उन्हें लिखते रहते हैं। फिर बापू का दुहरा काम क्यों बढ़ाऊं ? तुम भी हालचाल कह ही देती होगी।

आज तुम्हारे लिए एक पार्सल भेजा है। फोन करके जल्दी मंगा लेना। यहां के फल सस्ते हैं। सेब (चार सेर), नाशपाती (२ सेर), आडू (१ सेर)। इनमें से कौन से ठीक तरह से पहुंचते हैं, यह लिखना। राजकुमारी बहन को तो पूरा डर है कि ठीक नहीं पहुंचेंगे। अगर ठीक पहुंच जावेंगे तो खान साहब को सेव, नाश्पाती भाप से सिजा कर व मलीदा बना कर खिलाना। तुम तो खाओगी ही। इन पर तुम्हारी पूरी मालकी है (जनरल भंडार की नहीं है)। घूमने जा रहा हूं।

जमनालाल का आशीर्वाद

पुनश्च:—

तुझे तो गवारपाठे का पाक बापू खिलाते हैं। मुझे पेट भर कर रोटी भी नहीं देते। (मिठाई, खटाई की तो बात ही कहां ?) क्या यह इन्साफ है ? महेश खूब अच्छा होगा।

—ज० ब०

: १३१ :

शिमला वेस्ट, २४-७-४

चि० मदू,

मेरा पत्र मिल गया होगा। मेरा स्वास्थ्य अब ठीक है। जुकाम व ज्वर तो चला गया। कल से मेरा घूमना-फिरना फिर चालू हो गया है। अब यहां की आबहवा की आदत पड़ती जा रही है।

पू० बापू से कह देना कि उनका ता० २१-७ का पत्र मिल गया है।

पूज्य वहन राजकुमारी जी व उनके परिवार के प्रेम-व्यवहार से ठीक लाभ उठाने का प्रयत्न कर रहा हूं। मैंने अपने को राजकुमारी वहन के सुपुर्द कर रखा है। वह जो देती हैं, खाता हूं। भूख ज्यादा लगती है तो प्रेम के साथ मीठी लड़ाई लड़ लेता हूं। उनके भाई कर्नल भी मेरे लिए वहन से लड़ते रहते हैं कि वह मुझे भूखा क्यों मारती है ? लड़ने में अच्छा आनंद आता है। वहन खान-पान का वापू के लिखे मुताविक पूरा ख्याल रखती हैं। मैं भी ख्याल तो रखता ही हूं, पर थोड़ा, क्योंकि दो जने चिंता क्यों करें ? जब एक समझदार नर्स अपने कर्त्तव्य का ठीक पालन करती हो तव फिर मरीज को चिंता रखने की क्या जरूरत ? उसे तो फिर नर्स व डाक्टर से विनोद की लड़ाई लड़ने में ही आनंद आना चाहिए। यानी खाने-पीने की कसर को भूलना चाहिए। यहां फल व साग तो ताजे व अच्छे आते ही हैं। यहां के वाग में से भी निकलते रहते हैं।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १३२ :

शिमला, २७/२८-७-४१

चि० मदू,

तुम्हारा २१-७ का पत्र कल मिला व २५-७ का वहन के पत्र के साथ आज मिला। वापू का पत्र भी मिला। वापू को मैंने उत्तर वहन के पत्र में ही लिख भेजा है। तुम वापू से मांग कर पढ़ लेना, जिससे मेरी इच्छा मालूम हो जायगी।

तुम्हारी सूचना अक्षरों के बारे में विल्कुल ठीक है। यहां समय मिल जाता है, इसलिए अक्षर थोड़े सुधर जाने की आशा है।

पू० राजकुमारी वहन मेरे खान-पान, घूमने-फिरने, मुलाकात, आराम आदि का पूरा ख्याल रखती हैं। मुझे यहां घर से ज्यादा आराम, शांति व प्रेम का वातावरण मिल रहा है। इतना होते हुए भी पहली वार ज्यादा समय तक ठहरने का उत्साह नहीं हो सकता। विट्ठल मालिश वगैरह अपना काम वहुत अच्छी तरह से करता है।

कुछ परिवर्तन से अगर तुम्हारे मन को शांति मिलती है तो वापूजी

से पूछ कर बीच-बीच में थोड़ा-सा परिवर्तन जरूर कर लिया करो। तुम्हारी मां राजी रहती है, तुम्हारा उसका ठीक जम रहा है, यह सब जानकर मुझे सुख मिल रहा है। परमात्मा ने चाहा तो थोड़ी उदारता और बढ़ जायगी, जैसी कि आशा है, तो सबों को संतोष हो जायगा। उसमें गुण तो बहुत ज्यादा हैं, परंतु हम लोग पूरी तरह से समझ नहीं पाये हैं। तुम कोई व्यावहारिक रास्ता ढूंढ़ निकालो, जिससे उसे खूब आनंद व सुख-संतोष मिल सके। मेरे मन में यह विचार तो प्रायः आते रहते हैं व चिंता भी बनी रहती है। परंतु कोई राजमार्ग अभी तक मिल नहीं पाया। इसका मुख्य कारण तो यह है कि मेरे विचार करने की पद्धति व उसके विचार करने की पद्धति में बहुत ज्यादा फरक है। अब यह फरक तो शायद पू० बापू ही निकाल सकेंगे। तुम भी मदद कर सकोगी। मुझे तो अपनी कमजोरियों के विचार ही सताते रहते हैं। इसलिए मैं एक तरह से खुद ही इस मानसिक बीमारी की हालत में रहने के कारण (मुझे खुद के लिए ज्यादा प्रेम, उदारता व आनंद के वातावरण की जरूरत रहती है) ज्यादा नहीं कर पाता। तो भी मुझे ही अधिक प्रयत्न करना चाहिए। उससे अधिक उदारता की आशा रखना, शायद मेरे लिए उचित भी न हो। हां एक बात अगर वह कर सके, यानी पूज्य बापू पर पूरी श्रद्धा हृदय से बढ़ा सके तो मुझे आशा है, उसे खूब लाभ पहुंचेगा। बीच-बीच में बापू से उसे बात करने का मौका मिलता रहेगा तो ठीक रहेगा। तुम भी इस बात का ख्याल रखना। मैंने भी बापू को सूचित तो कर दिया है। बापू पर बोझ न पड़ते हुए उनके अनुभवों से हम लोगों को लाभ अवश्य उठाना चाहिए। बापू से ज्यादा शुद्ध प्रेम और कहां से मिलनेवाला है?

पूज्य राजकुमारी बहन आज देहरादून जा रही हैं। परसों वापस आ जायगी। राजकुमारी बहन के परिवार का परिचय तुम्हें अलग से भेज रहा हूं। बलवंतसिंह से कह देना कि वह उस जमीन को, जो वर्धा के रास्ते में मुझे दिखाई थी, जरूर ले लें।

डा० दास व महेश को प्रणाम व प्यार कहना। महेश का क्या प्रयोग चल रहा है? कब तक चलेगा? तुम उससे खूब बातें सुना करो।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १३३ :

शिमला वेस्ट, ३-८-४१

चि० मदू,

तुम्हारे ता० २७-७ व ३०-७ के पत्र समय पर मिल गये थे। फल यहां से भेजे थे। वह नवीवक्ष ही लाया था। बहन राजकुमारी की आज्ञानुसार ही उसने पार्सल किया था।

क्या दीमक की रानी मिल गई ? कुटिया कुछ बड़ी व ढंग की गुलाटीजी बना सकें तो कह देखना। वैसे तो जैसी बापू की इच्छा होगी वैसी बनेगी।

डा० दास को बापूजी ने इजाजत नहीं दी, सो उन्होंने सोच कर ही ऐसा किया होगा। डा० दास के खाने-पीने व आराम का ख्याल रखना। उनके क्रोध का ज्यादा विचार नहीं करना। सरल हृदय सज्जन पुरुष हैं। मेरा प्रणाम कहना। उनका बच्चा (नेमि) खुश होगा।

तुम्हारी मां को बापूजी चिढ़ाते हैं। कहते हैं कि 'बछड़े के पीछे गाय की तरह ही सदा साथ रहना !' सो ठीक है। परंतु बछड़ा बड़ा होने पर अपनी मां को भूल जाता है और मां भी बछड़े को भूल जाती है, सो ऐसा दोनों में न होने पाय, इसकी संभाल रखना।

मीरा बहन नई कुटिया में आ गईं। तुम दिन भर उनके पास रहीं, खाया, पकाया, सो ठीक। उन्हें इस प्रकार संतोष व शांति मिलती है या नहीं यह भी देख लिया करना। मीरा बहन की याद तो मुझे भी आया ही करती है। तुम्हारी जब कभी इच्छा हो तो आशा बहन के पास भी, जा-आ सकती हो। कमल (खाड़ीकर) तो वहां होगी ही। उसे बुला लिया करो या तुम ही चली जाया करो। जिस प्रकार तुम्हारा मन प्रसन्न रहे, वैसा सोचती व करती रहो।

पू० बापूजी से कहना कि उनका ३०-७ का पत्र मिल गया है। अभी तो मैं यहां पर हूं ही। आगे बहन की सलाह से कार्यक्रम बनाने की इच्छा होगी, तब बनाऊंगा।

यहां पर भी कैद में तो हूं ही। यह कैद अमीरी या 'स्टेट गेस्ट' की तरह की है।

मेरा जहांतक वश चलता है, वहां तक बहन को व दूसरों को भी

मेरी चिंता व बोझ कम मालूम पड़े, इसकी पूरी कोशिश रखता हूं। उसीमें मुझे आनंद व सुख मिल सकता है। इसमें बहुत हद तक तो सफल हो सका हूं। अगर पूरा सफल हो गया तो शायद ज्यादा समय भी रह सकूंगा।

बापू से कहना कि अगर देहरादून जाना हुआ और माता आनंदमयी से सुगमता के साथ मिलना हो सका, तो ख्याल रखूंगा।

गुलाबबाई ने राखी भेजी है। वह बहन राजकुमारी से बंधवा लूंगा।

चि० शांता को यहां से सब्जी भेजी थी। थोड़ी तुम्हें भी मिली होगी।

महेश को खर्च के लिए जो चाहिए, सो देना। उसका हिसाब अलग लिख रखना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १३४ :

शिमला वेस्ट, ५-८-४१

चि० मदू,

मेरा पत्र मिल गया होगा। तुम्हारा २-८ का पत्र मिला।

तिलक जयंती पर बापू का खादी विद्यालय का उद्घाटन का भाषण, स्पष्ट (हृदय की आवाज) था। अखबार में जितना आया है उतना पढ़ा है। बाकी 'खादी जगत' या 'सर्वोदय' में देखने को मिल जायगा।

खान साहब के निमंत्रण का उपयोग तो एक बार करने की इच्छा जरूर है।

चि० तारा का स्वास्थ्य कैसा है? वजन बढ़ा होगा? कितना है? आगे का क्या प्रोग्राम है? उसके पास कौन रहता है?

कल बहुत करके तुम्हें आडुओं का पार्सल करेंगे। ता० ९ को तलाश करवा लेना। यहां रुपये सेर का भाव आजकल हो रहा है।

पू० राजकुमारी बहन का देहरादून से आने के बाद स्वास्थ्य थोड़ा नरम रहता है। पू० बापू से विनोद करना कि मुझे बीमार समझ कर उनकी देख-रेख में भेजा है। परंतु बीमार तो सचमुच वह हैं। मुझे उन्हें हंसाना पड़ता है। उनके दिल-बहलाव के लिए भी ताश, शतरंज व अनेक तरह के खेल प्रायः रोज रात को खेलना पड़ता है। वह शायद समझती

हैं कि मेरे मन-बहलाव के लिए है। यह भी ठीक हो सकता है। हां, यह बात जरूर है कि उनको हराने में बाकी के हम सबों को अच्छा मजा आता है, क्योंकि खेलने में वह बहुत होशियार–'एक्सपर्ट' समझी जाती हैं।

आज अभी डा० बतरा के घर जा रहा हूं। यहां से करीब छह मील है। रिक्शा पर बैठने का हुक्म (आर्डर) मिला है। कुछ डर दूर हो जायगा।

चि० राम का कार्यक्रम लिखना। उसके लिए दो-चार आडू रख छोड़ना।

राम से मिलने की तो मेरे मन में भी इच्छा होती थी। जेल जाने पर मिल लूंगा।

बहन राजकुमारीजी ने तुम्हें प्रेम आशीर्वाद लिखवाया हैं। सावित्री को भी। उन्होंने कहा है कि मैंने उनके बारे में जो लिखा, उसे तुम सही मत मानना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १३५ :

शिमला वेस्ट, ९-८-४१

चि० मदू,

मेरे पत्र मिल गए होंगे।

कल राखी ठीक से हो गई। पू० बहन राजकुमारी ने अपने हाथ के सूत की सुन्दर राखी बनाकर बांधी। गुलाबबाई, दुर्गाबाई डालमिया व सौभाग्यवती दानी की राखी पहुंच गई थी। एक बार तो सबों की ही उनसे बंधवा ली थी। राखी बांधने के बाद ही गुरुदेव की मृत्यु के समाचार मिले। दुख सभी को होना स्वाभाविक था। तार वगैरा भेजा।

चि० राहुल ज्यादा कहां रहता है? मेरी ओर से प्यार करना व धीरे से एक थप्पड़ मारना या कान पकड़ना। कान तो सावित्री का भी पकड़ सकती हो।

श्री किशोरलालभाई का पत्र उन्हें दे देना। बापू, बा को प्रणाम।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १३६ :

शिमला वेस्ट, १४-८-४१

चि० मदू,

चि० राम का पत्र तो मुझे मिला था, परंतु उसे मेरा पत्र मिला या नहीं, उसने यह नहीं लिखा। चि० राम की गिरफ्तारी की खबर तो अखबारों में पढ़ी है। सजा का हाल अभी मालूम नहीं हुआ है।

मैं कल यहां से देहरादून जा रहा हूं। वहां से संभव हुआ तो हरिद्वार होकर नैनीताल जाऊंगा। वहां से एक वार वर्धा आने का ही विचार कर रहा हूं। वर्धा आने के वाद सीकर जाने का, वापूजी की आज्ञा से, निश्चय होगा।

श्रीकिशोरलालभाई से कह देना कि मेरे पत्र के जवाव में उनका पत्र मिला है। मैं वहां आने पर उनसे वात करूंगा।

कल यहां से चलते समय थोड़ा कष्ट मालूम होगा। एक प्रकार से इस घर से मोह-सा हो गया है। मेरे प्रति भी सव घरवालों का मोह दीखता है। सभी लोग कह रहे हैं कि मैं अभी न जाऊं। परंतु मैंने अपने दिल में एक महीने का विचार किया था, वह प्रायः पूरा हो जायगा।

जवाहरलालजी से मिलने की तारीख ५-१० दिन आगे की मिलती तो शायद उतने रोज और ठहर जाता। डेढ़ सौ रुपये पूज्य वापूजी को देने के लिए राजकुमारी वहन की भतीजी कुमारी वेरिल ने दिये हैं, सो मेरे हस्ते खाते में नामे लिखवा कर दूकान से मंगवा लेना व वापूजी को दे देना। और वापू से उनकी पहुंच याद रख कर यहां भिजवा देना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १३७ :

देहरादून, १८-८-४१

चि० मदू,

मैं परसों सुबह यहां पहुंच गया था। भाई जवाहरलालजी ने श्री काशीनारायणजी तनखा के पुत्र श्रीराजेन्द्रनारायण (रज्जी) तनखा

को स्टेशन भिजवा दिया था। मैं उनके घर ही ठहरा हूं। सभी सज्जन पुरुष हैं। कश्मीरी ब्राह्मण हैं। ठेके का व्यवसाय करते हैं। श्रीकमला नेहरू इनके घर ही ठहरा करती थीं। जवाहरलालजी से खूब अच्छी तरह से मिलना, वातचीत, विनोद वगैरा हुआ। फलाहार भी हुआ। उनका स्वास्थ्य उत्तम है। श्रीरणजीत पंडित का स्वास्थ्य साधारणतः ठीक है। चिंता की कोई वात नहीं है।

परसों हम यहां से श्रीमाता आनंदमयीजी, जो कमला नेहरू की गुरु हैं, और यहां से ५ मील दूर रायपुर नाम के देहात में रहती हैं, से मिल आये। पूज्य वापू ने इनसे मिलने के लिए लिखा था। करीव दो घंटे उनके पास रहा। उनसे खासी वातचीत हुई। मुझे उनके पास बैठ कर वातचीत करने से संतोष मिला। करीव आध घंटा एकांत में भी वातें हुईं। मैंने उनसे कहा, 'मातृवत् परदारेषु, परद्रव्येषु लोष्ठवत्। आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पश्यति।' इस प्रकार की मेरी भावना इस जन्म में जिस प्रकार हो सके, वह मार्ग वतावें। उन्होंने प्रेमपूर्वक कुछ वातें बताई हैं। मैं आज फिर उनके पास जा रहा हूं। वहां एक दिन व रात रहने का विचार है। वहां स्थान आदि देख आऊंगा। वाद में पूज्य वापू की इजाजत लेकर कुछ समय वहां और रहने की भी इच्छा हो रही है। वहां का वातावरण सात्विक दिखाई देता है।

कल मसूरी जाकर चि० इंदू से मिल आया था। जवाहरलालजी ने भी कहा था। मेरी भी इच्छा थी। उपाध्याय वहां पर हैं ही। यहां से श्रीरज्जी तनखा मेरे साथ गये थे। १६॥ रुपयों की जगह छह रुपये में आना-जाना, सफर मोटर-वस द्वारा किया था। इंदू ने मेरे साथ अच्छा प्रेम का व्यवहार किया।

कल हरिद्वार होते हुए गुरुवार को ११ वजे करीव ओम् के पास पहुंचने की इच्छा है। पूज्व वापू को यह पत्र पढ़ा देना। अपनी मां को भी।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १३८ :

देहरादून, २१-८-४१

चि० मदू,

बापू के नाम मेरा पत्र पढ़ ही लिया होगा। इस स्थान व यहां के वातावरण तथा पू० माता आनंदमयीजी के स्वच्छ प्रेम आदि के कारण ज्यादा समय तक यहीं रहने की मेरी इच्छा व उत्साह मालम होता है।

मेरे तार के जवाब में आज पूज्य वापू का तार मिल गया। मेरी इच्छा हो तबतक यहां ठहरने का लिखा सो पढ़ कर सुख मिला।

मुझे बाप तो वापू मिल ही गये थे। मां आनंदमयीजी मिल गईं। अब भी मुझे शांति नहीं मिली तो मेरा ही कोई भारी पाप आड़े आता होगा, ऐसा संभव है। मुझे आशा है कि शांति जरूर मिल जायगी। मां आनंदमयी से मिलने की सूचना तो पूज्य वापू ने ही की थी। उनके वारे में बंगला भाषा में तो काफी लिखा गया है। हिंदी में नहीं के वरावर। मैंने एक छोटी-सी पुस्तिका भेजी है। उससे थोड़ी कल्पना आयगी। बापू को पढ़ा देना। ज्यादा तो वहां आने पर वताऊंगा। पत्र का जवाव यहां भेजना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १३९ :

देहरादून, २३-८-४१

चि० मदू,

मेरे समाचार तो वहां मिलते ही रहते हैं। मां आनंदमयी की पुस्तिका देख ली होगी। मेरा मन यहां खूब लग रहा है। इन वर्षों में इतनी शांति, जितनी अब मिल रही है, कहीं नहीं मिली। मेरा अभी ८—१० रोज तो और यहां ठहरने का विचार है ही। शायद ज्यादा भी ठहर जाऊं। पू० वापू का तार मिल गया। प्रिय महेश को वहीं रखना ठीक रहेगा। चि० शांताबाई आना चाहे तो उसे भेजने के लिए वापू को आज तार भेजा है। मां से मिलकर उसे जरूर सुख मिलेगा।

मेरी दिनचर्या ठीक चल रही है। सुवह अंदाजन चार वजे उठता हूं। मां के पास वैठता हूं। नाम स्मरण की कोशिश के साथ मां के पांव दवाया करता हूं। वाद में साढ़े पांच के करीव एक मील अंदाज घूमते हुए जंगल

में ही निवृत्त हो लेता हूं। छोटा फावड़ा-कुदाली साथ रखता हूं। उससे जगह ठीक कर लेता हूं। यहां से लगभग तीन फर्लांग पर सुंदर झरना व रमणीक स्थान है। जल स्वच्छ व पीने में उत्तम है। वहां मुंह-हाथ धोकर झरने के नीचे ठंडे जल से स्नान कर लेता हूं। लौट कर ८ बजे के करीब नाश्ता करता हूं। फिर अढ़ाई घंटे मां के पास बैठकर जो चर्चा, विचार-विनिमय होता है, वह सुनता रहता हूं। खूब शांति मिलती है। साढ़े ग्यारह के करीब भोजन कर लेता हूं। अनाज एक बार ही लेता हूं। यहां आने के बाद दो-तीन बार थोड़ी दाल मिली थी। अभी ज्यादा खुराक साग, दूध, फल की ही चालू है। भोजन के बाद थोड़ा आराम। फिर कभी-कभी एकाध पत्र लिखता हूं। फिर दो बजे करीब झरने पर जाकर निपटता हूं। वापस आकर मां के पास एकाध घंटा एकांत में विचार-विनिमय शंका-समाधान होता है। बाद में चर्खा यहां रोज कातता हूं। चर्खे का ठीक प्रचार होने की संभावना है। फिर हरिकीर्तन में बैठता हूं। यहां मौन भी रखा जाता है। सब ठीक चल रहा है। स्थान रमणीक व सुंदर है। अगर कोई जमीन मिल जाय तो लेने का विचार कर रहा हूं। स्थान तो तपोभमि जैसा मालूम देता है।

पूज्य बापू को इसमें से जो समाचार सुनाना चाहो सुना देना। ओम् नैनीताल आने की जल्दी कर रही है। मैं अभी यहीं हूं। जवाहरलालजी से भी दूसरी बार मिलने की संभावना है।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १४० :

देहरादून, २६-८-४१

चि० मदू,

तुम्हारा २२-८ का पत्र मिला। बापू के पत्र व तार भी मिले। पू० बापूजी के नाम का पत्र इसके साथ भेज रहा हूं। तुम पढ़कर उन्हें पढ़ा देना। पत्र अपने पास ही रख छोड़ना। यहां के फोटो तो जब मैं आऊंगा तब बहुत से साथ में लाऊंगा। वे मैंने तुम्हारे लिए संग्रह किये हैं। ओम् ने न चुराये तो तुम्हारे पास पहुंच ही जायंगे।

श्रीखुर्शेद बहन सेवाग्राम कबतक रहनेवाली हैं ? चि० प्रभावती का पत्र उसे दे देना।

महेश का पत्र मिल गया है। उसे कह देना ता० २१ सितंबर तक खूब चंगा हो जाय। फिर मेरे साथ रहना पड़ेगा। जेल या बाहर। बापू से कहना कि इससे लिखा-पढ़ी का जबाबदारी का काम लिया करें।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १४१ :

कनखल, १-९-४१

चि० मद्दू,

पूज्य बापूजी का तार कल मिला था। पूज्य आनंदमयी माताजी का पहले ही दिल्ली होकर विंध्याचल जाने का निश्चय हो गया था, इसलिए इस बार तो वह नहीं आ सकेंगी। कुछ समय बाद शायद आ जावेंगी। इनका प्रोग्राम अनिश्चित-सा रहा करता है।

बापू का तार आजाना एक तरह से ठीक ही रहा। आज मैं नैनीताल जा रहा हूं। माताजी दिल्ली जा रही हैं। नैनीताल से मैं अपना आगे का प्रोग्राम लिख भेजूंगा।

परसों मैंने यहां पर अपना वज़न किया था। १५२ रतल निकला। यानी वर्धा छोड़ते समय व शिमला छोड़ते समय जो वज़न था उससे करीब तीन रतल कम ही हुआ। इससे मुझे संतोष ही रहा।

यहां से (पंजाब से) रामप्यारी बहन, जो एफ० ए० तक पढ़ी हुई हैं, कुमारी हैं, महिलाश्रम देखने आ रही हैं। यह अच्छे घराने की सेवा व त्यागवृत्तिवाली बहन दीखती हैं। इनका मन लग गया तो वर्धा रहने का स्थायी विचार करेंगी। तुम इनसे ठीक बातचीत करना। तुम्हारे पास स्थान हो तो एक-दो रोज़ रख लेना। इन्हें भजन के समय एकांत ज़गह की जरूरत रहती है। इसका ख्याल रखना।

पूज्य बापूजी से भी इन्हें मिला देना। श्रीसरस्वतीदेवी (देहरादून वाली) ने इनका परिचय कराया है।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १४२ :

अलमोड़ा, १०-९-४१

चि० मदू,

मैं, उमा और राजनारायण नैनीताल से ७ तारीख को सुबह निकल-कर कोशानी दो रात रहे। यह स्थान चनौदा गांधी-आश्रम से तीन मील आगे है। बहुत अच्छा स्थान मालूम हुआ। पूज्य बापूजी यहां ८-१० रोज रहे थे। सुना है उन्हें यह स्थान पसंद आया था। इस स्थान का वर्णन सुनना चाहो तो श्रीकृष्णदास गांधी से सुन लेना। हम सबों को भी पसंद आया है। ज्यादा दिन रहने का मन हुआ था।

यहां अलमोड़ा में कल श्रीगोविंदवल्लभ पंत से मुलाकात हुई। और मित्रों से भी। सब आनंद में हैं। देर तक बातचीत व विनोद होता रहा। करीब दो महीने में ये सब छूट जानेवाले हैं। यहां के डिप्टी कलक्टर श्री धर्मवीर, आई० सी० एस०, सज्जन पुरुष हैं। राजा ज्वालाप्रसादजी के पुत्र हैं। सर गंगारामवालों की पोती दयादेवी इनकी स्त्री हैं। मेरे परिचित हैं। आज का भोजन इनके यहीं है। डि०क० की हैसियत से नहीं, मित्रता के नाते।

आज रणजीत पंडित के बागीचे जाने की इच्छा थी। परंतु साथियों की कमजोरी के कारण जाना नहीं हो पाया। कल सुबह यहां से निकल कर रानीखेत होते हुए शाम को नैनीताल पहुंच जाऊंगा। वहां ता० १६ तक तो रहने का विचार है।

पू० बापूजी से मिलने पर खान-पान के बंधन थोड़े ढीले करने की इच्छा है, अन्यथा सफर में जरा कष्ट होता है। खर्च भी ज्यादा आता है। मौका लगे तो मेरे पत्र का सारांश पू० बापू से कह देना।

बापू जेल नहीं भेजेंगे तो नेपाल जाने का विचार कर रहा हूं। पैदल-भ्रमण का उत्साह व इच्छा बढ़ती जा रही है। रेल व मोटर की यात्रा का उत्साह कम होता जा रहा है। कैलास, मानसरोवर भी जाने का मन होता है। देखें क्या होनेवाला है।

जमनालाल का आशीर्वाद

उमा अग्रवाल के साथ--

: १४३ :

वम्बई, ८-७-३७

पू० काकाजी,

सादर सविनय प्रणाम ।

अभी आपका भेजा हुआ कमलनयन के नाम का तार मिला ।

तार मैंने मां को सुना दिया है। अभी तो कमल के सामान की ही तैयारी हो रही है । उसका मुख्य सामान तो करीब सब तैयार हो गया है। थोड़ा-बहुत और रहा है।

वर्धा से आते हुए रेल में कमलनयन की वातों में दिन वहुत जल्दी व मजे में कट गया। मां को तो खूब हंसाता रहा। पू० केशवदेवजी लेने आ गए थे। उनके आग्रह से माटुंगा में ही ठहरे। कमल तो नहा-धोकर दुकान पर आ गया था। हम आज सुवह यहां दुकान पर ही आ गए हैं।

अभी पू० राजेन्द्रवावू, वल्लभभाई, मणिवेन और मीरावेन, यहां कमल से मिलने आये थे। आधे घंटे के करीव वैठे। हंसी-मजाक करते रहे। वल्लभभाई पू० मां को कहते थे कि क्यों लड़के को विगाड़ने भेज रहे हो। अगर थोड़ा इधर-उधर घूमघाम कर ३-४ महीने में आ जावे तो कोई हरकत नहीं, पर यदि वहां रहेगा तो फिर घर के काम का नहीं रहेगा, निकम्मा हो जायगा। यहीं दुकान पर रखो और व्यापार का काम सिखाओ। कमल से भी यही कहते रहे; पर वह थोड़े ही अपनी वात से अव हटनेवाला है।

अभी तो हम सब जल्दी में हैं। पर कल कमल के जाने के वाद तो वहुत सूना-सूना-सा लगेगा ।

आपकी बदमाश

ओम्

: १४४ :

मोरांसागर (जयपुर जेल)
होली, ५-३-३९

चि० उमा,

तुम्हारा विना तारीख का पत्र मिला। तुम अभ्यास ठीक करती हो यह मालूम हुआ। तुमने लिखा कि अवके वेड़ा पार है, तो तुम्हारा तो सदैव ही वेड़ा पार रहता है। और मेरा आशीर्वाद तो तुम्हारी भलाई में रहता ही है। भलाई परीक्षा पास होने में है या नापास होने में, इसका अभी पूरी तौर से समाधानकारक फैसला मैं नहीं कर पाया हूं। 'जयपुर स्टेट प्रिजनर' की तो कई वातें हास्य-विनोद से भरी हुई हैं। तुम्हारे भाग्य में वह आनंद नहीं है। तुम्हारी परीक्षा समाप्त हो जाने पर लंबा पत्र लिखना। इंदू (गुणाजी) राजी होगी।

उषा आई है क्या? वजाजवाड़ी के मालिकों को (रहनेवालों को) मेरा प्रणाम, वन्देमातरम्, आशीर्वाद वगैरे कहना। कभी-कभी विना इच्छा ही सवोंकी याद तो आ ही जाती है। खास कर 'घनचक्कर क्लव'[1] वालों की। श्रीकिशोरलालभाई, गोमती बहन के मोटे होने की थोड़ी-वहुत भी आशा है क्या? कम-से-कम अगली होली तक! तपास करके या किसी अच्छे ज्योतिषी से पूछकर लिखना।

तुम्हारे मास्टरों से, पूज्य काका साहव आदि से मेरी ओर से होली मनाना।

---

[1] श्री जमनालालजी के छोटे पुत्र रामकृष्ण व उसके विद्यार्थी साथियों ने मिलकर बजाजवाड़ी में खेलने के लिए एक क्लब स्थापित किया था। उसका नाम उन्होंने 'घनचक्कर क्लब' रखा। शुरू-शुरू में तो उसमें वालीवाल, फुटबाल, हाकी, क्रिकेट आदि खेल हुआ करते थे। फिर धीरे-धीरे राजनैतिक नेताओं के भाषण आदि भी होने लगे। इन सब नेताओं की प्रेरणा से धीरे धीरे वहां सूत-कताई और पास-पड़ौस के गांवों में जाकर ग्राम-सफाई, शिक्षा आदि का काम भी उसके सदस्यों ने जारी किया। व्यक्तिगत सत्याग्रह और सन १९४२ के 'भारत छोड़ो' आंदोलन में इसके कई सदस्यों ने हिस्सा लिया और कई जेल भी गये।

चि० झेवू, विच्छू व गौतम को हलके से थप्पड़ लगाना। खूब ऊधम मचाते होंगे? तुमसे ज्यादा शरारती कौन होगा?

जमनालाल का आशीर्वाद

: १४५ :

मोरांसागर, १५-३-३९

चि० उमा,

तुम तो परीक्षा की तैयारी में मस्त होगी। तुम्हारी मां के दो पत्र ता० ७ व ८ के विट्ठल के पत्र में भेजे हुए, व चि० कमला का ७-३ का पत्र अलग से मिले। इस समय तुम्हारी मां कहां है? मालूम न होने से तुम्हें ही पत्र लिख रहा हूं। मेरा मन व स्वास्थ्य ठीक है, कमला से कह देना। उसे तो डर है कि मेरा समय अकेले में कैसे कटता है? और मेरी कठिनाई यह है कि मुझे समय बहुत कम मिलता है। दिन व रात बहुत अच्छी तरह बीत जाते हैं। इसके कारण कभी-कभी तो गुस्सा भी आता है कि दिन क्यों इतने जल्दी बीतते हैं। क्योंकि आजकल ११ तारीख से रोज अखबार मिल जाते हैं। दूसरे 'सर्वोदय' व किशोरलालभाई की अन्य पुस्तकें पढ़ता रहता हूं। वे बहुत विचार करने योग्य होती हैं, जिन्हें मैं पूरा ही नहीं कर पा रहा हूं। इन दिनों न तो शतरंज खेलने का समय मिलता है न उर्दू पढ़ने के लिए। सोने के घंटे भी कम कर दिए हैं। पहले ५-६ के बीच उठता था, अब ४-५ के बीच। मुझे तो अब इससे भी ज्यादा एकांत में रहने की इच्छा होती है। बोलना बहुत कम कर रखा है। कई बार तुलसी रामायण चर्खा कातते ही सुननी पड़ती है। मानसिक आनंद का सुख जो यहां मिला है वह इन वर्षों में तो मुझे कभी मिला ही नहीं। अब यही डर लगता है कि यहां शायद ज्यादा दिन रहने को नहीं मिलेगा। कम-से-कम बारह महीने मिल जाते तो अच्छी तरह से शांति मिल जाना संभव मालूम देता था। तुम्हारी मां वगैरे को यह सूचना भेज देना। विट्ठल राजी है। उसे तुम्हारी मां का पत्र मिल गया है।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १४६ :

मोरांसागर, २६-४-३९

चि० उमा,

तुम्हारा १७-४ का पत्र मिल गया था। कमल से तुम्हारे बारे में थोड़ी बात हो सकी। जब मैं स्वतंत्र होऊंगा और कुछ समय तक तुम मेरे साथ रहोगी, तभी अधिक विचार व खुलासा हो सकेगा।

तुम कोई जवाबदारी का काम करोगी तो मुझे तो खूब खुशी व सुख मिलेगा। मुझे तो आशा है कि तुम यह जरूर कर सकोगी। तुम्हारे कार्य का कोई ध्येय निश्चित हो जाय तो फिर जितना समय तय हो उस मुताबिक शिक्षण व अनुभव की व्यवस्था करनी ठीक रहेगी। मैं तुम्हारे विचार के लिए कुछ सूचनाएं देता हूं।

१. किसी संस्था—जैसे महिलाश्रम वगैरा (स्त्री-जाति के उपयोगी) का जवाबदारी का कार्य करना।

२. मेरे साथ रह कर मेरी देखरेख व पत्र-व्यवहार आदि का कार्य करना।

३. ग्राम्य-जीवन का कार्य करना हो तो आशा बहन या प्रेमा बहन कंटक के पास या विनोबा के पास रहकर कार्य करना व सीखना।

४. अच्छा साथी मिल जाय तो विवाह करके दोनों मिलकर आदर्श गृहस्थ-जीवन के उपयोगी बनना।

फिलहाल तो मेरी राय यही थी कि अगर गर्मियों से न घबराती हो तो कलकत्ते से वापस आने के बाद तुम व शांताबाई जयपुर राज्य में घम कर स्त्री-जाति की स्थिति व यहां के रीति-रिवाज आदि से वाकिफ हो जाओ। वनस्थली कुछ दिन रहकर बाद में जंयपुर, सीकर, रामगढ़ वगैरा में या लोसल में गुलाबबाई के पास कुछ समय रहो।

मेरा यहां सब ठीक चल रहा है। श्रीआशा बहन व तुम्हारे मास्टरजी आदि को वंदेमारतरम् कहना। इंदू अपने घर गई होगी। कलकत्ते गई हो तो वहां के पूरे समाचार लिखना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १४७ :

महिलाश्रम, वर्धा, ८-१२-३९

पू० काकाजी,

सादर प्रणाम ।

आपका ता० २ का खत और पूज्य किशोरलालभाई के खत की नकल मिली । रामकृष्ण के अभी तक के पर्चे ठीक हुए हैं । मेरा अभ्यास ठीक चल रहा है । मेरी परीक्षा मार्च की पहली तारीख को या दूसरे सप्ताह से शुरू होगी । निश्चित तारीख मालूम होते ही लिखूंगी ।

शादी तो अब कभी-न-कभी करना ही है । तब वह इस साल ही करना उचित होगा । पर परीक्षा के पहले करना भी नहीं है । मार्च के अंत या अप्रैल के शुरू में ठीक रहेगा, ऐसा मेरा ख्याल है । फिर मार्च में कांग्रेस की तारीखों का ख्याल तो रखना ही होगा । परीक्षा पूरी होगई तो मैं भी कांग्रेस में जाऊंगी न ? तीन साल से कांग्रेस में जा नहीं सकी । परीक्षा के कारण कांग्रेस छोड़नी पड़ी तो कोई बात नहीं, लेकिन शादी, जो कभी होने ही वाली है, (और कम से कम मेरी शादी जो मेरे वगैर हो ही नहीं सकती) के लिए इतना बड़ा त्याग नहीं किया जा सकता । वह अनैच्छिक भी होगा । आशा है आप भी इससे सहमत होंगे ।

दूसरे इसमें एक विचारणीय बात और है । अब श्रीप्रेमनारायणजी का संबंध हो गया है । सगाई मैंने पहले कर ली तो अब शादी का 'फर्स्ट चांस' तो हमारी भावी भाभी को ही देना चाहिए । उस हालत में मेरे लाड़-प्यार अधिक होंगे, वरना नये होने पर भी पुराना कहलाना पड़ेगा । और बाद में जाने पर मुझे जाते ही एक समान स्थिति वाली सहेली मिल जायगी । ऐसी कई बातें हैं । इसमें यदि कोई गैर-फायदा है तो इतना ही कि मुझे वह शादी देखने को नहीं मिलेगी । सो अधिक लाड़-चाव करवाने हों तो उसके लिए इतना त्याग करना ही चाहिए ।

वहां, कमल, राहुल, मुन्नी के आ जाने से खूब चहल-पहल रहती होगी । राहुल ने आपसे दोस्ती कर ली है क्या ? बहुत तंग करता होगा । उसे एक चपत । पू० मां तो अपने पोते-पोती में ही बावली होगी । उसे भी राहुल खूब सताता होगा । उसे मेरे प्रणाम ! कमल, भाभी, मदालसा,

लटर-पटर और व्रिज-समाज को भी प्रणाम ।

श्रीआशाबेन के लड़के आनंद की दुखद खबर मिली होगी । यह एक बहुत ही अकस्मात घटना हो गई । २।। बजे तक लड़का अच्छी तरह से खेल रहा था । फिर एकदम आया और बोला कि मां पेट दुखता है । उसे लिटाया गया । फिर एक उल्टी हुई और कंपकंपी आकर १५–२० मिनट के भीतर खतम हो गया । आदमी डा० सुशीलाबहन को लेकर पहुंच भी न सका । सिविल सर्जन आदि किसी को भी कोई कारण समझ में न आया । नायकम्‌जी यहां नहीं थे । इससे उसे दूसरे दिन सुबह तक रखा । आशाबेन के घर के सामनेवाली टेकड़ी पर उसकी दाह-क्रिया हुई । पूज्य बापू ने अपने हाथ से अग्नि संस्कार किया । वर्धा से अपने सब लोग पहुंच गए थे । एन्ड्रूज साहब, डा० ज़ाकिर हुसैन और महादेवभाई ने अलग-अलग प्रार्थना की । वह भाग्यवान बच्चा सब धर्मों की प्रार्थनाओं के बीच विदा हुआ ।

आनंद की मृत्यु का कारण बाद में मालूम हुआ । परसों सुबह ही उसका दाह किया था । उसी दिन शाम को आशाबेन को थोड़ा बुखार आ गया । उन्होंने कुनैन की गोलियों की शीशी ढूंढ़ी । वह बाहर एकदम खाली पड़ी मिली । तब आशाबेन की समझ में आया कि आनन्द की मृत्यु कुनैन की गोलियां खाने से ही हुई । आनंद ने २।। बजे आशाबेन से पूछा था कि मां इनमें से गोलियां खाऊं । उन्होंने कहा कि तुम्हें बुखार थोड़े ही है, तुम मत खाओ । फिर वे अपने काम में लग गईं । उधर उसने बाहर जाकर शीशी की सारी गोलियां, जो करीब २५-३० थीं, खा डालीं । वे शूगर कोटेड थीं । बस उसीके १५ मिनट बाद वह चला गया । ईश्वर की यही इच्छा रही होगी । मदालसा को आप उचित समझें तो यह पत्र पढ़ा दें । बस अब खतम करती हूं । नींद आती है । पू० दादीजी यहां कल आवेंगी । पू० शांताबाई आ गई हों तो उन्हें प्रणाम ।

आपकी नटखट पुत्री,
ओम्

रामकृष्ण बजाज के नाम—

: १४८ :

नासिक रोड सेंट्रल जेल,
२०-८-३०

चि० रामकृष्ण,

तुम्हारा पत्र पढ़कर बहुत खुशी हुई। तुमने जोड़, बाकी, गुणा सीख लिया यह बहुत ठीक किया। अक्षर खूब सुंदर जमाना, स्वच्छता सीखना, प्रेम करना व सत्य बोलना। सेवावृत्ति खूब बढ़े ऐसी आदत अभी से डालना। तुमको बड़े होकर समाज की व देश की खूब सेवा करनी है। चि० बालकृष्ण (लाट साहेब) से लड़ाई न करके प्रेम के साथ खेलना व रहना। करांची से कितनी अच्छी बातें सीख कर आते हो उस पर से तुम्हारी व चि० कमला और रामेश्वरप्रसाद की भी परीक्षा हो जायगी। मैं खूब आनंद में हूं।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १४९ :

धुलिया जेल,
२३-९-३२

चि० रामकृष्ण,

तुमने उपवास किया, पानी भी नहीं पिया, यह पढ़कर पूज्य बापू के प्रति तुम्हारी श्रद्धा देख सुख मिला। तुम्हें तो अब पू० विनोबा या नाना से पू० बापू के विचार पूरी तौर से समझकर उस माफिक आचरण करने का पूर्णतया उद्योग करना चाहिए। उसीमें तुम्हारा कल्याण व तुम्हारे जीवन की उन्नति है। तुम्हारी मां मोहवश प्रेम, लाड़-चाव, खाने-पीने आदि का करे तो तुम्हें नम्रता से उसे समझा देना चाहिए। यहां जेल में भी ३-४ छोटे लड़के, कोई १२-१३ वर्ष के, बहुत ही उत्तम विचार व

आचरणों के देखने में आये। तुम उनसे भी उत्तम बन सकते हो, अगर तुम और तुम्हारी माता चाहें तो।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १५० :

वर्धा,
१३-७-३३

चि० रामकृष्ण,

मेरा पहला पत्र मिला होगा। तुम, जैसा कि डा० मेहता और श्री-फ्रेड डिसोज़ा कहते हैं, ज्यादा आराम लेने का पूरा खयाल रखना। इसीसे तुम जल्दी अच्छे होगे और डाक्टर को भी शिकायत नहीं रहेगी। नहीं तो डा० कहेंगे कि मैं क्या करूं इसने आराम नहीं किया। तुम्हें डा० मेहता का सुंदर सर्टिफिकेट प्राप्त करना होगा। उससे मुझे खूब सुख मिलेगा।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १५१ :

बिन्सर, अल्मोड़ा,
१७-९-३५

चि० रामकृष्ण,

तुम्हारी परीक्षा कबसे प्रारंभ होगी, यह तुमने नहीं लिखा। मेरा खयाल है, शायद ता० २३ से प्रारंभ होती है। परीक्षा के समय बगैर घबराये शांति से व उत्साहपूर्वक प्रश्न-पत्रों के जवाब लिखना। जितना जानते हो उतना ही लिखना। और जो प्रश्न आसानी से हल कर सकते हो उन्हें ही पहले लिखना। आशा है, तुम सफलता प्राप्त करोगे।

मैं इस मास के अंत तक वर्धा पहुंच सकूंगा। तुम्हारे लिए जामिया मिलिया के प्रिंसिपल डा० ज़ाकिर हुसैन साहब ने विदेश की बहुत सारी टिकटें दी हैं। वहां आने पर दूंगा। यहां सब प्रसन्न हैं। चि० मदालसा का वजन बढ़ा है। सब लोग तुम्हारे लिए शुभकामना भेज रहे हैं।

परीक्षा में पास होने के लोभ से कोई नकल (कापी) वगैरे करने का

खयाल विलकुल नहीं करना। सच्चाई के साथ पास हो गए तो ठीक है। अगर पूरी तैयारी नहीं हुई हो, तो फिर पास होने में क्या लाभ है ? तुम हिम्मत से और सावधानी से बग़ैर घबराये परीक्षा देना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १५२ :

जयपुर स्टेट कैदी,
२९-५-३९

चि० राम,

तुम्हारा ता० २४-४ का पत्र आज मिला। तुम्हारी आंख अब ठीक रहती होगी। दवा करते रहना और ठंडे पानी से साफ करते रहना। चि० उमा आखिर नापास हो गई। इसमें मास्टरजी का तो बिलकुल दोष नहीं है। वह मेहनत ही नहीं कर पाती थी। एक तरह से तो अच्छा ही हुआ। तुम्हारी मां यहां आ गई है। मुझसे रोज मिलने की परवानगी मिली है।

श्रीछोटूभाई भट्ट को व उनकी पत्नी को मेरा वन्देमातरम् कहना। मैं इन्हें देखूं तो पहचान लूं। ऐसे चेहरा ध्यान में नहीं आ रहा है। इन्हें तुम्हारे लिए ज्यादा कष्ट व खर्च करना न पड़े, इसका पूरा खयाल रखना।

श्रीजवाहरमलजी महिलाश्रम में रहकर जवाबदारी उठाने को तैयार होंगे तो मुझे खुशी ही होगी। साथ ही मेरी चिंता भी कम हो जायगी। मेरी तो इच्छा है कि अगर संभव हो तो जवाहरमलजी, श्रीमन्नारायण, काशीनाथजी ये तीनों मिलकर संस्था को पूरी तौर से संभाल लें। दूसरे किसी की मदद चाहें तो भले ही लेते रहें। परंतु यह तो तभी हो सकता है जब वे स्थायी तौर से वर्धा रहकर महिलाश्रम की ही पूरी जिम्मेदारी लेने का निश्चय कर लें। वे प्रसन्नता व उत्साहपूर्वक जो निश्चय करेंगे, वही शांति देनेवाला होगा।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १५३ :

जयपुर-स्टेट कैदी,
३-८-३९

चि० राम,

तुम्हारा पत्र पहले मिल गया था। कमल वहां पहुंच ही गया है। मेहमानों का पूरा खयाल रखना। तुम व कमल मिलकर ठीक व्यवस्था कर लेना। इस मामले में तुम्हारे व मदालसा के भरोसे ज्यादा निश्चित रह सकता हूं।

तुम्हारी पढ़ाई ठीक चलती होगी। पढ़ाई की कैसी व्यवस्था की है, यह मुझे फुरसत से लिख भेजना। कमल से कहना कि कल जयपुर महाराज ने एक वाघ मारा है; और भी मारने का विचार हो रहा है। शिकारखाने व जंगलात के कारण जो भयंकर हानि व कष्ट यहां के लोगों को वहुत समय से भुगतना पड़ रहा है, संभव है वह कम हो जाय। यहां की परिस्थिति के मेरे व सारे समाचार तो कमल ने कहे ही होंगे। तुम चिंता न करना। श्रीकिशोरलालभाई का पत्र पढ़कर उन्हें ठीक से पहुंचा देना। भूल नहीं करना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १५४ :

जयपुर,
२८-८-४०

चि० रामकृष्ण,

तुम्हारा ता० २६-८ का पत्र पढ़ा। मोटर साईकिल लेने की तुम्हारी इच्छा मालूम हुई। मेरा खयाल है कि पहले पुरानी लेकर अच्छी तरह चलाना सीख लेने पर नई लेना ठीक होगा। एकदम ५००) रु० नई में लगाना मुझे नहीं जंचता। फिर भी इस बारे में तुम कमल से पूछ कर तय कर लेना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १५५ :

शिमला,
८-८-४१

चि० राम,

तुम्हारा स्वास्थ व मन ठीक होगा। उत्साह कम नहीं हुआ होगा। वजन कितना है? वापस आने की तारीख क्या निश्चित हुई है? पढ़ाई ठीक हुई होगी। तुम्हें समय मिले तो मेरे जेल से आने के बाद के वहां के हाल-चाल का एक सविस्तार पत्र मुझे लिख भेजना। तुम्हारी तो प्रायः ही याद आया करती है। वैसे तो नागपुर-जेल के मित्रों की भी याद आती रहती है। मुझे तो शायद बापूजी भी अब जल्दी जेल नहीं भेजेंगे। मैं भी ज्यादा कोशिश नहीं करूंगा। जेल जाकर अधिकारियों पर बोझरूप होना मैं भी पसंद नहीं करता। तुम्हारा विशेष संबंध किन-किन से बढ़ा?

पूज्य विनोबा से बात हुई। उन्हें तो तुम्हारे व्यवहार आदि से संतोष था। मैंने सुना कि वह तुमसे विशेष प्यार करते हैं। पढ़ाने के वास्ते समय भी खूब देते हैं। तुम सचमुच भाग्यवान हो। अन्य नवयुवकों को तुमसे ईर्ष्या होनी चाहिए।

मेरा वजन अंदाज १५४—१५५ है। मेरा स्वास्थ्य व मन ठीक है। पू० राजकुमारी बहन खूब प्रेम से संभाल रखती है। खानपान आदि का बराबर देखती रहती है। रोज़ रात को कुछ समय शतरंज या कालीराणी या ब्रिज का खेल भी होता है। इस परिवार का वर्णन चि० मदू के पत्र में है। जानना चाहो तो जान लेना। मेरा अभी यहां ता० १५—८ तक तो रहना है ही। बाद में शायद देहरादून पं० जवाहरलालजी से मिलने जाऊं।

श्री गुप्तजी, बियाणीजी, पूनमचन्दजी वगैरे सब मित्र राजी होंगे। मैं इन्हें याद करता रहता हूं, यह उन्हें कहना। जेल सुपरिंटेंडेंट को भी।

जमनालाल का आशीर्वाद

पत्र-व्यवहार

भाग पांच : खंड दूसरा

गुरुजनों तथा
अन्य संबंधियों के साथ



श्री बच्छराजजी बजाज के नाम—

: १५६ :

॥ श्री गणेशजी ॥

सिद्ध श्री वर्धा शुभस्थान पूज्य श्री बच्छराजजी रामधनदास से चि० जमन का चरण-स्पर्श। सर्वत्र श्री लक्ष्मीनारायणजी महाराज सदा सहाय हैं समाचार एक निगाह करें। आज आप मुझपर निहायत नाराज हो गए, सो कोई चिंता नहीं। श्री ठाकुरजी की मर्जी। मैं गोद लिया हुआ था तब आपने ऐसा कहा। पर आपका कुछ भी कसूर नहीं है। कसूर हैं उनका, जिन्होंने मुझे गोद दिया।

आपने कहा, नालिश करो, सो ठीक। पर मेरा आप पर कोई कर्ज तो नहीं है। आपका कमाया हुआ पैसा है। आपकी खुशी हो सो करें। मेरा आप पर कुछ अधिकार नहीं है।

आज तक मेरे बाबत या मेरे लिए जो कुछ आपका खर्च हुआ सो हुआ। आज के बाद आपसे एक छदाम कौड़ी भी मैं लूंगा नहीं और न मंगाऊंगा ही। आप अपने मन में किसी किस्म का खयाल न करें। आपकी तरफ आज से मेरा किसी तरह का हक नहीं रहा है। श्री लक्ष्मीनारायणजी से मेरी अर्ज है कि आपका शरीर ठीक रखें और आपको अभी बीस-पचीस वर्ष तक कायम रखें। मैं जहां जाऊंगा, वहीं से आपके लिए ठाकुरजी से इसी प्रकार विनती करता रहूंगा। मुझसे आज तक जो कसूर हुआ वह माफ करें।

आपके मन में यह हो कि सब पैसों के साथी हैं, और यह भी पैसे के लिए सेवा करता है, सो मेरे मन में आपके पैसे की चाह बिलकुल नहीं है। और ठाकुरजी करेंगे तो आपके पैसे की भविष्य में भी मन में आयेगी नहीं। क्योंकि मेरी तकदीर मेरे साथ है। और पैसे मेरे

पास हों भी तो मैं क्या करूंगा। मुझे तो पैसों के नजदीक रहने की बिलकुल परवा नहीं है। आपकी दया से श्री ठाकुरजी का भजन-सुमरन जो कुछ होगा सो करूंगा, जिससे इस जन्म में सुख पाऊं और अगले जन्म में भी। आप प्रसन्नचित्त रहें। किसी किस्म की फ़िक्र न करें। सब झूठे नाते हैं। न कोई किसी का पोता है, न कोई किसी का दादा। सब अपने-अपने सुख के साथी हैं। सव झूठा पसारा है। आप अभी तक माया-जाल में फंस रहे हैं। मैं आज से आपके उपदेश से माया-जाल से छूट गया। आगे श्री भगवान संसार से वचावें।

अपने मन में आप इस तरह कदापि न समझें कि हमारे पर नालिश-फरियाद करेगा। मैंने अपनी राजी-खुशी से टिकट लगाकर सही कर दी है कि आप पर अथवा आपकी स्टेट, पैसे, रुपये गहना-गांठी आदि किसी सामान पर आज से मेरा कतई हक नहीं रहा है और मेरे हाथ का न कोई कर्ज वाकी है। किसी का एक पैसा भी देना वाकी नहीं है।

अन्य समाचार कुछ हैं नहीं। समाचार तो वहुत हैं, पर मेरे से लिखे नहीं जाते।

संवत् १९६४ मिती वैसाख कृष्ण २, मंगलवार। पूज्य श्री १०५ दादाजी श्री बच्छराजजी से जमन का चरणस्पर्श।

वहुत वहुत सम्मान से। आपकी तरफ मेरा कोई रीत का लेन-देन नहीं रहा है। श्री ठाकुरजी के मंदिर का काम वरावर चलावें। आपसे दान-धर्म जो वने सो खूव करते जावें। ब्राह्मण साधु को गाली विलकुल न दें। और किसी को भी हाथ का उत्तर दें, मुँह का उत्तर नहीं। ज्यादा क्या लिखूँ? इतनें में ही समझ लें।

और मैं आपकी कोई चीज साथ नहीं लूंगा। सव यहीं छोड़ जाता हूं। सिर्फ अंग पर कपड़े पहने हूं।

(राजस्थानी से अनूदित)

श्री कनीरामजी बजाज की ओर से—

: १५७ :

सीकर,
२०-११-२७.

चि० जमनालाल से कनीराम का आशीष।

चि० भैरूलाल की सगाई सूरजमलजी नारनोली जयपुर में कराते हैं। सगाई का रुपया २३००) ठहरा बतलाते हैं। रुपया १३००) तो अभी देना पड़ेगा और एक हजार रुपया दो या तीन वर्ष में, जब विवाह करें, तब देना पड़ेगा। लड़की ८ साल की है। वे लोग वहीं जयपुर में हैं। विवाह तीन-चार वर्ष बाद करेंगे। तुम्हारे आने से ही कहीं करने का विचार होवे तो हमें लिख देना। दो वर्ष के अंदर-अंदर विवाह कर देवेंगे, नहीं तो उनका घर बंधता हो तो बंध जाने दीजिये। तुम पिलानी जाओ तब कुछ समय यहां जरूर ठहरना।

: १५८ :

सीकर,
(मिला ४-५-२८)

चि० जमनालाल, जोग लिखी सीकर से कनीराम का आसीस बांचना। अपरंच तुम्हारा कागद आया। तुमने बद्रीनारायणजी जाने का मना लिखा सो ठीक है। बाकी मेरा विचार तो जाने का ही था। सारा सामान भी बांध-बूंध लिया था। और कासी-का-बास से विदा होकर यहां आ भी गया था। जाना तो ईश्वर के हाथ है, पर मेरा तो पक्का विचार चलने का ही है। तुम चल सको तो अब भी २-४ दिन ठहर कर चल सकते हैं। नहीं ही जा सको तो फिर ठीक। तुम्हारे साथ के बिना हमारा तो निभना मुश्किल है। शरीर में सामर्थ्य कम ही है। और आगे ऐसी ही रहने वाली है। अगले साल तो और भी कम ही होवेगी। फिर आगे का

किसे पता है ? चल सकें तो अब ही चलें, नहीं तो फिर हमारा तो जानां मुश्किल है। शरीर के लिए दवा-पानी का बंदोबस्त यहां कर ही लिया है; और भी कर लेंगे। बाकी यात्रा में तो पानी का ही विकार ज्यादा होता है, तो पानी गरम करके पिया जाय तो वह डर भी नहीं रहता। सो हमारी इच्छा तो चलने की पूरी है। तुम चल सको तो तुरंत तार देना। नानू जाट साथ में चलने को तैयार है। और भी एक आदमी साथ ले लेंगे। लछमन रसोइये के पास कल आदमी भेजा है। उसका अभी कोई समाचार नहीं आया है। आनेपर पता पड़ेगा। श्री बद्रीनारायणजी न जाना हुआ तो बाद में साबरमती आने का विचार करेंगे।

(राजस्थानी से अनूदित)

: १५९ :

सीकर,
२५-५-२८

चि० जमनालाल से कनीराम का आशीष।

तुम्हारा पत्र साबरमती से लिखा हुआ मिला। पढ़कर समाचार मालूम किये। तुमने लिखा कि चि० राधाकृष्ण को महीना-दो के लिए यहां भेज दो सो ठीक है। परंतु मेरे शरीर में किस तरह से तकलीफ रहती है यह बात मैं ही जानता हूं। बाकी इसके द्वारा सेवा करने से दुख-सुख पाकर दिन निकालता हूं। भाई भगतराम को कल बुलवाया था। आज वह यहीं पर है। उसको पूछा कि तुम पांच-दस दिन हमारे पास रह सकते हो क्या, तब उसने कहा कि वह एक-दो दिन से ज्यादा नहीं रह सकता। इसलिए बिना अपने आदमी के सेवा नहीं हो सकती। तुमने लिखा कि दूसरे आदमी को भेज दूं। परंतु दूसरे आदमी से काम नहीं चल सकता।

पंडित देवीसहायजी को १५) महीना, छः महीने, तक शुरू करने के लिए लिखी, सो कर देंगे। आने के बारे में लिखा, सो ठीक है। परंतु धूप यहां और वहां दोनों जगह ही पड़ती है। कहीं ठंड की जगह जाओगे तब विचार करेंगे। मास्टर का स्वर्गवास हो गया, सो पांच-चार रुपया लगा कर पांच-सात आदमियों को भोजन करवायेंगे। ज्यादा करेंगे नहीं।

तुमने लिखा कि तुम्हारा स्वभाव वहुत क्रोधी हो गया, सो ठीक है। बाकी रात-दिन जिस आदमी के तकलीफ रहे, उसकी इच्छानुसार काम नहीं हो तव कहना ही पड़ता है। यह तो भाग्य की बात है कि मुझे तकलीफ लिखी है। सो मैं सहन करता हूं। तुम्हें किसी प्रकार का दोष नहीं है। मैं अपने किये का फल भोगता हूं। और बोर्डिंग की दुकान की मरम्मत कराने की लिखी सो मरम्मत करवानी शुरू कर दी है। पुराने मकान तथा कमरे के चारों तरफ की मरम्मत हो गई है और कुछ हो रही है। अपने पुराने मकान के सामने कायस्थों की जगह में कुंआ होना है, सो आस-पास के सभी लोगों ने एक-एक सौ, दो-दो सौ रुपया मिलाकर इकट्ठा किया है, अपनी तरफ से क्या देना है, सो लिखना। कुआं होने से वहुत ठीक रहेगा।

श्री गोपीकिशनजी बजाज के नाम—

: १६० :

पटना,
३०-६-३४

पू० गोपीकिशनजी

आपका तारीख २७-६-३४ का और उसके साथ चि० हरिकिशन का उसी तारीख का पत्र मिला।

मुकदमे का फैसला होने के बाद आप और पूसाराम जब-जब मुझसे मिले हैं, मैंने आप लोगों से हर दफा साफ-साफ यही कहा है कि इस फैसले से आप लोगों का समाधान न हुआ हो और आप लोगों को अपील करने से जरा भी आशा हो तो आप लोग अपील करके जरूर अपना समाधान कर लें। वैसे अपील करने का आपको अधिकार है; मेरी खुद की भी आपको यही सलाह है कि आपको अपील कर देना चाहिए, जिससे बाद में मन के अंदर इस बात का विचार न रह जाय कि अपील नहीं की।

यही बात मैंने चि० हरिकिशन से आपको कहने को कही थी। आपके पत्र के साथ चि० हरिकिशन का जो पत्र आया है उससे पता चलता है कि उसने अपनी भूल नहीं स्वीकार की है। इसलिए आप चि० हरिकिशन से कह दीजिये कि वह अपील अवश्य कर सकता है। यदि इस फैसले से उसका समाधान नहीं हुआ है तो अपील करना उसका फर्ज हो जाता है।

यह बात मैं कई दफा आपसे कह चुका हूं और फिर से यहां साफ कर देना चाहता हूं कि मैं आपका या चि० हरिकिशन का अपनी इस्टेट पर किसी प्रकार का हक नहीं समझता हूं, और न पहले कभी ऐसा समझता था और न भविष्य में ही ऐसा समझ लेने की कोई आशा है। अगर मैं अपनी इस्टेट पर हक समझता तो मुझे इस मुकदमे को लड़ने की जरूरत नहीं थी। मुझे इस बात को लिखना इसलिए जरूरी मालूम देता है कि जिससे आप या चि० हरिकिशन किसी प्रकार की गलतफहमी या भ्रम पैदा न कर सकें। मैंने आपसे साफ-साफ यह कह दिया था कि जबतक

अपील की मियाद वाकी है मैं आप लोगों से इस वारे में वात नहीं करना चाहता। मैंने आपको यह भी वताया था कि आप और चि० हरिकिशन की ओर से मेरे प्रति जो दुर्व्यवहार हुआ है उसका कारण यही है कि मैंने भूतकाल में आप लोगों को कुटुंवी समझकर अड़चन के समय मदद दी। आप लोगों ने उसका खूव दुरुपयोग किया और मुझे परेशान किया। इन वातों का खयाल करते हुए तो मैं अव आप लोगों से विलकुल किसी प्रकार का व्यवहार नहीं रख सकता। परंतु मैं मानता हूं कि मनुष्य से भूलें हुआ करती हैं। मनुष्य का कर्तव्य है कि यदि भूल करनेवाले को अपनी पिछली भूलों पर सच्चे दिल से पश्चात्ताप हो तो वह उसे क्षमा कर दे और उसके साथ किये गए अन्याय को भूल जाय। जव मुझे ऐसा पता चलेगा कि आप लोगों ने अपनी गलतियां सच्चे दिल से स्वीकार करली हैं और आप लोगों को उनके लिए पश्चात्ताप है तो मैं उन्हें भूल जाने का प्रयत्न करूंगा।

इससे आप लोग यह न समझें कि मैं आप लोगों को अपील न करने का जरा भी लालच देना चाहता हूं। अगर आप ऐसा समझेंगे तो घोखा खायेंगे। आपको मुझसे कुटुंवी होने की हैसियत से किसी प्रकार की आशा नहीं रखनी चाहिए। मनुष्य की हैसियत से मैं आप लोगों के लिए उतना करने को तैयार हूं, जितना दूसरे परिचित लोगों के लिए करने का इरादा रखता हूं। वह यह कि यदि आप, चि० हरिकिशन, उसकी काकी व स्त्री मेरे विचारों तथा मेरी इच्छा के अनुसार अपना जीवन व रहन-सहन वनाने के लिए सच्चे दिल से तैयार होंगे और उनके माफिक तब्दीली कर लेंगे तो मैं उतना इंतजाम करने का प्रयत्न करूंगा जिससे उन लोगों को, जो मेरे संतोष के माफिक जवतक जीवन वितायेंगे, रोटी, पानी की साधारणतौर से तकलीफ न होगी।

आप यह बात अच्छी तरह समझ लेना कि मेरे इस कहने के यह माने हरगिज नहीं हैं कि यदि आप अपील न करेंगे तो मैं ऊपर कहा हुआ इंतजाम कर दूंगा, वल्कि उसके माने यह हैं कि यदि आप में से जो-जो जव-तक मेरी शर्तों के माफिक रहेंगे तवतक ही इस इंतजाम के करने की मैं कोशिश करूंगा।

आशा है इस पत्र के वाद कोई गलतफहमी न रह गई होगी। इसकी एक नक़ल चि० हरिकिशन के पास भेजता हूं; कारण कि ये सब वातें उस पर भी लागू पड़ती हैं। यह पत्र चि० हरिकिशन की काकी को अवश्य पढ़ा दें और उसकी स्त्री के पास इसका सारांश या इसकी नकल भेज दें।[1]

जमनालाल वजाज का वंदेमातरम्

---

१. श्री बच्छराजजी की स्वार्जित संपत्ति के वारिस उनके पोते जमनालालजी हुए। इस पर बच्छराजजी के अन्य दो भाइयों की गोद गये श्रीगोपीकिशनजी तथा हरिकिशनजी ने अपने हक का कोर्ट में दावा किया था। कोर्ट का फैंसला जमनालालजी के हक में हुआ। उपरोक्त पत्र इसी संबंध में है। श्रीगोपीकिशनजी गोद के रिश्ते में जमनालालजी के चाचा और हरिकिशनजी चचेरे भाई होते हैं।

श्री धर्मनारायणजी अग्रवाल की ओर से—

: १६१ :

मैनपुरी,
३१-५-३६

श्रीमान सेठजी,

वन्देमातरम् ।

श्रीमन् ने वर्धा का सब हाल सुनाया । समाज और देश की आप जो सेवा कर रहे हैं उसको विस्तारपूर्वक जानकर बहुत प्रसन्नता हुई । आप जैसे देशसेवियों का जीवन धन्य है । आपने जिस प्यार से श्रीमन् को वर्धा रखा उसके लिए मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूं ।

श्रीमन् तो आप ही का है । आप उससे जो काम लेना चाहें, लें । यदि वह आपकी और देश की कुछ सेवा कर सकेगा तो मुझे खुशी होगी ।

विनीत,
धर्मनारायण

श्री चिरंजीलालजी जाजोदिया के नाम—

: १६२ :

सावरमती,
६-१०-२६

श्रीचिरंजीलालजी,

आपका पत्र और कार्ड मिले। काकडी परसों मिल गई थी।

चि० गोवर्धन वगैरे आ गये हैं। किशनी, कमली राजी-खुशी होंगे। किशनी की यहां आने की इच्छा हो तो उसको भेज देना ठीक होगा। आजकल महात्माजी खुद स्त्रियों और लड़कियों को पढ़ाते हैं, उससे खूब लाभ होता है। किशनी की माता अगर उसे भेजने को तैयार हो तो कोई जवाबदार आदमी के साथ उसे भेज देना। दो मास के वाद ये लोग यहां से वर्धा जानेवाले हैं। उसकी इच्छा होगी तो वर्धा चली जायगी, नहीं तो वापस जावरे आ जायगी।

जमनालाल वजाज का वंदेमातरम्

श्रीडेडराजजी खेतान के साथ—

: १६३ :

लोसल,
२०-२-३२

पूज्य जमनालालजी,

चिट्ठी आपकी सीकर मारफत आई। मुझे दवाई से फायदा है। खांसी तो हाल पूरी मिटी नहीं, दवाई चालू है। खांसी मिटने पर मेरा विचार देश की सेवा करने का है। आपकी तबीयत बहुत अच्छी होगी। कान में अब कोई शिकायत नहीं होगी। चिट्ठी पीछी देना। आपकी तबीयत का समाचार बराबर लिखते रहें। समाचार सारा आपको राधाकृष्ण ने कहा होगा।

आपका,
डेडराज खेतान का प्रणाम

: १६४ :

वर्धा,
७-७-३८

प्रिय डेडराजजी,

आपका ता० ३०-६ का पत्र मिला। चि० पार्वती का विवाह भली प्रकार हो गया था।

सीकर की हालत तो चिंताजनक हो रही है। श्रीलादूरामजी की गिरफ्तारी के बारे में पूरा हाल अभी मालूम नहीं हुआ। मैंने श्री शास्त्रीजी को तार किया था तथा उनका भी तार मेरे पास आगया है।

जमनालाल बजाज के वन्देमातरम्

: १६५ :

लोसल,
२९-७-३८

पूज्य जमनालालजी,

सप्रेम वन्देमातरम्। पत्र आगे दिया था—पहुंचा ही होगा। आशा है आप सकुशल पहुंचे होंगे। इस पत्र में कुछ ऐसे बुलेटिन भेजे हैं जो इधर जयपुर राज्य द्वारा मोटर लारी से गांव-गांव में मुफ्त बांटे जा रहे हैं। इन लारियों में ५-७ जाट रहते हैं और एकाध पुलिसवाले। सुना है ५-४ लारियों द्वारा यह कार्य हो रहा है। हमारे यहां लोसल में भी एक लारी आई थी जिसने बाजार में दूकान-दूकान पर ये पर्चे बांटे थे। इसी तरह दूसरे सभी गांवों में ऐसे ही और किस्म के पर्चे बांटे जा रहे हैं।

पर्चों की भाषा-भाव आदि के लिए क्या लिखना है। यहां पर सब प्रसन्न हैं। आपकी प्रसन्नता सदा चाहिए।

पत्र दें।

आपका,
डेडराज खेतान का वन्देमातरम्

: १६६ :

लोसल,
३-८-३८

पूज्य जमनालालजी,

सप्रेम वन्दे। आपका ता० २८-७ का पत्र यथासमय मिल गया था। समाचार जाने। मैं सीकर कई काम-काज देखने को गया हुआ था। चार दिन रहकर कल वापिस आया हूं। पं० लादूराम की तारीख २ से ८ अगस्त पड़ी हैं। मुझे कमरे में रानीजी साहिबा का आदमी बुलवाने को आया था, तब मैंने श्रीसुलतानसिंहजी को गढ़ में भेजा था। तार आपको खुमानसिंह कामदार के नाम से दिया गया था, सो भी मिला होगा। सीकर की हालत खराब है। लोगों के साथ पुलिस बहुत अच्छा बर्ताव नहीं कर रही है। जगह-जगह पहले की तरह ही पहरा है। सिर्फ

बाहर के मोर्चे उठे हैं। गढ़ व कोठी में तो विशेष पहरा हुआ है। देशी नौकरों को—बहुतों को निकाल दिया है। नौकरी भी अभी किसी देशी मुलाजिम को नहीं दी गई है। किसी देशी को रखा गया है तो उसे ही रखा है जिसने माफी व भूल मंजूर कर ली है—लिखित रूप में।

सी०आई०डी० और पुलिस की मोटरें शहर में बहुत घूमती हैं। विशेष बातें श्रीशास्त्रीजी की ओर से जो आदमी सीकर आया था वह लिखेगा ही। यह भी सुना जाता है कि बहुत से आदमियों पर वारंट निकले हैं। अभी तक किसीको पकड़ा नहीं है। सुना है कि मि० वेब भी आ गए हैं। डाकखाना अभी शहर में नहीं आया है।

जयपुर से निकलनेवाले 'प्रभात' में आपके लिए निकला है कि जमनालालजी को जयपुर की ओर से सोने के गहने दिये गए हैं। यह बात वैद्य प्रह्लादरायजी ने मुझसे कही है कि मैंने पत्र में देखा है। आशा है आपने भी शायद 'प्रभात' देखा हो।

शेष कृपा। पत्र दें।

आपका,
डेडराज का वन्देमातरम्

श्रीसीतारामजी सेकसरिया की ओर से—

: १६७ :

कलकत्ता,
१-७-४१

पूज्यवर,

आपका पत्र यथासमय मिला था। आने-जानेवाले लोगों से मालूम हुआ कि आप इतने दुबले हो गए हैं कि देखकर आश्चर्य होता है। पेट बिलकुल पिचक गया है और शरीर भी बहुत दुबला हो गया है। शरीर दुबला ज्यादा हो गया यह जरा ठीक नहीं है। वैसे वजन घटाने की जरूरत तो थी, पर इतना ज्यादा नहीं। अब वजन कितना है? और कैसा बढ़ रहा है तथा ताकत कैसी है? सब बातें लिखवायें।

क्या किया जाय? विना काम आना न तो आप पसंद करेंगे, न उचित ही है; पर आपको देखने की इच्छा तो बहुत होती है। आप यदि काश्मीर जाते हों तो आपके साथ चलने में सुख का अनुभव करूंगा। कई दिन तक साथ में रहने का मौका मिलेगा। कब जाने का विचार कर रहे हैं। पू० जानकीबाई भी साथ में रहेंगी न? और कौन-कौन होंगे? पू० जानकी बहन की और मेरी जेल में रहना आप स्वीकार करें तो ही आपका बाहर जाना ठीक रह सकता है, नहीं तो थोड़ी-सी तबीयत ठीक होने पर आपके आसपास बहुत लोग जमा हो जायंगे और विश्राम, शांति नहीं मिल सकेगी।

पन्ना तो कल यहां मिलनेवाली है। उसको कई दिनों से बुखार था, यह तो आपको मालूम ही है। कुछ दिन वहां रहने से ठीक हो जावेगी। प्रह्लाद भी दो-एक दिन के लिए आ रहा है। जाते समय आपसे मिलेगा ही।

मैं तो रचनात्मक काम जैसे किया करता था वैसे ही कर रहा हूं। बंगाल में जेल जाने का तो सवाल है ही नहीं। खादी भंडार का काम थोड़ा बढ़ाया है। सेवा-सदन बहुत अच्छा चल रहा है। उसके लिए कन्हैयालालजी लोहिया ने चार-पांच लाख रुपये की जमीन तथा नगदी दिया है। एक

ट्रस्ट भी वन गया है। दो संस्थाएं होंगी—एक तो सेवा-सदन तथा दूसरी वालिका विद्यालय। इन कार्यों में भी समय लग रहा है।

श्रीदेवीप्रसादजी खेतान की स्त्री को मोटर दुर्घटना से भयानक चोट आ गई, पर खुशी की वात है कि वह वच गई। पूरी ठीक होने में करीव दो महीने तो लगेंगे ही। अब चिंता की बात नहीं।

विनीत,
सीताराम का प्रणाम

श्रीलक्ष्मणप्रसादजी पोद्दार के साथ—

: १६८ :

कलकत्ता,

१०-६-३६

प्रिय श्री जमनालालजी,

मैं तथा सावित्री आज सुवह वहुत राजी खुशी पहुंच गए हैं। आप लोग भी सव प्रसन्नतापूर्वक मद्रास पहुंच गए होंगे।

श्रीजानकीदेवी तथा आप जैसे माता-पिता को सावित्री को सौंप कर मैं अपने को निश्चिन्त तथा अति सुखी मानता हूं। यह सावित्री का परम सौभाग्य है कि उसे आप लोग जैसे माता-पिता मिले। अगाध प्रेम से आपके वताये हुए रास्ते पर यदि सावित्री चले तो वह अपने जीवन को परम सुखी तथा आदर्श बना सकती है।

यहां के एक पंडितजी से मैंने पूछ लिया है। ३० जून का सावा वहुत अच्छा निकलता है। आप चि० कमलनयन को लिख सकते हैं कि वे जून के प्रथम सप्ताह तक आराम से आ सकते हैं।

लक्ष्मणप्रसाद का वंदेमातरम्

: १६९ :

कलकत्ता,

२९-६-३६

प्रियवर जमनालालजी साहव,

चि० कमलनयन कल वम्बई मेल से वर्धा के लिए रवाना हो गए। ये ३-४ दिन ऐसे जल्दी निकल गए कि जैसे वह २-१ दिन ही रहे हों। यह उम्मीद नहीं थी कि वह इतनी जल्दी हम, छोटे से लगाकर वड़े तक—लोगों के हृदय में जगह वना लेंगे—इतने थोड़े समय में। आज हम लोगों में से किसी का किसी काम पर जी नहीं लगता।

चि० कमलनयन आपको सारी बातें कहेंगे। मेरी तो यह इच्छा है

कि विवाह करके ये दोनों विलायत चले जायं। परन्तु यह सर्वथा असंभव हो तो ऐसा एक प्रोग्राम वन जाय जिसमें किसी को असुविधा न हो।

यहां सब प्रसन्न हैं। आप लोगों की प्रसन्नता लिखें।

आपका,

लक्ष्मणप्रसाद

: १७० :

वर्धा, ११-७-३६

प्रिय श्रीलक्ष्मणप्रसादजी,

आपका ७-७ का पत्र मिला। आप सकुशल पहुंच गये पढ़कर खुशी हुई। चि० कमल को तो ता० ९ के स्टीमर से विदा करके श्री जानकीदेवी व चि० उमा आज सुवह यहां पहुंच गये हैं। कृपया लिखें कि चि० सावित्री व श्री उर्मिला वहन यहां कव आवेंगी, जिससे उस प्रकार कार्यक्रम निश्चित रखा जाय जैसा कि यहां पूज्य महात्माजी के सामने निश्चित हुआ था। ये दोनों आ जावें तो फिर पूज्य महात्माजी के द्वारा सगाई की घोषणा कर दी जावे।

अव तो चि० सावित्री को भी मुझसे पत्र-व्यवहार शुरू कर देना चाहिए। यहां सव अच्छे हैं।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: १७१ :

वर्धा,

२३-७-३६

प्रिय श्री लक्ष्मणप्रसादजी,

हम सव लोग कल शाम को कुशलपूर्वक पहुंच गए हैं। आप सवों का प्रेम हम सव लोगों को वरावर याद आता रहेगा। आज सुवह मैं तथा जानकीदेवी पू० वापूजी के पास गये थे। यहां से चार मील की दूरी पर वे रहते हैं। उन्होंने आपका व चि० सावित्री का पत्र पढ़ा व स्थिति समझ कर आपको व कमल को आज तार भेजे हैं। आज का दिन शुभ माना जाता

है। आप अब वहां सगाई की घोषणा कर सकते हैं। चि० सावित्री के लिए एक अंगूठी भेजनी है, परंतु उसे किस प्रकार की अंगूठी पसंद आवेगी यह मालूम न होने से जिस प्रकार व जैसी अंगूठी की उसकी इच्छा हो, आप मेरी ओर से अवश्य बना लेवें। कोई तरह का संकोच न करें। चि० सावित्री के दो फोटो भिजवा दें।

दोनों तार की नकल व चि० सावित्री के नाम पत्र भेजा है। चि० कमल का वेनिस आनंदपूर्वक पहुंचने का तार आ गया है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

राधाकृष्णजी बजाज के साथ[1]—

: १७२ :

सीकर,
३१-१-२६

पूज्य काकाजी,

सप्रेम प्रणाम !

पत्र आपका आया। दादाजी और दादीजी को पढ़ा दिया है।

दादाजी की तबीयत हमेशा की तरह है। मेरी तबीयत कुछ ठीक है। यहां रहने से काम-क्रोध, लोभ आदि विकार बढ़े हैं जिससे अब मेरी इच्छा वर्धा आश्रम में रहने की होती है। मेरी सेवा से दादाजी को जितना होना चाहिये उतना संतोष होता नहीं। कारण उनका मन हमेशा मुझे देख-देखकर ज्यादा दुखी होता है। कई बार तो मुझे दुकान करके कमाई के लिए भी कहते हैं और जब मैं उनको जवाब देता हूं तो बहुत दुख होता है। इसलिए यदि मैं आश्रम में रहने लग जाऊं और वे किसी लड़के को गोद लेकर अपनी इच्छा पूर्ण कर लेवें तो उनको भी संतोष होगा और मैंने जिस उद्देश्य के लिए ब्रह्मचारी रहने का निश्चय किया है, वह सत-संगति और सेवा के उद्देश्य सिद्ध हो जायंगे। इस बारे में आपका विचार क्या है सो लिखियेगा। माताजी को भी दादाजी की तरह मुझसे संतोष नहीं है। ये सब हमेशा मन में दुख करते रहते हैं कि हम बूढ़ों को ही रोटी बनानी पड़ती है– इत्यादि। सो आप अपना विचार लिखियेगा। योग्य सेवा लिखें।

आपका बालक,
राधाकृष्ण

---

१. श्रीराधाकृष्णजी तथा श्रीजमनालाल बजाज के बीच हुए पत्र-व्यवहार के पत्र काफी संख्या में हैं। इनमें से कुछ पत्र रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं के साथ हुए जमनालाल जी के पत्र-व्यवहार (भाग ३) में दिये जा चुके हैं। शेष में से कुछ चुने हुए पत्र ही यहाँ दिये जा रहे हैं।

: १७३ :

सीकर,

३०-११-२७

पूज्य काकाजी,

सादर प्रणाम। आपने देशपांडेजी के यहां का भंडार मुझे संभालने के लिए कहा है, ऐसा श्रीपूर्णानन्दजी कह रहे थे। यानी यहां के काम की देख-रेख मैं करूं, ऐसी आपकी इच्छा मालूम होती है। मैं इसके लिए तैयार हूं। पूज्य दादाजी की भी यही इच्छा है। उनकी तो यह भी इच्छा है कि रकम भी अपनी निजी हो तो और अच्छा है। यहां जो माल है उसमें से बिकने योग्य माल को यहां पर रख लिया जाय। बाकी माल जयपुरवालों को भेज दिया जाय। रकम चर्खा संघ की हो तो मुझे कोई हर्ज नहीं दिखता। परंतु भंडार किस तरह से चलाया जाय, यह मेरी इच्छा पर होना चाहिए। माल कहां से, किस तरह मंगवाना, किस भाव बेचना तथा हिसाब किस ढंग से रखना, यह सब मेरी इच्छानुसार होना चाहिए। चर्खा संघ की रकम डूब न जाय, इसलिए देख-रेख उनकी रहनी चाहिए। बाकी सब अधिकार मुझे होने चाहिए, जिससे मैं अपनी कल्पना के अनुसार भंडार को चलाने की कोशिश करूं। ऐसी हालत में नफा-नुकसान की जिम्मेदारी तो मेरी अपनी ही होगी। बाकी तो सिर्फ रकम ही रहेगी। आपको जंचे तो रकम भी अपन लगा सकते हैं।

पूज्य दादाजी की तबीयत साधारण ठीक है। अपना आगे का कार्यक्रम क्या है सो लिखियेगा।

आपका बालक,

राधाकृष्ण

: १७४ :

पूना,

२२-८-२९

चि० राधाकृष्ण,

श्रीरामनारायणजी की सख्त बीमारी का तार मिलने से मैं साबरमती से आज दोपहर को यहां आ गया हूं। श्रीरामनारायणजी की तबीयत

अभी नरम ही है। मुझे यहां दो-तीन दिन लग जायंगे।

तुम्हारी चाचीजी के गुस्से के कारण बाद में पश्चात्ताप की हकीकत लिखी सो समाचार पढ़ कर दुख और चिंता हुई। इनके पूर्व-जन्म का कोई बड़ा भारी दोष मालूम देता है जिससे इस तरह की मामूली बात पर इतना ज्यादा क्रोध आ जाता है। जबतक इनकी लोभ की वृत्ति कम नहीं होगी तबतक सच्चा प्रेम व दया का भाव जागृत हो नहीं सकता। बिना दया व प्रेम के क्रोध कम होना मुश्किल है। अगर दोष की पूर्ति हो गई होगी तो आगे से स्वभाव में फरक पड़ने लगेगा। नहीं तो जो संस्कार होगा सो बनेगा, चिंता करने से कोई लाभ नहीं है। मैं जितना विचार करता हूं तो इस तरह ही मालूम पड़ता है।

तुम इनको समझाते रहना। पू० विनोबा की गीता का कोई असर हो जाय तथा इनका स्वभाव बदल जाय तो अपना घर सुखी हो जाय। ज्यादा नहीं लिख सकता। इन पर दया तथा रोष दोनों ही आ जाते हैं।

यह चिट्ठी थोड़े दुख से लिखी है, क्योंकि यहां का वातावरण इस समय दुख का हो रहा है। कुछ पू० बापूजी भी बीमार हो गए थे। उनकी चिंता भी है। सो तुम चि० कमला की माताजी को दुख पहुंचे इस तरह की कोई बात नहीं कहना। वह कोई समय.आनंद में होवें तो भले ही मेरे विचार कह देना। तुम्हारी चिट्ठी उनको भेज दी है।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १७५ :

धुलिया जेल,
(१९३२)

चि० राधाकृष्ण,

मकान में फेरफार, आदि के संबंध में मेरी राय यह है कि वह दुमंजिला, या अलग बनाना—जैसा तुम लोग, खासकर जानकी, मदालसा, कमल, केशर आदि की सलाह से पूज्य जाजूजी को व तुम्हें पूर्णतया जंच जाय, वैसा काम शुरू करवा सकते हो। मदालसा, कमल की पढ़ाई व रहने के लिए स्वतंत्र व्यवस्था होना ठीक है। उसी प्रकार तुम्हारे व बाई केशर,

प्रह्लाद आदि के लिए भी भविष्य में मकान तो बनाना ही पड़ेगा, उसका भी खयाल रखना। चि० शांता के आश्रम का निश्चय हो जावेगा तो उसके खुद के लिए व आश्रम के लिए मकान तो बनाना ही पड़ेगा। ये सब बातें फेरफार करते समय ध्यान में रखना होगा; क्योंकि शायद आगे-पीछे जानकी को शान्ता के आश्रम के साथ या नजदीक रहने की इच्छा हो जाय।

नागपुर-केस के बारे में कोर्ट जल्दी करता है, यह तो अपने लिए भी बहुत ठीक है। बिना कारण अपना भी बहुत खर्च हो रहा है। जल्दी निकाल हो जाय तो खर्च से बच जायें।

मेरी साक्षी धुलिया जेल में कमीशन के सामने होगी; ठीक पता नहीं उस समय मेरा किस जेल में रहना होगा।

वर्धा जीन-प्रेस का जाइन्ट पांच वर्ष का किया, यह बहुत ज्यादा वर्षों का हो गया। क्या भाव किया यह नहीं लिखा, सो ऐसी मूर्खता क्यों? जाइन्ट हुआ लिखा तो भाव-खर्च भी लिखना था। पुलगांव में नहीं हुआ सो वर्धा की पैठ को बिलकुल धक्का नहीं लगेगा इसका पूरा विचार करके ही भाव वगैरा रखे होंगे। मेरे विचार तो गंगाबिसन जानता ही था।

श्री केशवदेवजी को लिख देना कि आप भाई घनश्यामदासजी की राय से जो करेंगे उसमें मुझे संतोष है। मैं अब इस बारे में ज्यादा विचार-फिकर नहीं करना चाहता। मिनिस्टर को जो पत्र भेजा है वह बिलकुल ठीक है। मिल बराबर चालू हो जाय तब मुझे तार से खबर कर देना। तथा मिल चालू हो जाय तब मेरी ओर से भी काम करनेवाले छोटे-बड़े सबों को प्रेमपूर्वक धन्यवाद देना।

पूज्य जाजूजी से कह देना कि नागपुर केस में मुझे श्रीचिरंजीलालजी को गवाह लेने में कोई हर्ज व डर नहीं मालूम देता। वह झूठ नहीं बोलेंगे। आप उनको गवाह जरूर ले लेवें। अगर कोई कारण से झूठ बोले भी, तो अपनी हानि होने का मुझे भय कम है। वह झूठ उसी वक्त मालूम हो जायगी।

श्री पुरुषोत्तमदासजी गनेरीवाल का देहांत हो गया, पढ़कर दुख हुआ। मेरी ओर से उनकी स्त्री-बच्चों के पास समवेदना के समाचार पहुंचा देना।

नागपुर विद्यालय व शक्कर एजेंसी के बारे में श्रीकेशवदेवजी, गंगाविसन व पूज्य जाजूजी से सलाह करके उचित मालूम हो वैसा करें। मुझे तो वर्तमान समय में यह एजेंसी देने में जोखम दीखती है।

श्रीनायडू को मेरा वन्देमातरम् कहला देना। ज्यादा कोशिश की जरूरत नहीं।

जमनालाल के आशीर्वाद

: १७६ :

घुलिया जेल, २३-९-३२
(वापू-उपवास—चौथा दिन)

चि० राधाकृष्ण,

दोनों पत्र मिले। मैं वाहर नहीं जाऊं वहां तक तुम पूज्य विनोवा की सलाह या आज्ञा के अनुसार अपना कार्य-निश्चय करोगे, उसमें मुझे संतोष है। अव पू० वापू के पास जाने का तो प्रश्न ही नहीं रहता।

वर्धा में तीन मंदिर व हिंगणघाट में एक, इस तरह कुल ४ मंदिर खुले सो ठीक। मुझे तो पूर्ण संतोष तव होगा जब वर्धा के सब मंदिर इस मौके[1] पर खुल जायें व तहसील के प्रत्येक गांव में अस्पृश्यता-निवारण का सक्रिय कार्य हो। ईश्वर करेगा तो अवश्य होगा। तुम मेरा नाम लेकर श्री मनोहर पंत, देशपाण्डे, श्री लूले वकील व अन्य मित्रों को अवश्य कहना कि वर्धा का कोई मंदिर खुले तो तार द्वारा सूचना भेज दें।

चि० बाई कमला को मेरी प्रसन्नता के व दिनचर्या के समाचार गोला लिख भेजना। मजूरों पर अन्याय न हो व अंग्रेज किसी का अपमान न करें, इस बात का खयाल रखने को भी कमला को लिख भेजना।

मेरा मन व स्वास्थ्य उत्तम है। वजन के बारे में तुम्हारे मन में विचार हो, तो पूज्य विनोवा तुम्हारी शंका मिटा देंगे। ३५ रतल तक तो कम करने का उनकी सलाह से ही निश्चय हुआ था। मुझे तो विश्वास है कि इससे मुझे ठीक लाभ मिलेगा। इस वार का अनुभव भी जीवन में वहुत ही उपयोगी सावित होगा। शरीर तो सुधरा ही है। साथ में आत्म-

---

१. पूज्य बापू के हरिजन-संबंधी उपवास के मौके पर

विश्वास, ब्रह्मचर्य का महत्व, सत्याचरण के लिए कष्ट सहने में आनंद आदि विचार व आचरण से कई प्रकार के लाभ मिले हैं।

दिनचर्या सुवह ४ से रात के ८वजे तक तो बरावर चलती है। कई बार ८ वजे ही सो जाता हूं; ९ बजे तो अवश्य। सुबह ४ बजे प्रार्थना करने के बाद भजन, गीताई के अध्याय, वार के मुताविक एक या दो; बाद में वापू के लेखों में से या अन्य कोई पुस्तक, पढ़ना। ५ से ५॥ मुंह-हाथ धोकर बाद में आधा घंटा चर्खा चलाना या उर्दू पढ़ना। फिर ६ से ८ तक घूमना, कुएं से पानी निकालना, जो मुझे वहुत ही प्रिय और अनुकूल हुआ है। फिर थोड़ा आराम लेकर स्नान ; उसके बाद १० से ११ तक आजकल गुलजारीलालजी (नंदा) के पास उर्दू पढ़ता हूं।

भोजन आजकल मुंशीजी व सीताराम शास्त्री के साथ (दो दाढ़ियों के बीच में वैठकर) कई वार गुड़ के चूरमे का होता है। उसका स्वाद तो अवर्णनीय है। वाद में थोड़ा विश्राम। १२-१ चर्खा। वाद में पढ़ना, लिखना, वात करना, ४ वजे तक। फिर थोड़ा घूमना, विनोद, खेल-कूल। शाम को वरावर ७ वजे प्रार्थना, मणिभाई व दूसरे एक-दो मित्रों के साथ। इच्छा हुई तो वात करना, नहीं तो ८ वजे सो जाना। कितना उत्तम कार्यक्रम है! दिनभर में एक बार पूरा भोजन। 'सी' वर्ग में रहते हुए इतनी खुराक तुम लोगों के कारण मुझे लेने को वाध्य होना पड़ता है। मुझे पूरा विश्वास है, कि मेरा शरीर. ईश्वर ने किया, तो बिगड़ने नहीं पायगा, बल्कि सुधार कर ही आऊंगा। कान में ठीक फायदा मालूम होता है। दवा रोज चालू है। आशा है अब तुम भी चिंता नहीं करोगे। मैं तो वाहर की चिंता नहीं करता। आनंद में रहता हूं व दूसरों को रखता हूं। हंसाने का काम मैं अपनी तरफ समझता हूं। बीच में जेल के एकांतवास का दो रोज वहुत ही उत्तम व शांत अनुभव मिला। अब फिर से सव शांत वातावरण चालू हो गया है। इस संबंध में भी चिंता नहीं रखना।

लक्ष्मण को उपवास नहीं करने चाहिये थे। अव किये है तो उसे वरावर संभाल लेना; छोड़ सके तो छुड़वा देना। पूज्य वापूजी की आज्ञा पालना ही मुख्य धर्म है, न कि उपवास करना।

पूज्य मां को प्रणाम कहना और मेरी चिंता बिलकुल न करने को कहना। मुझे तो कभी-कभी लगता है कि शायद जल्दी बाहर आने के लिए मजबूर होना पड़े। बाकी दिनचर्या तो यहां उत्तम जम गई है।

पूज्य विनोबा को प्रणाम कहलाना। मेरी दिनचर्या की खबर पवनार भिजवा देना। इन दिनों काफी शांति व संतोष मिल रहा है।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १७७ :

बंबई,
१२-८-३४

चि० राधाकृष्ण,

कुमारी डा० सावित्रीबाई महाजन को मैं वहां भेज रहा हूं। मेरा उनसे परिचय बिहार में भूकंप के काम के निमित्त हुआ। उनका स्वभाव और सेवाभाव देखकर उनको वर्धा ही हमेशा का निवास-स्थान बनाने के लिए मैं कह रहा हूं। अगर वह पैसा कमाना चाहेंगी तो आज ही मासिक दो-ढाई सौ रुपये वह कहीं भी कमा सकती हैं। लेकिन पैसा कमाने की उनकी इच्छा नहीं है। समाज-सेवा के कार्य में अपना तथा अपनी संपादित विद्या का कुछ उपयोग हो, ऐसी उनकी इच्छा है। फिलहाल ५-७ दिन वहां रहकर वहां की परिस्थिति से परिचय कर लेने के लिए ही वह वर्धा आ रही हैं। उनका वहां रहने का संतोषजनक प्रबंध कर देना।

शुरू में एक छोटा-सा सूतिकागृह वह वर्धा में खोल दें, जिसमें एक 'पेड बेड' हो और तीन चार 'बेड' अपने कार्यकर्ता तथा तहसील के अन्य परिचित लोगों के उपयोग के लिए हों। अपनी वहां की संस्थाओं के लिए भी उनका काफी और अच्छा उपयोग हो सकेगा और बचे हुए समय में वे चाहेंगी तो कुछ 'प्राइवेट प्रेक्टिस' भी कर सकेंगी।

इस दृष्टि से उनको वहां की सारी परिस्थिति समझा देना और आश्रम तथा गांव के मित्रों से उनका परिचय करा देना। जानकीदेवी तो उनसे अच्छी तरह परिचय कर ही लेंगी। मैंने थत्तेजी, मोघेजी तथा वालुंजकरजी को आज परिचय-पत्र उनके लिए दिये ही हैं। मेरा तो विश्वास है कि अगर यह बाई वहां रहेंगी तो अपने सार्वजनिक कामों में

इनका ठीक उपयोग होगा। मेहनती और सेवावृत्ति वाली वाई हैं। विहार में इनका काम ठीक संतोषजनक रहा था। मेरे काम का हाल यह वतलावेंगी ही। वह यहां मेरे पास ही रहा करती थीं। खूब सेवा और मदद करने की इच्छा रखती हैं। पूज्य विनोबा से इनका परिचय करा देना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १७८ :

वंवई,
१७-१-३५

चि० राधाकृष्ण,

इस पत्र के साथ श्री रामनारायणजी चौधरी की ओर से आये हुए चार पत्र भिजवाये हैं, जिसमें ठक्कर वापा के नाम तुम्हारा पत्र, उसके वारे में श्रीरामनारायणजी के पत्र ठक्कर वापा के नाम, तुम्हारे नाम तथा श्रीचंद्रभानु शर्मा के नाम हैं।

श्रीरामनारायणजी का अपना जिस प्रकार का संवंध है उसका खयाल रखते हुए तथा साधारणत: भी विचार करने पर मुझे यह लगता है कि तुम पहले रामनारायणजी को ही सूचना करते और फिर आवश्यकता होने पर श्रीठक्कर वापा को लिखते तो ठीक होता। शिकायतें वढ़ाकर कहने की आदत तो लोगों में होती ही है। दुरुस्ती करने की इच्छा से शिकायतें करने का अधिकार सार्वजनिक कार्यकर्त्ता को होता ही है। परंतु शिकायत करने के पहले जिसके वारे में शिकायत हो उसीको कुछ कहने का पहला मौका होना चाहिए। बापू की हमेशा यही नीति रहती है। इसीमें न्याय है और ऐसा करने से सच्ची वात का पता भी लग जाता है।

चन्द्रभानुजी तुमसे मिले होंगे। जहां तक तुम्हारा संतोष न हो वहां तक तुम अपनी राय उनसे कह सकते हो। इसमें कोई हरकत नहीं।

मेरे कान का इलाज चालू है। अब ड्रेसिंग में एक नया तरीका प्रारंभ किया है। प्रगति है, परंतु वहुत धीमी। मुझे वर्धा आने में देरी होगी ऐसा मालूम होता है। 'ग्राम उद्योग संघ' की सभा आगे वढ़ जाय तो ठीक, परंतु उसके वारे में तो अभी से निश्चित नहीं कहा जा सकता।

वहां मेहमान लोग आवेंगे। वागीचे में सवका इंतजाम संतोषकारक होगा तो सही, परंतु जहांतक पूर्ण संतोषजनक व्यवस्था न हो जाय वहांतक चिंता तो रहेगी ही। वर्धा में ऐसे कार्य स्वतंत्र-रूप से चलते रहने पर भी अपना संवंध तो उनसे रहेगा ही और उस वारे में थोड़ी चिंता रहना भी स्वाभाविक है। तुम्हारा वहां का काम ठीक-ठाक हो जाने पर मां वगैरा का इंतजाम ठीक से करवाकर यदि पूज्य वापू के वर्धा जाने के पहले तुम वर्धा जा सको तो अच्छा होगा।

अपना प्रोग्राम लिखते रहना। स्वास्थ्य अच्छा रखना। वहां का सव काम वरावर देख लिया होगा।

श्री रामनारायणजी को तुमने पत्र लिखा होगा।

पूज्य मां को प्रणाम !

जमनालाल का आशीर्वाद

: १७९ :

बंवई,
२६-१-३५

चि० राधाकृष्ण,

तुम्हारा सीकर से लिखा हुआ ता० २९ का पत्र मिला।

तुम्हारे वाले मकान में मेहमानों की व्यवस्था करनी होगी। मैं आऊं तो, और न आऊं तो भी, कुछ लोग तो वहां ठहरेंगे ही।

तुमने चंद्रभानुजी से ठीक बातें कर लीं तथा रामनारायणजी को पत्र भेज दिया सो ठीक किया। तुमने भी इस वात को महसूस किया कि रामनारायणजी को पत्र पहले देना ज्यादा अच्छा था। इसलिए इस वात से मुझे भी संतोष हुआ है। देशपांडे व रामनारायणजी के वीच समझौता करने के लिए पिछली वार काफी समय दिया था व आशा भी थी कि समझौता हो जायगा। परंतु अव वर्तमान में मुझसे हो सका तो मैं राजस्थान के वारे में उदासीन रहना चाहता हूं। वहां के मित्रों तथा कार्यकर्त्ताओं का मुझपर काफी वोझ रहा।

तुम यदि वहां के कार्य में दिलचस्पी ले सको व सव परिस्थिति से वाकिफ रह सको तो मुझे संतोष होगा।

बागीचे की व्यवस्था में श्री कुमारप्पा की ठीक सहायता करके इंतजाम करवा दिया होगा, नहीं तो सब इंतजाम ठीक-ठीक करा देना। डेडराजजी की मेहनत से स्मारक भवन थोड़े खर्च में अच्छा बना, यह पढ़कर खुशी हुई।

'चर्खा संघ' व 'गांधी सेवा संघ' की सभाओं के लिए आने का विचार है। डाक्टर लोग इजाजत दें तो आ सकूंगा।

कान का ड्रेसिंग चल रहा है। आराम होने में काफी देरी लगेगी ऐसा मालूम होता है। अब तो डाक्टर लोग भी यह कहने में असमर्थ हैं कि कान को पूरा आराम कब हो जायगा।

जमनालाल का आशीर्वाद

पुनश्च

तुम्हारा बंगला तो तैयार रखना ही होगा। वहीं रहेंगे। श्री गोपीबेन, मुरारजीभाई, राजनारायण वगैरे कई जने तो वहां ठहरेंगे ही। क्या यहां से रसोइया लाना पड़ेगा? चि० सोफिया की सगाई श्रीसादुल्लाखां के साथ हुई, मालूम हुआ होगा।

: १८० :

भुवाली,
१३-४-३५

चि० राधाकृष्ण,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं यहां परसों दोपहर को आ गया। ५ या ६ दिन यहां रहकर रामगढ़ जाने का विचार है। रामगढ़ यहां से ६॥ मील है। पैदल व घोड़े का रास्ता है। वहां पोस्ट आफिस व तारघर भी है। यहां से १००० फुट ऊंचा है। जलवायु यहां से अच्छी है तथा एकांत स्थान है। मैं कल घोड़े पर वहां गया था। बंगला पसंद कर आया हूं। पानी की भी सुविधा है। समीप में मेवे के बाग भी हैं। रामगढ़ जाने पर दूकान पर सूचना दे दूंगा।

चि० कमलनयन से मालूम हुआ कि तुम्हारी देवली-यात्रा सफल हुई। दामोदर ने लिखा है कि तुम अपना कार्यालय नालवाड़ी ले गये हो। आशा है कि काम की दृष्टि से ही ले गए होगे।

श्रीदादा धर्माधिकारी के बारे में मेरी समझ में मैंने वहां कह दिया

था। उनके कार्य के बारे में मैंने उन्हींके ऊपर छोड़ दिया है। बाकी तुम और पूज्य विनोबाजी जो करोगे उसमें मुझे कोई आपत्ति न होगी। श्रीदादा का जिस काम को करने का उत्साह हो वह करें।

मैंने धोत्रे को लिख दिया है कि दादा को पहली अप्रैल से १०० रु० मासिक दिया जाय। वह यदि दूकान पर रहेंगे तो खाने का खर्च इसमें से कट जायगा।

तुम्हारा उनसे क्या ठीक परिचय हो रहा है? चि० कमलनयन को उनका देवली का भाषण बहुत पसंद आया।

सीकर के जाटों के आंदोलन की भी बीच-बीच में खबर मंगाकर वाकिफ रहने का खयाल रखना और मुझे भी वाकिफ रखना। अब हम लोगों के इस बीच में पड़ने से राज्य व सरकार राजनैतिक मामला समझ कर जाटों पर और अधिक अत्याचार करेगी, जिससे उनके कष्ट बढ़ने की संभावना है। इस समय चुप रहने के सिवा और कोई उपाय नहीं है। पर उनके आंदोलन से पूरी जानकारी रखने से भविष्य में कोई रास्ता निकाला जा सकेगा।

ऊपर का मकान कब तक तैयार हो जायगा? कि रलालभाई की व्यवस्था बराबर हो गई होगी?

जमनालाल का आशीर्वाद

: १८१ :

नालवाड़ी, वर्धा,
७-५-३५

पू० काकाजी,

सविनय पावांधोक। आपका ता० १ का पत्र मेरे यहां पहुंचने पर आज मिला।

जाटों की हालत की बाबत एक पत्र नारेली से डाला था। वह मिला होगा। मेरे सीकर से आने के बाद जाटों पर बहुत जुल्म हो रहे हैं। लूटमार खुले-आम होती हैं। एक भी बाहरी या खादीधारी आदमी को राज्यवाले बाहर नहीं रहने देना चाहते। पं० लादूरामजी, पू० डेडराजजी, शिवभगवान-

जी, व मेरे लिए पूछताछ व पकड़ने का विचार हो रहा था, ऐसा नर्मदा के पत्र से आज मालूम हुआ। राजपूत, मुसलमान व राज्य के अधिकारी, इन सबमें बदला लेने की तीव्र भावना है। इस वजह से जाट लगान देने को राजी हों तो भी 'एक घंटे में लाओ, दो घंटे में लाओ,' ऐसी शर्तें डाल कर तंग किया जाता है। चुने हुए लोगों के घरों को बरबाद किया जा रहा है। जिस जाट के घर में पैसा हो उसीसे सारे गांव का लगान जबर-दस्ती ले लिया जाता है। घर का व खेती का सामान बरबाद किया जाता है और पीटा भी जाता है। सैकड़ों गिरफ्तार कर लिये गए हैं। खूब आतंक जमाया जा रहा है।

जाटों के पंच जयपुर गये थे। उनको तो अधिकारियों ने साफ जवाब दे दिया कि बेब साहब के पास जाओ, हम कुछ नहीं जानते। अब पंजाब कौंसिल के मेंबर व जाटों के प्रतिनिधि श्री छोटूरामजी ता० ११ मई को प्रतिनिधि मंडल के साथ जयपुर राज्याधिकारियों से मिलेंगे। कुछ समझौता होगा, ऐसी आशा तो कम ही है, पर सबकी नजर उधर ही लगी है।

ता० ३ को दिल्ली में जो जाटों की कार्यकारिणी की सभा हुई, उसमें कुछ निश्चयात्मक प्रस्तावों के अलावा खास कोई बात नहीं हुई। श्री-रतनसिंहजी और सीकर जाट-पंचायत के सब पंच ता० ५ को अजमेर में एकत्रित हुए थे। इधर से पू० हरिभाऊजी, भाई रामनारायणजी, श्री व्यासजी, श्री शंकरलालजी वर्मा, श्री देशपांडेजी और मैं—इतने आदमी उपस्थित थे। दिनभर काफी चर्चा हुई। श्री रतनसिंहजी इस हलचल की पूरी जिम्मेदारी राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं पर छोड़ने को तैयार हो रहे थे, तथा 'जाट आंदोलन'—यह जातीय नाम मिटाकर—'किसान-आंदोलन' करने को भी तैयार हैं। लेकिन इस बाबत उन्होंने जाट-सभा से सलाह नहीं ली थी, इसलिए, तथा ता० ११ को क्या होना है, यह देखने व पू० बापूजी का और आपका क्या रुख है, यह जानने के लिए पूरी जिम्मे-दारी नहीं ली है। सिर्फ अभी तो उनको इतना ही कहा गया है, कि उन लोगों को समय-समय पर जब वे चाहेंगे, हम सलाह देते रहेंगे। पू० हरि-भाऊजी, भाई रामनारायणजी, श्री व्यासजी, व श्री शंकरलालजी—इन चार आदमियों की सलाह से वे लोग काम करें, ऐसा विचार हुआ है। भाई

रामनारायणजी का इसमें विशेष उत्साह है। पू० हरिभाऊजी को खास उत्साह तो नहीं है, पर आप चाहेंगे तो वे उत्साहपूर्वक भाग ले सकेंगे। पू० बापूजी से आज करीब आधा घंटा इस बाबत बातचीत हुई। कल शाम को फिर बात होगी। पूरी बातें होने पर अपनी राय बतावेंगे।

पू० हरिभाऊजी आज दिल्ली पहुंचे होंगे। दो-तीन रोज ठहर कर वापिस हटुंडी चले जायंगे। हटुंडी के लिए ग्राम उद्योग विद्यालय की योजना तैयार कर रहे हैं। पू० भागीरथी बहन, सौ० लक्ष्मी, शकुन्तला, भाई मार्तण्ड व बाबू, सभी इस समय तो दिल्ली में हैं। पू० दादीजी की तबीयत के समाचार आपके पास भी सीधे आते ही होंगे। यहां सब प्रसन्न हैं।

आपका बालक,
राधाकृष्ण बजाज

: १८२ :

भुवाली,
८-५-३५

चि० राधाकृष्ण,

तुम्हारा ३ तारीख का पत्र मिला। तुमने जाटों की हालत का वर्णन लिखा सो ठीक। कैप्टन वेब से तुम मिले सो बहुत अच्छा किया। जैसा तुमने लिखा है, अखबारों की खबरों से भी पता लगता है कि जाटों की ओर से बहुत-सी बातों में काफी भूलें हुई हैं। परन्तु उनको भूल के कारण सजा बहुत बेशी भुगतनी पड़ी है। जाटों में सामाजिक जागरण होना आवश्यक है ही।

जाटों के सच्चे नेता, जिनका जाटोंपर पूरा प्रभाव हो, जो काफी समझदार हों और स्वार्थ का भाव न रखकर जाटों की भलाई व उनके लिए न्याय चाहते हों, यदि ऐसे लोगों का परिचय हो जाय तो उनकी सलाह से जाटों का मामला आगे बढ़ सकता है। नारेली में श्री हरिभाऊजी और अन्य लोगों से इस बारे में जो कुछ बातें हुई हों और उनका कुछ निश्चय हुआ हो तो मुझे खबर देना।

सीकर के आस-पास के दूसरी जातिवाले लोग जाटों के विरुद्ध हैं, यह तो थोड़ा स्वाभाविक है। जो जाति आगे बढ़ना चाहती है, दूसरी

जातिवाले उसके विरुद्ध हो ही जाते हैं। परंतु यह कोई न्यायपूर्ण बात नहीं है। उनको ऐसा नहीं करना चाहिए। यह तो वहां जाटों की ओर से ऐसा आंदोलन आरंभ हुआ है जैसा कि अपने यहां के अब्राह्मणों की तरफ से सत्य समाज से बहुत बुरे खेल खेले जाते थे। यदि जाटों की तरफ से उनका कोई अच्छा नेता आगे बढ़े तो जाटों के लिए अच्छा परिणाम हो सकता है।

पूज्य माताजी का स्वास्थ्य ठीक हो रहा है, उसकी खबर आती रहती है। यहां सब अच्छे हैं।

'नवजीवन' कार्यालय का पत्र इस पत्र के साथ भेज रहा हूं। तुम और पूनमचन्द अंकों का तपास कर लेना। चौकसी करने के बाद चि० कृष्णदास गांधी को पूछ कर ५६॥)॥ 'नवजीवन' कार्यालय को भेज देना। भूलना नहीं।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १८३ :

भुवाली,
१६-५-३५

चिरंजीव राधाकृष्ण,

तुम्हारे ९ व १२ तारीख के पत्र मिले। खूंडी-कांड व कूदण-कांड की हकीकत पढ़ी। बापूजी की जो राय तुमने लिखी वह ठीक है। श्री छोटूराम-जी यदि हम लोगों की मदद मांगें तो उस पर विचार किया जा सकता है, वैसे जो काम वह कर रहे हैं उसमें बाधा पड़ने का डर है।

बापूजी ने जो सूचना दी है वह तुम कुंवर रतनसिंहजी को सीधे या हरिभाऊजी की मारफत भेज सकते हो।

सीकर-राज के बारे में तुमने जो स्टेटमेंट भेजा वह मैंने पढ़ा है। उसके सिवा और कोई स्टेटमेंट मैंने नहीं पढ़ा है। तुम्हारे पास यदि और कोई नकल आई हो तो मुझे भेज देना। तुमने कुंवर रतनसिंह की जो प्रशंसा लिखी है वह पढ़कर बहुत खुशी हुई। मुझे भी आशा है कि समझौता शीघ्र हो जायगा।

मलकानीजी को सांप काटने का समाचार जानकर चिंता हो गई

थी। परसों दुकान से तार आ गया, उससे चिंता कम हुई। आशा है कि सांप के काटने पर जो इलाज किया जाता है वह तुमने समझ ही लिया होगा। तुम अपने कार्यकर्त्ताओं को भी समझा देना कि सांप काटने पर वैज्ञानिक तरीके से कैसे इलाज किया जाता है।

आशा है कि तुमने 'नवजीवन' कार्यालय को रुपये भेज दिये होंगे। मेरी समझ में तो वह अंक 'वाईकाट कमेटी' के समय आये होंगे। उसका तो खाता अब नहीं रह गया है। अब तुम और पूनमचन्द जैसा मुनासिब समझो उस खाते में मंडा दो।

दादा धर्माधिकारी के बारे में मेरी समझ तो थी कि उनको मेरी गैरहाजिरी में विनोबाजी से ठीक परिचय करने का मौका मिलेगा। परंतु विनोबाजी तो अब तुमसर, कोल्हापुर इत्यादि स्थानों को गये होंगे।

दादा का किशोरलालभाई उपयोग करें इसमें तो मुझे कोई हर्ज नहीं मालूम होता। उनका परिचय किशोरलालभाई से करवा देना और तुमको और धोत्रे को उनके बारे में जो ठीक मालूम होसके वह भी किशोरलाल-भाई से कह देना। वर्धा में वह कहां ठहरे हैं?

स्थायी समिति के कितने मेहमान आये थे और वह कबतक ठहरे थे? यदि हो सके तो उनके नाम लिखकर भेज देना।

कल श्री कमला नेहरू यूरोप जाने के लिए यहां से रवाना हो गईं। उनकी विदाई के समय का दृश्य बड़ा ही हृदयद्रावक था। एक तरफ तो श्री कमलाजी को ले जानेवाली मोटर खड़ी थी-और दूसरी ओर जवाहरलालजी को जेल में ले जानेवाली मोटर—बीच में उनकी माता व बहन खड़ी थीं। यदि कोई अच्छा कलाकार और लेखक होता तो इस दृश्य का एक सुंदर वर्णन लिखा जा सकता था। प्रायः सबकी आंखों में पानी आ गया। मैंने आंखों में पानी नहीं आने दिया।

श्रीगंगादेवी के जाने की व्यवस्था बराबर हो गई होगी। जापा होने पर मुझे जरूर सूचना देना। मुझे इनकी चिंता रहती है। उन्हें भी कह देना कि खूब हिम्मत रखें और सच्चाई के जीवन के लिए ईश्वर से प्रार्थना करें।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १८४ :

वर्धा,
२१-५-३५

पूज्य काकाजी,

सविनय पावांधोक। आपका ता० १६ का पत्र परसों मिला था। सीकर की वावत पू० वापूजी ने जो सूचनाएं की थीं वे पू० हरिभाऊजी को लिख भेजी थीं। आजकल तो सीकर से वहुत ही जुल्म के समाचार आ रहे हैं। पहले जिस वक्तव्य के वारे में लिखा था वह अखवार मिलने पर भेजूंगा। अभी मिल नहीं सका। उसमें खास वात सरकारीतौर से कैप्टन वेव की यह घोषणा थी कि चूंकि जाटों ने अपनी गलती कबूल करली है इसलिए रावराजा साहव संवत् १९८९ तक का वकाया लगान (जो चार लाख कुछ हजार है) माफ करते हैं और आगे जाटों के साथ अच्छा सुलूक दोनों ओर से होगा, ऐसी उम्मीद है। उसके जवाव में 'अर्जुन' का एक कटिंग भेजता हूं। साथ ही श्रीराम का सीकर की खवरों के वारे में जो पत्र है, वह भी भेजता हूं।

सांप के काटने पर एकदम क्या इलाज किया जाय, यह तो नहीं सीख पाये। डाक्टर के सुपुर्द कर दिया जाय इतना ही ज्ञान हुआ है। साहित्य सम्मेलन की स्थायी समिति की बैठक में करीव ९ आदमी आये थे। वे लोग १० को सुवह आये और १९ की रात को चले गए। पूज्य वापूजी आज आ रहे हैं। वहन गंगादेवी की तवीयत ठीक है। परसों अस्पताल से वागीचे ले आवेंगे। पू० कमलाजी की विदाई के जैसे करुण दृश्य मनुष्य-जीवन में वहुत कम देखने को मिलते हैं!

आपका वालक,
राधाकृष्ण वजाज

: १८५ :

भुवाली,
२९-५-३५

चि० राधाकृष्ण,

तुम्हारा २४ तारीख का पत्र २८ तारीख की शाम को मिला। इतनी देर से क्यों मिला? क्या वात हुई?

मेरे पास किशोरलालभाई का पत्र आया है। मैंने उस पर भली प्रकार विचार किया है। कई कारणों से जयनारायणजी की व्यवस्था संघ की ओर से करना उचित नहीं होगा। जाट-आंदोलन की ओर से ही उनकी व्यवस्था होनी चाहिए। अभी तक हम लोग व 'गांधी-सेवा-संघ' इस आंदोलन से अलग हैं। सहायता करने पर अलग नहीं रह सकते हैं। जयनारायणजी का पत्र वापस भेज रहा हूं। यदि मगनभाई देसाई और विनोबाजी इन्हें सदस्य बनाने को तैयार हों तो इसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

मेरी समझ में यदि सुजानचन्दजी की स्त्री को 'महिला आश्रम' में भरती कर लिया जाय तो अच्छा होगा। अब तो एक वर्ष की मर्यादा पूरी हो गई है, इसलिए कन्या आश्रम में भी कुछ लड़कियां ऐसी ली जा सकती हैं, जिनका आर्थिक बोझ ज्यादा न उठाना पड़े। तुम विनोबाजी और बापूजी से बात कर सकते हो। यदि जयनारायणजी लड़कियों के लिए कोई खास योजना पढ़ाई के बारे में अपने पास भेजें और वह योजना ठीक मालूम पड़े तो उस पर महिला-मंडल की ओर से विचार किया जा सकता है।

श्री जुगलकिशोरजी की जो रकम आई है वह खासकर मंदिर, कुवां और हरिजनों के लिए हैं, इस बारे में तुम सूचना जरूर कर सकते हो। मैंने तो शायद तुमसे कहा भी था।

'गांधी सेवा संघ' के तुम्हारे सेवक बनने के बारे में थोड़ी शंका तो मुझे भी है। तुम इस बारे में किशोरलालभाई और बापूजी से मौका पड़े तो बात करना। बाकी मेरे वर्धा आने पर इसका निश्चय होगा।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १८६ :

वर्धा,
२६-६-३६

चि० राधाकृष्ण,

तुम्हारे, पू० विनोबाजी, चि० अनुसूया व मेरे नाम के पत्र मिले। बैठने आनेवाले हिम्मत नहीं टिकने देते यह बहुत ही दुख की बात है। बैठने आनेवालों की प्रथा तो इसलिए पड़ी कि दुख के समय अपने जितने

संबंधी हैं, सब आकर हिम्मत बंधावें। परंतु आजकल इसका दुरुपयोग होता है। जितना खर्चा इतने बैठने आनेवालों के कारण होता है उतना चि० गिरधारी की बीमारी पर नहीं हुआ होगा। गिरधारी का इलाज बराबर नहीं हो सका इसका मुझे काफी दुख है। परंतु अब उसके लिए कोई इलाज नहीं।

चि० गीता की अजमेर व नीम-के-थाने रहने की व्यवस्था की सो ठीक है। श्री बींजराजजी की यहां आने की इच्छा हो तो जरूर ले आना। चि० मदन को यहां आने के लिए लिखा सो ठीक। परंतु बींजराजजी को संतोष हो वैसा कर लेना।

गीता के पत्र के बारे में लिखा सो ठीक किया। परंतु इस प्रथा में भी सुधार की बहुत गुंजाइश रह जाती है। वर्तमान प्रथा में ऐसी परि-स्थिति में घरवाले दया या उपकार वृत्ति को सामने रखकर कुछ रुपये लड़की के नाम से निकाल देते हैं। वास्तव में यह स्थिति स्वाभिमान के विरुद्ध है। क्या लड़कियों का कोई हक नहीं होना चाहिए? यह प्रश्न खब विचारणीय है। इस बारे में मेरे विचार तुमसे व चि० गीता से मिलने पर ही निश्चित हो सकेंगे। तुम तो गीता को यह कह सकते हो कि उसे इस बात की चिंता अधिक नहीं रखनी चाहिए। तुमने लिखा गीता का, बींजराजजी का तथा गीता के माता-पिता का दुख देखा नहीं जाता। लादूराम ने भी इसी प्रकार की स्थिति लिखी। पढ़कर मुझे दुख हुआ। परंतु इतने दुख का खास क्या कारण है? एक तो स्वार्थ कि कमाने-वाला चला गया; दूसरा स्त्रियों में आत्म-विश्वास, याने अपने पैर पर खड़े रहने की ताकत का अभाव। अन्यथा लड़का मरने पर जितना दुख हो, उतना ही लड़की या बहू के मरने में भी होना चाहिए। परंतु वैसा होता नहीं है। आज गीता को कुछ हो जाता तो ऊपर से दुख दिखाते हुए भी श्मशान में ही धीरे-धीरे सगाई की चर्चा चलती, लड़का विवाह करेगा इस तैयारी से पगड़ी वगैरा पहनाई जाती, आदि। यह कितने अनर्थ व दुख की स्थिति है। खूब परिवर्तन होगा तभी इस प्रकार का मिथ्या शोक व दुख कम हो सकेगा।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १८७ :

मोरां सागर,
८-५-३९

चि० राधाकृष्ण,

तुम्हारा २९-४ का पत्र मुझे ४-५ को मिला। कमल ता० २४ को टाड साहव से मिला। उसकी हकीकत तुमने लिखी थी। उनसे भी मालूम हुई। ता० ४ को मैं उनसे मिला था। दिल खोल कर वातें हुई। एक दूसरे का परिचय हो सका। मुझ पर यह असर तो जरूर हुआ कि यह सज्जन मेहनती तथा गरीव व पीड़ित जनता के लिए कुछ करने की इच्छा रखनेवाला है। परंतु यहां की वर्तमान स्थिति में जवतक नीचे से ऊपर तक दृष्टिविंदु व कार्य का ध्येय साफ होकर ठीक-ठीक परिवर्तन न हो, तवतक संतोषजनक परिणाम निकलना कठिन है। कमल से जो सूचना उन्होंने की, वही मुझे भी की। वह मैं कैसे स्वीकार कर सकता था ? मुझे इसमें प्रजा व राजा दोनों का हित नहीं मालूम देता। इन्हें प्रजा व राजा के सच्चे हितैपियों का परिचय होने में या पता लगाने में अभी वहुत देर लगती दिखाई देती है। क्योंकि जिनके स्वार्थ में हानि पहुंचने का डर है, वे क्यों ऐसा करने देंगे। उनका ध्येय न तो सचाई का है, न उन्हें राजा व प्रजा के हित की परवाह है। उन्हें तो अपने से मतलव है। जव इन्हें सच्चे व स्पष्ट वात करनेवालों की व जिनके हृदयों में निस्वार्थ सेवा करने की लगन है, उनके सहयोग की आवश्यकता अनुभव होगी, तव जाकर कहीं हालत का सुधार होना शुरू होगा। मुझे तो भविष्य अच्छा ही दिखाई देता है। परमात्मा इन लोगों को भी सद्वुद्धि प्रदान करेगा, जिससे खरे-खोटे को भली प्रकार पहचान सकें। मैं तो तुम्हें इतनी वातें लिखना भी नहीं चाहता था, परंतु तुमने अपने पत्र में कमल की मुलाकात की वात के साथ अन्य प्रश्न छेड़ दिये थे और वह पत्र मुझे अधिकारियों की मार्फत मिला, तव उनके जरिये ही यह खुलासा भेज रहा हूं।

हां, यह वात तो ठीक है कि वर्तमान स्थिति में मेरे स्वास्थ्य के वारे में अखवारों में ज्यादा चर्चा मैं पसंद नहीं करता। मेरा स्वास्थ्य वैसे

तो ठीक ही है। कोई सात-आठ रोज से मेरे दाहिने घुटने में दर्द रहने लगा है। उससे घूमना-फिरना बंद हो गया है। दर्द के कारण चलने में थोड़ा कष्ट तो होता ही है। किंतु तुम्हें चिंता का कारण नहीं, मैं ठीक कर लूंगा। इस प्रकार के अनुभव से एक प्रकार का लाभ ही होता है। मुझे कई बातें समझने व विचारने का मौका मिल जाता है।

आजकल यहां गरम लू चलने लग गई है। चारों ओर पहाड़ होने के कारण कल तो रातभर गरम हवा चलती रही। यह भी यहां की बहार है। दिन-दिन ज्यादा अनुभव मिलता जाता है। परंतु तुम लोग अब इस स्थान में ज्यादा थोड़े ही रहने देनेवाले हो? पर मुझे तो इस स्थान से अब मोह बढ़ रहा है। अखबारों में मैंने पढ़ा कि सत्याग्रही छोड़ें जा रहे हैं। अच्छा तो यही हो कि जहांतक अधिकारियों को पूरा संतोष न हो जाय वहांतक मुझे यहीं रख छोड़ें। मैंने तो उन्हें कह दिया था कि मुझे इससे लाभ व शांति ही पहुंच सकती है।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १८८ :

न्यू होटल, जयपुर,
२४-४-४०

चि० राधाकृष्ण,

तुम्हारा ता० १६-४ का पत्र मिला। मैं कल ही मोरांसागर, गंगापुर, हिण्डौन आदि के दौरे पर से लौटकर आया हूं। १६ को वांसा जाना है। वहां से २७ को सीकर जाऊंगा और २८-२९ को वहां रहूंगा। इसके बाद संभव है, एक दफा उदयपुर जाना पड़े। आगे का कार्यक्रम अभी तय नहीं है।

जयपुर का समझौता हो गया। मेरा स्टेटमेंट अखबार में तुमने पढ़ा ही होगा। हमारी तीन शर्तें मान ली गईं—(१) प्रजा-मंडल का नाम वही रहेगा, (२) प्रजा-मंडल का मेम्बर बाहरी राजनैतिक संस्था का

मेम्बर या पदाधिकारी रह सकता है, (३) प्रवृत्तियों के बारे में हमें लोगों के पास जाने का, भाषण देने का व लोगों को समझाने का हक है। ध्येय हमारा लोकप्रिय सरकार था, परंतु इसके आखीर में 'अल्टीमेट' (अंतिम) शब्द लगा देना पड़ा। अभी यहां पर वातावरण ठीक करने में लगा हुआ हूं। आज श्री महाराजा साहब से मिलने के लिए जानेवाला हूं।

पू० मां को प्रणाम कहना। उनका स्वास्थ्य अब ठीक होगा। तुम्हारा स्वास्थ्य भी ठीक होगा।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १८९ :

देहरादून,
२४-८-४१

चि० राधाकृष्ण,

तुम्हारा आज का दिया हुआ तार यहां आज ही मिल गया। चि० अनू के लड़का हुआ, पढ़कर विशेष खुशी नहीं हुई। मैं तो इस समय कन्या चाहता था। खैर, ब्रह्मा, विष्णु, महेष—त्रिमूर्ति घर में हो गई। चि० अनुसूया व बालक राजी होंगे। कोई तकलीफ नहीं हुई होगी। बालक का वजन कितना है?

मुझे यहां श्री आनन्दमयी मां के पास ठीक शांति मिल रही है। यहां का दृश्य व वातावरण भी सुंदर है। एक सुंदर व स्वच्छ पानी का छोटा-सा झरना बहता है। वहीं स्नान करता हूं। बहुत वर्षों बाद यहां स्वभाविक जीवन व देहाती वातावरण मिल रहा है। तेल मालिश तथा मोटर-तांगा आदि से छुट्टी मिल रही है। मैंने दामोदर की मार्फत 'माता आनन्दमयी की बात' नाम की पुस्तिका भिजवाई है, सो तुम व अनुसूया पढ़ लेना, जिससे इनका थोड़ा परिचय हो जायगा। यहां ८-१० दिन तो हूं ही।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १९० :

गोपुरी, वर्धा
२७-११-४२

प्रिय राधाकृष्ण,

तुम्हारे पत्र मिले।

पूज्य बापूजी से तुम्हारे पत्र को लेकर चर्चा हुई थी। वालुंजकर भी थे। बापूजी बकरी व भेड़ के दूध की छूट रखना उचित नहीं समझते[1]। उनकी दृष्टि इस बारे में साफ है। मुझे भी यह छूट रखना पसंद नहीं है, तो भी मैंने उनसे कहा कि बकरी की छूट रख देंगे तो हमें एक बड़ा लाभ तो यह होगा कि आप हमारे सदस्य बन सकेंगे। उन्होंने कहा यह ठीक है, परंतु यह छूट रखना ठीक नहीं। ज्यादा तो तुम जब यहां आओगे तब समझ लेना, क्योंकि मैंने विशेष चर्चा नहीं की।

बापू का विजयादशमी वाला कागज उन्हें किसी फाइल में मिल गया है। वह दुरुस्त करके एक-दो रोज में देनेवाले हैं। कल तक मिल गया तो इस बार के 'सर्वोदय' में छप जाना संभव है।

तुमने श्री.........की योजना के बारे में खुलासा किया सो ठीक। मेरा इनसे स्वभाविकतौर से ठीक परिचय बढ़ता जा रहा है। रिषभदास से भी कहना कि इनमें शक्ति तो काफी है ही। बीच में इधर से कुछ मन हटता हुआ मालूम दे रहा था। अब तो साफ हो गया है। मुझे आशा तो है कि इनकी शक्ति का ठीक उपयोग मिल सकेगा। हमें भी इनकी भावनाओं का खयाल तो करना हीं होगा। तुम्हारे स्वभाव व कार्य-पद्धति में भी थोड़ा फरक करना जरूरी दीखता है। वह हो जायगा।

राजस्थान चर्खा संघ की शाखा गोविंदगढ़ से रींगस ले जाने में मुझे दो बातों का विचार आता है। एक तो शायद वहां पर फिर काफी ख़र्च करना होगा—इमारतों आदि में। धुलाई-रंगाई की व्यवस्था वहां ठीक हो गई है। दूसरे, मैं तो सीकर राज्य की अपेक्षा जयपुर राज्य में सीध काम होना ज्यादा ठीक समझता हूं। बाकी श्री देशपांडे तथा वहां के कार्यकर्त्ताओं

---

१. गोसेवा संघ का सदस्य बनने के लिए।

को रींगस में सब तरह से जंच जाय तो मुझे कोई खास आपत्ति नहीं है। पहले उन्होंने रींगस केन्द्र न रखकर गोविन्दगढ़ क्यों रखा था, इसका भी विचार करना चाहिए। जहां तक मुझे याद है कि मैं तो उस समय रींगस ज्यादा पसंद करता था। इस बाबत आखिरी फैसला तो पूज्य जाजूजी के साथ ही होना ठीक रहेगा।

महिलाश्रम-परिवार के लिए श्रीदीक्षितजी को रख लिया है। यह भी उत्साही व जिम्मेदार मालूम देते हैं। इन्हें विचार-विनिमय के लिए राजस्थान में भी कुछ समय के लिए भेजा जा सकता है। बाकी तुम मेरे आने तक बात कर रखना। चि० रिषभदास तो तुम्हें लिखता ही रहता है।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १९१ :

गोपुरी, वर्धा,
(१९४२)

चि० राधाकृष्ण,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरा प्रोग्राम यहां पर ठीक चल रहा है। गो-सेवा के कार्य में काफी शांति और समाधान मिल रहा है, प्रेम भी बढ़ रहा है। यह जगह अच्छी निकली है। मुझे पसंद भी है। जल्दी ही मिलने की आशा है। खरीदने की कार्यवाही के लिए मोतीलाल राठी बम्बई गया था, वह कर आया है। इस पर अब एक टिकाऊ-सी चीज बनवाने का विचार है, जो कि बरसात, गर्मी वगैरा में भी काम आ जाय। तुम्हारे वापस आने पर ज्यादा विचार होगा। यहां सब लोग अच्छी तरह से हैं। मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। आशा है कि तुम लोगों का ठीक चलता होगा। श्रीजानकीदेवी को कह देना मैं पूरी तरह राजी हूं। आजकल मेहमानों की खूब भीड़ हो रही है। दिसम्बर तक इसी प्रकार रहना संभव है।

जमनालाल का आशीर्वाद

गुलाबचंद बजाज की ओर से—

: १९२ :

धुलिया,
८-८-३८

पूज्य भाईजी,

सादर प्रणाम।

मैं ता० २१ फरवरी को वर्धा में पिकेटिंग करते पकड़ा गया। मुझे चार महीने सजा और २५०) रुपये दंड हुआ। दंड नहीं भरो तो १।। महीने और। घर से दंड वसूल करके ले गये। २) रुपये कम रह गये तो मुझे २ रोज ज्यादा रहना पड़ा। मैं वर्धा की जेल में ८ रोज रहा। वहां से नागपुर मोटर द्वारा भेज दिया गया। नागपुर में अनुशासन अच्छी है। गाली-गलौज़, मारपीट बिलकुल नहीं। तमाम आफिसर लोग वहां के सुपरिंटेंडेंट जठार से डरते हैं। यहां चक्की और पानी खींचने का काम दिया। खाना न पचने से बीमार होकर हास्पिटल में गया। वहां २४-२५ रोज रह कर २० रतल कम हुआ। वहां से जबलपुर बदली कर दी गई, रास्ते में डब्बे में ज्यादा आदमी बैठाने से हमने ७ दफे जंजीर खेंची और २ घंटे ग्रांड ट्रंक लेट कर दी। इस पर सारजेंट खूब बिगड़ा और हम लोगों की डंडों से खूब पूजा की।

जबलपुर में कर्नल खान सुपरिंटेंडेंट थे। वहां तो तमाम आफिसरों ने पोपाबाई का राज्य देखा था, कोई भी खान से न डरते थे और अनुशासन का तो नामोनिशान नहीं था। जहां देखो गाली-गलौज़, झूठ के सिवा काम नहीं। जुआ तो खुले आम खेलते हैं और बीड़ी-तमाखू खाते-पीते हैं। छोटे लड़कों को नचाते हैं और पैसे देते हैं। यहां की जेल में तमाम दुबारे कैदी खास रखे गए हैं। हमारे साथ छोटेलालजी, तुकारामजी, वल्लभभाई, प्रभाकरजी, रामदेवजी आदि आश्रम के भाई थे और श्रीयुत तेजरामजी, मोतीलालजी, काशीनाथ, नाना लोटलीकर आदि वर्धा के खास-खास

कार्यकर्ता भी थे। जेल में वर्धा के कार्यकर्ताओं से अच्छा परिचय हो गया। नागपुर में तुकारामजी, वल्लभभाई और २०-२२ दूसरों को ड्रिल सिखाया करता था, पर १५ दिन बाद बंद कर दी गई। गीता का कुछ अभ्यास वल्लभभाई और छोटेलालजी के पास कर सका हूं।

आपका आज्ञाकारी,
गुलाब का प्रणाम

गोवर्धनदासजी जाजोदिया के साथ--

जावरा,
२-९-३८

: १९३ :

पूज्यवर,

इसके साथ एक पत्र भाई श्रीराधाकृष्णजी के नाम का भेजा है, इसे आप समय मिलने पर देख लें व उनको फिर प्रत्युत्तर के लिए दे दें। इस पत्र से आपको पता चल जायगा कि इनके द्वारा मुझे कितना मानसिक दुःख पहुंचा है। मैं जहांतक इनको समझ सका हूं, मैंने यही पाया कि इनमें विचार-शक्ति की कमी है, जिसके कारण यह किसी भी बात का पूरा अर्थ समझे विना किसी को कुछ भी कह डालते हैं। इनके हाथ के नीचे और भी काम करनेवालों की इनके प्रति काफी शिकायतें सुनी हैं, लेकिन उन लोगों की हिम्मत नहीं कि वे कुछ कहें। वे सब सहन करते हैं। मैंने यह आपके द्वारा इसी विचार से भेजा है कि भविष्य में बंगले पर रहनेवाले दूसरे भाई के साथ ऐसा व्यवहार न हो।

मेरा स्वास्थ्य अब ठीक है। यहां आने के बाद २-३ दिन तो वुखार रहा, वाद में ठीक होने लग गया। कमजोरी बहुत मालूम होती है। अन्न तो १५ दिन में आज शुरू किया है। अभी १५-२० दिन तो पूरा आराम लेने का विचार है। मेरे भविष्य के लिए तो आप कुछ विचार करते ही होंगे। मैंने तो सब आप पर ही छोड़ दिया है।

पू० बआजी का इधर आने के संबंध में क्या निश्चय रहा। मैं व मेरी माताजी उनके साथ चल ही सकते हैं। उनको अव जल्दी ही भेज दें। मैंने अपनी स्त्री के हिस्टीरिया के संबंध में उसकी हिस्ट्री लिखी है; उसकी एक प्रति आपको देने के लिए श्री सागरमलजी को लिखा था, सो उन्होंने दी होगी। वह देख कर आप अपनी कुछ राय दे सकें तो मुझे काफी सहायता मिलेगी।

आपका बालक,
गोवर्धनदास का पांवाधोक

: १९४ :

बंबई,
११-९-३८

प्रिय गोवर्धन,

तुम्हारा २-९ का पत्र व चि० राधाकृष्ण के नाम का पत्र यथासमय मिले। चि० राधाकृष्ण को तुम्हारा पत्र दे दिया गया है। तुम्हारा पत्र पढ़कर मुझे आश्चर्य होना स्वाभाविक था। यदि तुम्हारे दिल में कोई बात की शंका भी हो, तो तुम्हें चाहिये था कि आपस में फौरन उसकी सफाई कर लेते। इस तरह मन-ही-मन संकोच करने से गलतफहमी बढ़ती जाती है।

राधाकृष्ण तुम्हें पत्र लिखनेवाला है। जावरा में तुम लोगों को अच्छा मालूम हो रहा है, जानकर खुशी हुई।

मैं परसों यहां से शिमला जाने वाला हूं।

जमनालाल बजाज का आशीर्वाद

: १९५ :

वर्धा,
१९-११-४१

प्रिय गोवर्धन,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारा स्वास्थ्य पहले से अच्छा है लिखा, सो ठीक है।

चि० द्रौपदी के पति की तबीयत बहुत खराब है, डाक्टरों ने उन्हें टी० बी० बतलाया है, सो जानकर चिंता हुई। यह तो ठीक है कि तुरंत अच्छा इलाज हुआ तो आराम अवश्य हो जायगा। इन्हें सेनीटोरियम में दाखिल करना भी आवश्यक है। खर्चे के संबंध में लिखा सो तो जब विवाह हुआ था तब मैंने ऐसा सुना था कि उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी है। अब भी मेरी यह धारणा थी कि उनकी आर्थिक स्थिति बुरी नहीं है। किंतु अगर उनकी स्थिति ऐसी है कि वे इलाज का खर्च नहीं बर्दाश्त कर सकते और वह सेनेटोरियम में रहने चले जायंगे तो मैं उन्हें सवा सौ रुपये मासिक भेजते रहूंगा। अगर एक-दो महीने में ठीक हो गए तो बहुत ही अच्छी बात है, नहीं तो अगर उन्हें सेनेटोरियम में छः मास तक रहना

पड़ा तो तबतक यह रकम मासिक भेजते रहूंगा। वह इसे कर्ज के रूप में समझें। अगर ठीक होने पर कमाई कर दे सकें तो वापस भेज दें। नहीं तो कोई चिंता रखने की जरूरत नहीं। उन्हें कह देना मुझे सेनेटोरियम से पत्र व रिपोर्ट भेजते रहें। चि० द्रौपदी राजी होगी।

जमनालाल का आशीर्वाद

प्रह्लादराय पोद्दार की ओर से--

: १९६ :

कलकत्ता,
२२-१२-४१

पूज्य मामाजी,

आपका श्रीसीतारामजी के नाम का पत्र कल मिला। हम लोगों ने भी वर्धा का ही विचार किया था। गंगाविसनजी को मकान के लिए पत्र भी दिया था। आप बारडोली गये होंगे यह सोच कर आपको नहीं लिखा। यहां सीतारामजी, मैं व पन्ना सिर्फ तीन जने रहेंगे। बाकी आधी दर्जन वानर-सेना को भगवानदेवीजी की कमांड में ४-५ दिन के अंदर ही भेज देंगे। रवाना होने का तार दे देंगे।

परसों रंगून में बम गिरने की खबर से लोगों में ज्यादा घबराहट थी। उस खबर के झूठ साबित होने से लोगों में थोड़ा धीरज आया है।

पाट का चालीसेक हजार मन का काम हुआ है। ७-८ हजार मन पाट बिकना बाकी है। वह परिस्थिति सुधरने पर बिकेगा। अभी तक की स्थिति तो यह है कि इस बाकी के पाट में खास नुकसान न लगे तो मेहनत-मजूरी निकल जायगी।

शेष सब ठीक है। आपकी तबीयत में पहले से सुधार जानकर खुशी हुई।

पूज्य मामीजी को प्रणाम कहें। पत्र देवें।

प्रह्लाद का प्रणाम

नर्मदा हिम्मतसिंहका के नाम—

: १९७ :

वर्धा,
५-११-३८

चि० नर्मदा,

तुम्हारा ता० १-११ का पत्र मिला। मैं पवनार चला गया था। इसलिए तुम्हें पत्र देने में विलंब हुआ।

तुमने कलकत्ता जाने के बारे में मेरी राय मांगी है। मेरे खयाल से तो तुम्हारा कलकत्ता जाना ही ठीक होगा। अव कलकत्ता में आवहवा भी सुधर गई है व मौसम अच्छा है।

देश जाने के बारे में, मेरी राय से तो वहां जाना उचित नहीं है। तुम वहां की ठंड वर्दाश्त कर नहीं सकोगी। साथ में इस समय वहां अकाल पड़ा है। ऐसी हालत में तुम वहां जाकर क्या फायदा उठा सकोगी? बेहतर तो यही है कि थोड़े दिन तुम्हें पूना में और रहना हो तो रहकर कलकत्ता चली जाओ।

चि० गजानन के स्वास्थ्य के बारे में चिंता हो रही है। शीघ्र ही पत्र देकर उसके स्वास्थ्य समाचार देना। गुलाववाई भी शायद यहां चली आवेंगी। इन सव कारणों से देश जाने की राय नहीं होती है। चि० श्रीराम का स्वास्थ्य ठीक होगा तो उसे भी अव काम में लग जाना चाहिए; जहां उसकी इच्छा हो।

कल मुझे ४९ वर्ष पूरे हो गए, पचासवां लगा है। केशर, गजानन वगरे से भी कह देना। तुम सव लोग परमात्मा से प्रार्थना करना कि वह सद्‌बुद्धि देवे व सचाई से सेवा कार्य कराता रहे।

जमनालाल के आशीर्वाद

अनुसूया बजाज के नाम—

: १९८ :

जयपुर स्टेट कैदी,
२९-५-३९

चि० अनुसूया,

आखिर तुम्हारे हाथ का ता० १९-५ का पत्र मिला। तेरी व खासकर चि० गौतम की याद आना तो स्वाभाविक है। मैंने तो सुना था कि तू जोधपुर विवाह में जायगी और वहां से यहां आयगी। तब उम्मीद थी कि तुझे व गौतम को देखूंगा। एक तरह से तो ठीक किया जो गौतम को लेकर गरमी में इतनी लंबी यात्रा नहीं की। गौतम अब राजी होगा। मेरी ओर से खूब प्यार करना। जानकी तो यहां आ ही गई हैं। उन्हें रोज मिलने की इजाजत मिल गई है। रोज मिल भी जाती हैं व खाने-पीने-बैठने के बारे में उपदेश, व्याख्यान दे जाती हैं। वह अभी जयपुर ही रहनेवाली हैं। चि० उमा भी यहां आनेवाली है।

पू० मां को प्रणाम कहना। उनकी याद मुझे प्रायः रोज आती है। मैं मन से ही प्रणाम कर लिया करता हूं। उनका तो आशीर्वाद है ही। उन्हें तकलीफ नहीं होने देना। कोई नौकर या बाई रखना हो तो रख लेना। मेरी चिंता करने का कारण नहीं। गोड़े का दर्द कम होता जा रहा है। दवा चालू है।

पू० भाभी ने तो बड़ी बहादुरी की। चोर को खाली हाथ ही भगा दिया; कंठी नहीं ले जाने दी। विचारा कंठी ले जाता तो बहुत दिनों तक वह तथा उसके घर के सारे लोग आशीर्वाद देते। खैर, अब तो शायद फिर हिम्मत भी नहीं करेगा और करेगा तो कंठी के दर्शन तो उसे होने के नहीं। वहां जेवर, जोखम की चीज बिलकुल नहीं रखनी चाहिए।

बजाजवाड़ी में बड़ों को प्रणाम, बीचवालों को वंदेमातरम्। बच्चों को व 'घनचक्कर क्लब' वालों को प्यार कहना। चि० दामू की बीनणी

पहुंच गई होगी। अपनी मां से कहना मेरी पूर्णपोली व वधाई जमा रखे। जानकी तो कहती थीं पूर्णपोली खा आईं, । श्रीगोमतीवहन से कहना अनुसूया को छात्रवृत्ति मिली जानकर वहुत खुशी हुई । श्रीदमयन्ती वहन घर के काम व दादा के मेहमानों के कारण वीमार तो ज्यादा नहीं पड़ती है ना ? धोत्रे के यहां सव अच्छे होंगे ।

श्रीकाशीनाथजी मेरा एक पत्र भूल गये हैं। यह उनके पास पहुंचा देना ।

जमनालाल वजाज का आशीर्वाद

सीता झुनझुनूवाला की ओर से—

: १९९ :

वर्धा,
२०-४-३७

पूज्य ताऊजी,

सादर प्रणाम ।

आपने मेरे विवाह के विषय में विचार पूछे थे, सो निम्नलिखित हैं :—

(१) लड़का सुशील एवं सुशिक्षित होना चाहिए । गरीब हो तो कुछ हर्ज नहीं, क्योंकि मैं एक गरीब के साथ अपनी गृहस्थी हर तरह के कष्ट सहन करके भी चला सकूंगी । लेकिन अशिक्षित लड़के के साथ विवाह करके मैं मानसिक शांति नहीं पा सकूंगी । मेरे विचार से मनुष्य के लिए शारीरिक सुख की उतनी आवश्यकता नहीं जितनी कि मानसिक शांति की ।

(२) लड़का अग्रवाल जाति का होना चाहिये, क्योंकि मुझमें अभी तक दूसरी जाति में विवाह करने की हिम्मत नहीं । मैं अंतर्जातीय विवाह को बुरा नहीं समझती, लेकिन मेरा मन अभी तक अंतर्जातीय विवाह के लिए तैयार नहीं ।

(३) मेरे विचार से एक अशिक्षित लड़का अपने से अधिक पढ़ी हुई लड़की की शंकाओं का समाधान नहीं कर सकता । पुरुष चाहे जहां जाकर अपनी शंकाओं का समाधान कर सकता है । लेकिन एक स्त्री चाहे जहां अपनी शंकाओं के समाधान के लिए नहीं जा सकती, क्योंकि उसे अपनी एवं कुल की आबरू रखना अत्यंत आवश्यक है । हरेक जगह भले आदमी नहीं पा सकेंगे । इसलिए लड़की को अपने से अधिक शिक्षित पति पाना मैं आवश्यक समझती हूं ।

(४) लड़का मिलने में जितनी भी देरी लगेगी मैं ठहरने के लिए तैयार हूं । मेरी ओर से कुछ भी जल्दी नहीं ।

आपकी आज्ञाकारी पुत्री,
सीता

पन्ना पोद्दार की ओर से—

: २०० :

वम्वई,
२६-२-३७

पूज्य ताऊजी,

सादर प्रणाम।

आज ही मैं आपको पत्र दे रही हूं और वह भी वहुत ही बुरा। शायद आपने कभी ऐसे बुरे पत्र की कल्पना भी नहीं की होगी। मेरा पत्र देख कर तो आपको खुशी होगी, पर पत्र पढ़ते ही उसपर तुषार पड़ जायगा।

आपको यह तो मालूम ही है कि मेरे और पू० भुआजी के वीच में कशमकश रहती है। यद्यपि मैं अपनी समझ में कुछ भी नहीं वोलती और शायद वे भी कुछ नहीं वोलतीं, पर दोनों का ही मन एक-दूसरे की तरफ से साफ नहीं है, इसमें तो संदेह ही नहीं है। उनकी और मेरी वातें लिखने न लिखने से कोई होना-जाना नहीं है। मैंने जो निश्चय किया है और जो विचार मैंने वहुत दिनों से कर रखा है उसे पूरा करना चाहती हूं। इससे भुआजी को सुख-शांति मिलेगी। मुझे भी कम-से-कम इस तरह रात-दिन चिंता में नहीं घुलना पड़ेगा और न रोना पड़ेगा। पर मां, व वावूजी को तो संदेह में रखना ही पड़ेगा, नहीं तो उन लोगों को वहुत दुख होगा और वे लोग अपने इस दुख को संभाल नहीं सकेंगे और शायद इससे आपको भी कुछ आराम मिले।

आपके सामने मैंने प्रतिज्ञा की थी कि मैं विना कुछ सोचे-विचारे मन के भाव आपको वता दिया करूंगी। उसीके अनुसार मैं आपको अपने विचार लिख देती हूं। आपकी इच्छा होगी वैसा ही करूंगी, पर मैं अपने विचारों को नष्ट करना नहीं चाहती। उसमें आपकी इच्छानुसार कांट-

छांट हो तो अच्छा है, पर आखिर में आपकी ही इच्छा काम आयेगी। मैं सहते-सहते पागल-सी हो गई हूं। अब मैं और नहीं सह सकती, न मुझे अपने ऊपर विश्वास ही है कि मैं अधिक सह सकूंगी। कह नहीं सकती समय आने पर क्या हो जाय। मैं हम दोनों के स्वार्थ-हीन सच्चे प्यार को स्थायी रखना चाहती हूं। मैं नहीं चाहती कि दुनिया की कोई भी चीज़ हमारे आपसी प्रेम में कुछ फर्क पैदा करे। प्यार की इस सुंदर कल्पना को ही मैं अपने जीवन की अमूल्य निधि समझ कर कहीं दुख-सुख से अपना जीवन बिता सकूंगी। अब अधिक क्या लिखूं। समझ में नहीं आता, न लिखा जाता है। मैं चाहती हूं कि मैं कलकत्ता चली जाऊं और वहां पर रहकर एक साल में मैट्रिक की परीक्षा दे दूं। इसमें लोगों को कहने के लिए रहेगा कि पढ़ाई के लिए रहती है और मां बाबूजी भी यही समझेंगे। बाबूजी खुश होंगे कि पन्ना पढ़ना चाहती है। मुझे ऐसा विश्वास है कि मैट्रिक के बाद मुझे भी कहीं २०-२५ रुपया महीना मिल सकता है। मुझे आप कहीं ऐसी जगह भेज दें कि जहां पर कोई यह न जानता हो कि आप या बाबूजी मेरे कुछ लगते हैं। क्योंकि यह आप दोनों के लिए और मेरे लिए भी लज्जा की बात होगी कि उनके यहां की होकर इस तरह लड़-झगड़कर या रुपये पैदा करके पेट पालती है। मुझे शर्म भी आयेगी। इस तरह सबके लिए आराम रहेगा। मैं कहीं भी बाबूजी का अपमान नहीं देखना चाहती। मेरी वजह से उन्होंने बहुत कष्ट उठाया है। मेरा सुख-दुख ही उनका सुख-दुख है, यह मैं जानती हूं। पर क्या उपाय? आपको, बाबूजी, मां को कष्ट होगा इसीसे मैं आज तक कष्ट भोगती चली आई हूं। पर अब मेरे धैर्य का बांध टूट गया। मैं असमर्थ हो गई। इसीसे मैं हाथ जोड़कर, पांवों को पकड़कर आपके सामने प्रार्थना करती हूं कि आप, जैसा मैंनें कहा है, वैसा करें। मुझे मेरे आगे-पीछे आप लोगों के सिवा कोई नहीं दिखता। इन तीनों को कहने से इनको बहुत तकलीफ होगी। बाबूजी बहुत कोमल हृदय हैं। आपके सामने तो रात-दिन इस तरह की घटनाएं आती रहती हैं, इससे आपको तो आदत हो गई है। यदि मेरे बच्ची न होती तो आपको इतनी तकलीफ करने की जरूरत नहीं पड़ती। आपको सीधा मेरी मृत्यु का ही समाचार मिलता; पर बार-बार

बच्ची का खयाल आता है कि उसका क्या होगा। अब अधिक कुछ नहीं लिखती। पत्र पढ़कर फाड़ दें, कोई देखें नहीं। अब बंद करती हूं। अधिक नहीं लिखा जाता। आपने एक बार बचाया था। अबकी बार बचायें। उत्तर की प्रतीक्षा में हूं।

आपकी,
पन्ना

श्रीराम पोद्दार की ओर से—

: २०१ :

सीकर,
११-६-३५

पूज्य मामाजी,

सादर सविनय वंदन ।

आपका ता० ८ का पत्र प्राप्त हुआ । पू० नानीजी का स्वास्थ्य आशातीत सफलता से सुधर रहा है । खांसी अभी निर्मूल नहीं हुई है । वैद्यजी का कहना है कि स्वास्थ्य लाभ से खांसी अपने आप मिट जायगी । अस्तु !

यहां के राज्य की हालत अव दिन-व-दिन सुधरने लगी है । वहुतांश में वड़े-छोटे अफसर वदल दिये गए हैं । रावराजाजी की ओर से शिमले से आर्डर आया है कि पीड़ित जाटों को राज्य की ओर से सुख पहुंचाया जाय । इस फर्मान के अनुसार अथवा सीनियर की कृपा से वंदी जाट छोड़े जा रहे हैं, गांवों में रोगी मनुष्यों के लिए डाक्टर आदि का प्रवंध किया गया है, स्कूल खोलने का प्रयत्न चल रहा है । अनुचित रूप से, राज्य की हिदायत के विना जिन्होंने जाटों को सताया है, उन्हें उचित दंड देने का प्रवंध किया जा रहा है । आशा है राज्य अव समुचित ढंग से प्रजा में अमन-चैन कायम करने में प्रयत्नशील होगा ।

हमारा १५ दिन यहां और १५ दिन फतेहपुर रहकर जुलाई के प्रथम या द्वितीय सप्ताह में वम्वई जाने का प्रोग्राम निश्चित हुआ है ।

पूज्य नानीजी आपको आशीष लिखाती हैं । यहां सब प्रसन्न हैं ।
विशेष विनय,

वालक,
श्रीराम

परिशिष्ट

१—श्री जमनालालजी व श्रीमती जानकीदेवी बजाज के बीच हुआ पत्र-व्यवहार इस माला के चौथे भाग के रूप में प्रकाशित हो चुका है। उसमें जो पत्र लेने से रह गये थे, वे परिशिष्ट नं० १ में दिये गए हैं।

२—जिन लोगों के पत्र इस पुस्तक में संकलित हैं, उनके परिचय परिशिष्ट नं० २ में दिये गए हैं।



परिशिष्ट—१

श्रीमती जानकीदेवी बजाज के नाम—

: १ :

यरवदा मंदिर,
१-२-३३

प्रिय जानकी,

मैं यहां ता० २६ को ठीक १२ बजे पहुंच गया था। यहां का हवा-पानी ठीक अनुकूल आ जायगा। मुझे इन पांच रोज में बहुत ठीक मालूम होता है। यहां डा० मेजर भण्डारी व डा० मेजर मेहता दोनों ने भली प्रकार मेरी जांच कर ली है। डा० मेजर मेहता मुझे रोज देखा करते हैं। मुझे पूरा विश्वास होता है कि कुछ रोज में ही यहां स्वास्थ्य उत्तम हो जायगा। अभी तो मुझे बहुत ही हवादार खुली जगह में रखा है, घूमने को काफी सुंदर बड़ा मैदान है। दोनों ओर नीम के झाड़ों की कतार है। घूमते समय ठीक सुख मिलता है। खान-पान का तो यहां उत्तम प्रबन्ध है। यहां के दोनों बड़े अधिकारी पूरा विश्वास करते हैं कि दूध व मक्खन से लाभ होगा। पूज्य बापूजी से अभी तो एक ही बार मंगलवार को मिलाया था। सरकार से लिखा-पढ़ी हो रही है। इजाजत आ जायगी तो फिर ज्यादा मिलना हो सकेगा।

तुम्हारा व चि० मदालसा का स्वास्थ्य अब ठीक सुधरता होगा। मेरे सामने हंसते-खेलते करने की आदत बढ़ाने की पूरी कोशिश रखो। सबसे उत्तम इलाज तो यह है कि तुम सबको मन को मजबूत बनाकर आनंद में रहने की आदत बढ़ानी चाहिए। मुझे बापूजी की खड़खड़ाहट करते हुए जोर से हंसने की आदत बढ़ानी है। इससे काफी फायदा मिलेगा।

चि० कमल की पढ़ाई की सन्तोषजनक व्यवस्था हो गई होगी। नहीं तो जल्दी करवा देना ही उचित है। जब उसकी इच्छा है तो उसे संतोषकारक व्यवस्था कर ही देनी चाहिए।

और बालकों की पढ़ाई का इंतजाम चि० राधाकिशन को कह देना, कि वह सन्तोषकारक कर ले। मैं तो यहां बैठा चिंता करना नहीं चाहता। मुलाकात ता० १० जनवरी के आसपास, यानी १० व १५ के बीच में रख लेने का अभी तो मेरा विचार है। पहले तो हक भी नहीं है व आवश्यकता भी नहीं मालूम देती; सो ख़याल रखना। उपरोक्त तारीखों में जो सुभीते की मालूम हो उस समय पहले से सुपरिंटेंडेण्ट को लिखकर निश्चित कर लेना।

पूज्य बारु ताई को कह देना वह अन्ना साहब की बिलकुल चिंता न करें। सब व्यवस्था ठीक हो गई है और हो जायगी। उन्हें यहां ठीक लाभ पहुंचेगा। इलाज व खान-पान का ठीक इंतजाम है। चि० शांता (सरयू) अब बिलकुल ठीक हो गई होगी। उसको संभालते रहना व उसके खान-पान का ख़याल रखना।

चि० शांता बम्बई से वर्धा रहने के लिए कब तक आने वाली है? वह अपना महिला-आश्रम का काम कब से शुरू करनेवाली है? तुम विगतवार पत्र भेजो उसके साथ उसका पत्र भिजवा देना।

पूज्य मां को प्रणाम कहना और कह देना कि मेरी चिंता बिलकुल न करें। मैं खूब ठीक होकर बाहर आऊंगा।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: २ :

जयपुर स्टेट कैदी
१०-६-३९

प्रिय जानकी,

कल आशतपुर में भयंकर आग लग जाने के कारण भारी हानि हुई, ऐसा सुना है। मेरी समझ से प्रजा-मंडल के कार्यकर्ताओं का

कर्तव्य हो जाता है कि वहां मौका देखकर जितनी ज्यादा सेवा व मदद कर सकें, ठीक ढंग से संगठित करके जल्दी करें। इस कार्य में अधिकारियों की पूरी मदद ली जा सकती है व उन्हें मदद दी जा सकती है। वहां की पूरी हालत से मैं वाकिफ होना चाहता हूं। मैंने अभी श्री यंग साहब को भी पत्र लिखकर वहां की स्थिति पुछवाई है। दामोदर आया हो तो, या आ जाने पर उसे कह देना श्री यंग साहब से परवानगी लेकर मुझसे एक बार मिल ले। तुम लोगों को आने-जाने का भी स्पष्ट खुलासा करके आर्डर ले ले, जिसमें बार-बार गड़बड़ी न रहे, क्योंकि अब तो प्रश्न तुम्हारा व चि० उमा का रह जाता है। मीरा तो ता० १३ को जाने ही वाली है। एक या दो बार ही आ सकेगी। उमा के लिए सितार सिखाने वाले की व उर्दू या उत्तमा की तैयारी करने वाले मास्टर की व्यवस्था करनी है सो जल्दी करवा देना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ३ :

धुलिया जेल,
२३-९-३९

प्रिय जानकी,

दिनचर्या राधाकृष्ण के पत्र में लिखी ही है। तुम्हारी परीक्षा खतम हो जाने पर सविस्तर पत्र लिखना। अभी तो पत्र लिखने या पढ़ने में तुम्हारा समय लेना एक प्रकार से तुम्हें नापास होने में मदद पहुंचाना है। अगर तुम पास हो गई तो साहित्य सम्मेलन की परीक्षा की पद्धति-क्रम बदलना पड़ेगा। कुछ भी हो तुम्हारी लिखावट तो अवश्य सुधरती जा रही है। मुझे खुशी व थोड़ा आश्चर्य होता है तुम्हारी पढ़ाई की तैयारी व उत्साह देखकर। मैंने भी उर्दू सीखना शुरू किया है। आशा है एक महीना और अभ्यास चला तो मामूली पढ़ना-लिखना आ जायगा। चि० मदालसा, रामकृष्ण की पढ़ाई आदि की व्यवस्था पूज्य विनोबा की सलाह से कर लेना। श्री नाना वहां हैं ही। चि० राधाकृष्ण भी आ ही गया है।

चि० नर्मदा, उमा, श्रीराम की पढ़ाई भी, उन्हें संतोषकारक हो, इस प्रकार करने का खयाल रखना। बाई केशर का शरीर-मन ठीक रहे इसका खयाल भी रखना।

जमनालाल का वन्देमातरम्

श्रीमती जानकीदेवी बजाज की ओर से—

: ४ :

२.१२.४१

पूज्य श्री

पत्र मिला। आपको अब के मेथी के लड्डू खिलाने वाले धन्वन्तरीजी वैद्य अच्छे मिले हैं। इनको तो फीस व सार्टीफिकेट दोनों ही देना चाहिये।

आप सेवाग्राम जायं तो अम्तुल के पास बापूजी की माला देखते आवें, और मेरी माला आपके तकिये के नीचे ही रहने दें। कभी नींद न आये या जब याद आ जाये तब फेर लिया करना। और खो न देना—बापूजी ने कहा था कि एक बार बेपरवाही से खो दोगी तो दूसरी नहीं मिलेगी। मेरी खान के हीरे तो आपने एक-से-एक देखे, पर खान में तो माटी ही होवे सो यह भी भगवान की मरजी।

जानकीनाथ की जय

परिशिष्ट—२

परिचय

(जिनके साथ हुआ पत्र-व्यवहार इस पुस्तक में संकलित है)

प्रथम खंड

कमला नेवटिया	श्री जमनालालजी की पहली पुत्री तथा श्री रामेश्वरप्रसाद नेवटिया की पत्नी
कमलनयन बजाज	श्री जमनालालजी के बड़े पुत्र
सावित्री बजाज	श्री कमलनयनजी की पत्नी
श्रीमन्नारायण	श्री जमनालालजी के दामाद
मदालसा अग्रवाल	श्री जमनालालजी की दूसरी पुत्री तथा श्री श्रीमन्नारायण की पत्नी
राजनारायण अग्रवाल	श्री जमनालालजी के दामाद
उमा अग्रवाल	श्री जमनालालजी की तीसरी पुत्री तथा श्री राजनारायण अग्रवाल की पत्नी
रामकृष्ण बजाज	श्री जमनालालजी के दूसरे पुत्र

द्वितीय खंड

श्री बच्छराजजी बजाज	श्री जमनालालजी के दादा (जिन्होंने जमनालालजी को अपनी विधवा पुत्र-वधू के लिए गोद लिया था)
श्री कनीरामजी बजाज	श्री जमनालालजी के पिता
श्री गोपीकिशनजी बजाज	श्री जमनालालजी के चाचा : बच्छराज-जी बजाज के छोटे भाई हंसराजजी बजाज के दत्तक पुत्र

श्री धर्मनारायण जी अग्रवाल	श्री जमनालालजी के समधी; श्री श्रीमन्नारायण के पिता
श्री चिरंजीलालजी जाजोदिया	श्रीमती जानकीदेवी बजाज के बड़े भाई
श्री डेडराजजी खेतान	श्री जमनालालजी के बहनोई; बहन गुलाबदेवीजी के पति
श्री सीतारामजी सेकसरिया	श्री जमनालालजी के समधी; बहन केसरबाई पोद्दार के बड़े लड़के श्री प्रह्लादराय पोद्दार के श्वसुर
श्री लक्ष्मणप्रसादजी पोद्दार	श्री जमनालालजी के समधी; श्री कमलनयन व श्री रामकृष्ण के श्वसुर
श्री राधाकृष्ण बजाज	श्री जमनालालजी के भतीजे
श्री गुलाबचंद बजाज	श्री जमनालालजी के चचेरे भाई
श्री गोवर्धनदास जाजोदिया	श्री चिरंजीलाल जाजोदिया के बड़े पुत्र; श्रीमती जानकीदेवी बजाज के भतीजे
श्री प्रह्लादराय पोद्दार	श्री जमनालालजी के भानजे; बहन केसरबाई पोद्दार के बड़े पुत्र
श्रीमती पन्ना पोद्दार	श्री प्रह्लादराय पोद्दार की पत्नी
श्रीमती नर्मदा हिम्मतसिंहका	श्री जमनालालजी की भानजी; बहन केसरबाई पोद्दार की पुत्री
श्रीमती अनसूया बजाज	श्री राधाकृष्ण बजाज की पत्नी
श्रीमती सीता झुनझुनवाला	श्री जमनालालजी के चचेरे भाई श्री गंगाविशन बजाज की पुत्री
श्री श्रीराम पोद्दार	श्री जमनालालजी के भानजे; बहन केसरबाई पोद्दार के छोटे पुत्र



जमनालाल बजाज-सम्बन्धी साहित्य

१. जमनालालजी

—घनश्यामदास बिड़ला

२. श्रेयार्थी जमनालालजी (संक्षिप्त)

—हरिभाऊ उपाध्याय

३. बापू के पत्र

—संपादक : काकासाहब कालेलकर

४. विनोबा के पत्र

—संपादक : रामकृष्ण बजाज

५. स्मरणांजलि

—सम्पादक : काकासाहब कालेलकर

६. जीवन जौहरी

—रिषभदास रांका

७. बापू-स्मरण

—सम्पादक : रामकृष्ण बजाज

८. पत्र-व्यवहार—१ : राजनैतिक नेताओं से

९. पत्र-व्यवहार—२ : रियासती कार्यकर्त्ताओं से

१०. पत्र-व्यवहार—३ : रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं से

११. पत्र-व्यवहार—४ : जानकीदेवी बजाज के नाम

१२. पत्र-व्यवहार—५ : परिवारवालों के साथ

चार रुपये